RNI No. 62592/95
email: u.p.observer@gmail.com

यू.पी.ऑब्ज़र्वर

साप्ताहिक

मोदीनगर (गाजियाबाद) वर्ष : 32 अंक : 13 सोमवार 30 जून से 6 जुलाई, 2025 पृष्ठ: 10 मूल्य : ₹3/=

आपातकाल में किया गया पाप यथावत जारी क्यों ? ...6

आपातकाल में संविधान की हत्या की गई: पीएम मोदी

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम के 123वें एपिसोड में योग दिवस सफलता का किया जिक्र

नई दिल्ली। पीएम मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के 123वें एपिसोड में योग दिवस पर बात की और अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की सफलता का जिक्र किया। इसके साथ ही उन्होंने आपातकाल के 50 वर्ष होने पर भी अपने विचार साझा किए।

योग दिवस की सफलता का किया जिक्र

पीएम मोदी ने कहा 'आप सब इस समय योग की ऊर्जा और 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' की स्मृतियों से भरे होंगे। इस बार भी 21 जून को देश-दुनिया के करोड़ों लोगों ने 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' में हिस्सा लिया। आपको याद है, 10 साल पहले इसका प्रारंभ हुआ। अब 10 साल में ये सिलसिला हर साल पहले से भी ज्यादा भव्य बनता जा रहा है। ये इस बात का भी संकेत है कि ज्यादा से ज्यादा लोग अपने दैनिक जीवन में योग को अपना रहे हैं। हमने इस बार योग दिवस की कितनी ही आकर्षक तस्वीरें देखी हैं। विशाखापत्तनम के समुद्र तट पर तीन लाख लोगों ने एक साथ योग किया। विशाखापत्तनम से ही एक और अद्भुत दृश्य सामने आया, दो हजार से ज्यादा आदिवासी छात्रों ने 108 मिनट तक 108 सूर्य नमस्कार किए। सोचिए, कितना अनुशासन, कितना समर्पण रहा होगा।'

'हिमालय की बफीर्ली चोटियां और ITBP के जवान, वहां भी योग किया, साहस और साधना साथ-साथ चले। गुजरात के लोगों ने भी एक नया इतिहास रचा। वडनगर में 2121 लोगों ने एक साथ भुजंगासन किया और नया रिकॉर्ड बना दिया। न्यूयॉर्क, लंदन, टोक्यो, पेरिस, दुनिया के हर बड़े शहर से योग की तस्वीरें आईं और हर तस्वीर में एक बात खास रही – शांति, स्थिरता और संतुलन। हमारे नौसेना के जहाजों पर भी योग की भव्य झलक दिखी। तेलंगाना में तीन हजार दिव्यांग साथियों ने एक साथ योग शिविर में भाग लिया। उन्होंने दिखाया कि योग किस तरह सशक्तिकरण का माध्यम भी है। इस बार की थीम भी बहुत विशेष थी, 'Yoga for One Earth, Ome Health', यानी, 'एक पृथ्वी - एक स्वास्थ्य'। ये सिर्फ एक नारा नहीं है, ये एक दिशा है जो हमें 'वसुधैव कुटुंबकम' का अहसास कराती है।

आपातकाल को लेकर कही ये बात

पीएम मोदी ने कहा कि 'आपातकाल लगाने वालों ने ना सिर्फ हमारे संविधान की हत्या की बल्कि उनका इरादा न्यायपालिका को भी अपना गुलाम बनाए रखने का था। इस दौरान लोगों को बड़े पैमाने पर प्रताड़ित किया गया था। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्हें कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आखिरकार, जनता-जनार्दन की जीत हुई – आपातकाल हट लिया गया और आपातकाल थोपने वाले हार गए। बाबू जगजीवन राम जी ने इस बारे में बहुत ही सशक्त तरीके से अपनी बात रखी थी। जॉर्ज फर्नांडिस साहब को जंजीरों में बांधा गया। अनेक लोगों को कठोर यातनाएं दी गईं। मीसा के तहत किसी को भी गिरफ्तार कर लिया जाता था। छात्रों को भी परेशान किया गया। अभिव्यक्ति की आजादी का गला घोंटा गया।'

'95 करोड़ लोग ले रहे सामाजिक सुरक्षा का लाभ'

पीएम मोदी ने कहा कि 'विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत को Trachoma free घोषित कर दिया है। ये लाखों लोगों की मेहनत का फल है। जिन्होंने बिना तके, बिना रुके बीमारी के खिलाफ लड़ाई लड़ी। ये सफलता हमारे हेल्थ वर्कर्स की है। हाल ही में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन आईएलओ की रिपोर्ट आई है, जिसमें बताया गया है कि भारत की 64 प्रतिशत से ज्यादा आबादी को अब कोई न कोई सामाजिक सुरक्षा लाभ मिल रहा है। आज देश के 95 करोड़ लोग किसी न किसी सामाजिक सुरक्षा योजना का लाभ ले रहे हैं। साल 2015 तक ये आंकड़ा 25 करोड़ था।'

बोडोलैंड के फुटबॉल टूनार्मेंट का किया जिक्र

असम के बोडोलैंड पर बात करते हुए पीएम मोदी ने कहा 'बोडोलैंड आज अपने एक नए रूप के साथ देश के सामने खड़ा है। यहां के युवाओं में जो ऊर्जा है, जो आत्मविश्वास है, वो फुटबॉल के मैदान में सबसे ज्यादा दिखता है। बोडोलैंड CEM Cup का आयोजन हो रहा है। ये सिर्फ एक Tournament नहीं है, ये एकता और उम्मीद का उत्सव बन गया है 3 हजार 700 से ज्यादा टीमें, करीब 70 हजार खिलाड़ी, और उनमें भी बड़ी संख्या में हमारी बेटियों की भागीदारी ये आंकड़े बोडोलैंड में बड़े बदलाव की गाथा सुना रहे हैं। बोडोलैंड अब देश के खेल नक्शे पर Sports के क्षेत्र पर अपनी चमक और बढ़ा रहा है।'

'साथियो, एक समय था जब संघर्ष ही यहाँ की पहचान थी तब यहाँ के युवाओं के लिए रास्ते सीमित थे। लेकिन आज उनकी आँखों में नए सपने हैं और दिलों में आत्मनिर्भरता का हौंसला है यहाँ से निकले फुटबॉल खिलाड़ी अब बड़े स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। हालीचरण नारजारी, दुर्गा बोरो, अपूर्णा नारजारी, मनबीर बसुमतारी - ये सिर्फ फुटबॉल खिलाड़ियों के नाम नहीं हैं - ये उस नई पीढ़ी की पहचान है जिन्होंने बोडोलैंड को मैदान से राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया।'

मेघालय के एरी सिल्क की बताई खासियत

'मेघालय का एरी सिल्क को कुछ दिन पहले ही जीआई टैग मिला है। एरी सिल्क मेघालय की एक धरोहर है। यहां की जनजातियां खासकर खासी समाज के लोगों ने पीढ़ियों से इसे सहेजा है और समृद्ध भी किया है। इस सिल्क को रेशम के कीड़े बनाते हैं और उसे हासिल करने के लिए कीड़ों को मारा नहीं जाता, इसलिए इसे अहिंसा सिल्क भी कहते हैं। मेघालय का एरी सिल्क वैश्विक बाजार के लिए शानदार उत्पाद है। ये सिल्क सर्दी में गरम करता है और गर्मियों में ठंडक देता है।'

पीएम मोदी ने कहा कि 'पिछले महीने भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों को भारत से वियतनाम ले जाया गया था। भारत की ये पहल वियतनाम के लिए राष्ट्रीय उत्सव बन गई है। वियतनाम के राष्ट्रपति, उप-प्रधानमंत्री, वरिष्ठ मंत्री हर कोई नतमस्तक था। भगवान बुद्ध के विचारों में वो शक्ति है, जो देशों, संस्कृतियों और लोगों को एक सूत्र में बांधती है। इससे पहले भगवान बुद्ध के अवशेष थाईलैंड, मंगोलिया भी ले जाए गए थे।'

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में कहा कि '1 जुलाई को हम दो बेहद महत्वपूर्ण पेशों का सम्मान करते हैं, डॉक्टर और सीए... ये दोनों ही समाज के ऐसे स्तम्भ हैं, जो हमारी जिंदगी को बेहतर बनाते हैं।'

'इस महीने हम सबने विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। मुझे आपके हजारों संदेश मिले। कई लोगों ने अपने आस-पास के उन साथियों के बारे में बताया जो अकेले ही पर्यावरण बचाने के लिए निकल पड़े थे और फिर उनके साथ पूरा समाज जुड़ गया। पुणे के श्री रमेश खरमाले जी के कार्यों को जानकर आपको बहुत प्रेरणा मिलेगी, जब हफ्ते के अंत में लोग आराम करते हैं तो रमेश जी और उनका परिवार कुदाल और फावड़ा लेकर जुन्नर की पहाड़ियों की ओर निकल पड़ते हैं। वहां वे झाड़ियां साफ करते हैं और पानी रोकने के लिए ट्रेंच खोदते हैं और बीज बोते हैं।

उन्होंने कई सारे छोटे तालाब बनाए हैं और सैंकड़ों पेड़ लगाए हैं। वे एक ऑक्सीजन पार्क भी बनवा रहे हैं। नतीजा ये हुआ कि अब वहां पक्षी लौटने लगे हैं और वन्य जीवन को नई सांसें मिल रही हैं।'

'सिंदूर वन' ऑपरेशन सिंदूर के वीरों को समर्पित

पीएम मोदी ने कहा कि 'इस महीने हम सबने 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया। मुझे आपके हजारों संदेश मिले। कई लोगों ने अपने आस-पास के उन साथियों के बारे में बताया जो अकेले ही पर्यावरण बचाने के लिए निकल पड़े थे और फिर उनके साथ पूरा समाज जुड़ गया। अहमदाबाद में पर्यावरण के लिए एक और सुंदर पहल देखने को मिली है। यहां नगर निगम ने 'मिशन फॉर मिलिनय ट्रीज' अभियान शुरू किया है। उसका लक्ष्य है - लाखों पेड़ लगाना। इस अभियान की एक खास बात है 'सिंदूर वन'। यह वन ऑपरेशन सिंदूर के वीरों को समर्पित है। सिंदूर के पौधे उन बहादुरों की याद में लगाए जा रहे हैं, जिन्होंने देश के लिए सबकुछ समर्पित कर दिया।'

'धार्मिक यात्राओं के लिए शुभकामनाएं'

'मेरे प्यारे देशवासियो, जब कोई तीर्थयात्रा पर निकलता है, तो एक ही भाव सबसे पहले मन में आता है, 'चलो, बुलावा आया है'। यही भाव हमारे धार्मिक यात्राओं की आत्मा है। ये यात्राएं शरीर के अनुशासन का, मन की शुद्धि का, आपसी प्रेम और भाईचारे का, प्रभु से जुड़ने का माध्यम हैं। इनके अलावा, इन यात्राओं का एक और बड़ा पक्ष होता है। ये धार्मिक यात्राएं सेवा के अवसरों का एक महाअभियान भी होती हैं। जब कोई भी यात्रा होती है तो जितने लोग यात्रा पर जाते हैं, उससे ज्यादा लोग तीर्थयात्रियों की सेवा के काम में जुटते हैं। अभी कुछ दिन पहले हमने भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा भी देखी है। ओडिशा हो, गुजरात हो, या देश का कोई और कोना, लाखों श्रद्धालु इस यात्रा में शामिल होते हैं। उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम, ये यात्राएं 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के भाव का प्रतिबिंब है। जब हम सच्चे मन से यात्रा करते हैं मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं और जो लोग इन यात्राओं में सेवाभाव से जुटे हैं, उन्हें भी साधुवाद देता हूं।'

जातिगत विभाजन करने वालों पर सीएम योगी ने साधा निशाना, बोले- 'एक रहोगे तो नेक रहोगे'

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

लखनऊ। दानवीर भामाशाह जयंती और व्यापारी कल्याण दिवस की पूर्व संध्या पर शनिवार को लोकभवन में आयोजित एक भव्य समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जातिगत विभाजन पैदा करने वालों को जमकर निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि जाति के नाम पर समाज को बांटने वाले वही लोग हैं, जिन्होंने सत्ता में रहते हुए माफिया के सामने नाक रगड़ी और सत्ता को गिरवी रख दिया था। उन्होंने कहा कि जाति के नाम पर वोट बैंक की राजनीति करने वाले आज भी घूम-घूमकर समाज को बांट रहे हैं। पहले नौकरी के नाम पर वसूली करते थे, अब जाति के नाम पर बांटने का काम कर रहे हैं। इसीलिए मैं कहता हूं कि 'बंटोगे तो कटोगे, एक रहोगे तो नेक रहोगे।'

समारोह में मुख्यमंत्री ने दानवीर भामाशाह के आदर्शों को अपनाने और समाज को जातिगत विभाजन से मुक्त रखने का आह्वान किया। उन्होंने व्यापारियों को राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण अंग बताते हुए उनकी सुरक्षा, सम्मान और कल्याण के लिए डबल इंजन सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। मुख्यमंत्री ने स्वामी विवेकानंद को शिकागो धर्म सम्मेलन में भेजने के लिए मैसूर के राजा चामराजेन्द्र वाडियार और खेतड़ी के राजा अजीत सिंह के सहयोग की चर्चा की। साथ ही बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को विदेश पढ़ाई के लिए वडोदरा के राजा सैयाजीराव गायकवाड द्वारा दी गई स्कॉलरशिप का जिक्र करते हुए कहा कि इन महापुरुषों के सहयोग में जाति कहां थी? ये सहयोग सात्विक और सकारात्मक भाव से किया गया, जिसके परिणामस्वरूप विश्व को विवेकानंद और अंबेडकर जैसे रत्न मिले।

मुख्यमंत्री ने जीएसटी विभाग को निर्देश दिया कि प्रत्येक वर्ष प्रदेश के शीर्ष 10 जीएसटी देने वाले व्यापारियों को लखनऊ में और प्रत्येक जनपद के शीर्ष 10 व्यापारियों को स्थानीय स्तर पर सम्मानित किया जाए। साथ ही, उन्होंने कहा कि दुर्घटना का शिकार होने वाले जीएसटी देने वाले व्यापारियों को सरकार की ओर से 10 लाख रुपये की सहायता इस दिन प्रदान की जाए। वित्तीय वर्ष 2024-25 में सर्वाधिक कर देने वाले एवं समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यापारियों में रचना गर्ग, हेमंत शर्मा, मोहम्मद जावेद सिद्दिकी, अमित निगम, अशोक कुमार गुप्ता, नितेश अग्रवाल, प्रतीश कुमार, राजेश कुमार अग्रहरि, डॉ मिथिलेश अग्रवाल, अरविंद चतुर्वेदी, अमित गुप्ता, पुष्पदंत जैन, दिनेश गोयल, साहिल गर्ग को मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया।

सीएम ने किया चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन

इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दानवीर भामाशाह के जीवन से प्रेरित चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया और सर्वोच्च राजस्व कर देने वाले व्यापारियों को भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया। साथ ही, समाज में विशेष योगदान देने वाले व्यापारियों को भी सम्मानित किया गया। व्यापारियों ने मुख्यमंत्री को गदा भेंटकर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना, लखनऊ की महापौर सुषमा खर्कवाल, हरियाणा विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता, विधायक डॉ नीरज बोरा, राजेश्वर सिंह, व्यापारी कल्याण बोर्ड यूपी के पूर्व अध्यक्ष रविकांत गर्ग, संदीप बंसल, संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव मुकेश मेश्राम सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में व्यापारीगण मौजूद रहे।

व्यापारियों की सुरक्षा और सम्मान सरकार का संकल्प

मुख्यमंत्री ने व्यापारियों की सुरक्षा और सम्मान को सरकार की प्राथमिकता बताया। उन्होंने कहा कि 2016 में लखनऊ में एक व्यापारी की निर्मम हत्या हुई थी, सुल्तानपुर में सराफा व्यवसाई को गोली मारी गई थी। उस समय की सरकार लुटेरों और बदमाशों को संरक्षण दे रही थी। हमारी सरकार ने व्यापारी और बेटी की सुरक्षा को सर्वोपरि रखा। हमने कहा कि इनकी सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों का टिकट यमराज काटेंगे। जब बदमाशों का हिसाब हुआ, तब जाति के नाम पर बांटने वाले घड़ियाली आंसू बहाने लगे। वहीं, पूर्ववर्ती सरकारों पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि जाति के नाम पर बांटने वालों ने 'वन डिस्ट्रिक्ट वन माफिया' का मॉडल चलाया और कानून व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया। सीएम योगी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार व्यापारियों के हितों को संरक्षण देने और उनकी सुरक्षा के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

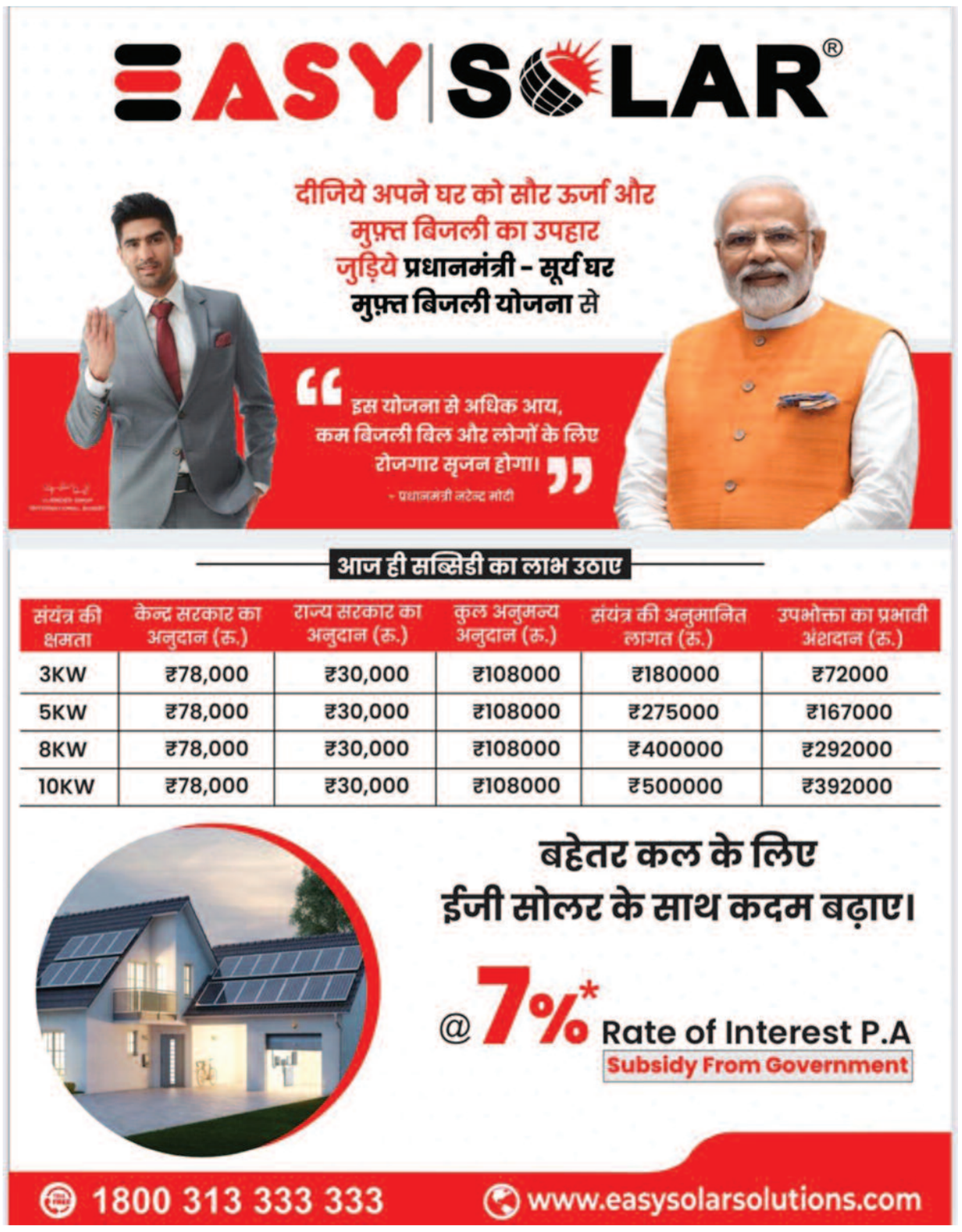

एमएसएमई से सम्बन्धित समस्याओं एवं सुझावों के समाधान का हर सम्भव प्रयास किया जायेगा : डीएम

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। होटल फार्च्यून इन ग्राजिया, गाजियाबाद के प्रांगण में इण्डियन इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन-आईआईए गाजियाबाद चैप्टर द्वारा एमएसएमई दिवस का आयोजन मुख्य अतिथि दीपक मीणा, आईएएस, जिलाधिकारी गाजियाबाद एवं विशिष्ठ अतिथि श्रीनाथ पासवान, उपायुक्त उद्योग, जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केन्द्र, गाजियाबाद तथा श्री नीरज सिंघल, राष्ट्रीय अध्यक्ष, आईआईए की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत हर्ष अग्रवाल, चैप्टर सचिव द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। श्री संजय अग्रवाल, चैप्टर चेयरमैन द्वारा सभी का स्वागत करते हुए एमएसएमई दिवस की शुभकामनाऐं दीं तथा हर वर्ष एमएसएमई दिवस को पर्व के रूप में मनाए जाने का उद्यमियों से अनुरोध किया। सूक्ष्म-लघु और मध्यम आकार के उद्यम ऐसे संगठन हैं जो आम तौर पर 250 से अधिक कर्मचारियों को रोजगार नहीं देते हैं, हालांकि वैश्विक स्तर पर इस क्षेत्र में दो-तिहाई से अधिक रोजगार सृजन करने की आवश्यकता होती है। इसका उद्देश्य विश्व आर्थिक विकास और सतत विकास में एमएसएमई के योगदान के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना भी है, जिसमें शासन व प्रशासन हमारा पूर्ण सहयोग कर रहा है। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज सिंघल ने कहा कि आईआईए अपनी सेवाओं और गतिविधियों के माध्यम से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए कई पहल कराना है, जिनमें कारोबारी माहौल में सुधार करना, नए उत्पादों तथा सेवाओं के नवाचार व विकास को प्रोत्साहित करना, क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना, घरेलू एवं वैश्विक दोनों तरह बाजारों में कारोबार के अवसर पैदा करना तथा स्थायी कार्य प्रणालियों अपनाकर को एमएसएमई को प्रोत्साहित करना शामिल है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय रोजगार के अवसर सृजित करने और एमएसएमई की उत्पादकता तथा प्रतिस्पर्धात्मकता में बढ़ोतरी करने पर बल देता रहता है। क्लस्टर परियोजनाओं और प्रौद्योगिकी केंद्रों की जियो-टैगिंग के लिए चौंपियंस 2.0 पोर्टल तथा मोबाइल ऐप का शुभारंभ शामिल है। पीएमईजीपी लाभार्थियों को मार्जिन मनी सब्सिडी, जेड-जीरो डायरेक्ट, जीरो इफेक्ट, प्रमाणन योजना शुरू की गई है।

मुख्य अतिथि दीपक मीणा द्वारा एमएसएमई दिवस की सभी को शुभकामनाऐं प्रदान करते हुए कहा कि अप्रैल 2017 में संयुक्त राष्ट्र (संयुक्त राष्ट्र- संयुक्त राष्ट्र) ने एक प्रस्ताव के माध्यम से 27 जून को सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यम दिवस के रूप में नामित किया। आधिकारिक और गैर-लाभकारी सभी फर्मों में एमएसएमई की भागीदारी 90 प्रतिशत से अधिक है और कुल रोजगार में औसत 70 प्रतिशत और सकल घरेलू उत्पादों में 50 प्रतिशत हिस्सेदारी है। देश की अर्थव्यवस्था में एमएसएमई के साथ रोजगार-क्रेडिट, नवीनता और रैंकिंग में वृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

एमएसएमई रोजगार सृजन में भी प्रमुख भूमिका प्रमुख है, क्योंकि वे देश भर में लगभग 110 मिलियन लोगों को रोजगार देते हैं। उनके पुनः सभी का धन्यवाद करते हुए एमएसएमई दिवस की शुभकामनाऐं प्रदान की तथा कहा कि एमएसएमई से सम्बन्धित समस्याओं एवं सुझावों को मेरे स्तर पर समाधान का हर सम्भव प्रयास किया जायेगा। उपायुक्त उद्योग द्वारा सभी को शुभकामनाऐं देते हुए एमएसएमई की शासन की ओर से निर्गत विभिन्न नीतियों, रोजगारपरक योजनाओं एवं ऋणपरक योजनाओं के बारे में प्रस्तुती के माध्यम से जानकारी प्रदान की। इनोवेशन, ग्रामीण उद्योग और उद्यम को बढ़ावा देने की योजना, एमएसएमई को ब्याज सहायता योजना के लिए वृद्धिशील ऋण प्रदान करने की सुविधा, सूक्ष्म और लघु उद्योगों के लिए क्रेडिट योजनारू ऋण के आसान प्रवाह की सुविधा के लिए शुरूआत की गई है। इस योजना के तहत एमएसएमई को दिए गए संपार्श्विक ऋण मुक्ति की सुविधा प्रदान की गई है। क्रेडिट लिंक्ड कैपिटल एंटरप्राइज और टेक्नोलॉजी स्टडीज स्कीम (सीएलसीएस-टीयूएस) इत्यादि के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इसके अलावा बैंक ऑफ बड़ौदा की ओर से क्षेत्रीय प्रबन्धक, नोएडा क्षेत्र श्रीमति सपना कौशल द्वारा एमएसएमई हेतु बैंक द्वारा प्रदान की जा रही ऋण योजनाओं के बारे में अवगत कराया।

उक्त के अलावा आईआईए गाजियाबाद चैप्टर की ओर से एमएसएमई दिवस पर 05 औद्योगिक इकाई महिला उद्यमी सहित मैसर्स टॉयकॉन केबल्स इण्डिया प्रा0 लि0, डी0के0 इण्डस्ट्रीज, मित्तल ग्रीन रिसोर्स, विश्वकर्मा इण्डस्ट्रीज एवं जेनको इण्डस्ट्रीज को लघु से बढ़कर अपनी पहचान बनाने एवं इन्नोवेटिव उत्पाद के अन्तर्गत जिलाधिकारी एवं उपायुक्त उद्योग से सम्मानित कराया गया। इसके अलावा मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत 02 युवा उद्यमियों को चैक प्रदान किए गये। धन्यवाद प्रस्ताव कोषाध्यक्ष संजय गर्ग द्वारा दिया गया। इस अवसर पर आईआईए के विभिन्न पदाधिकारी एवं सदस्य जेपी कौशिक, मनोज कुमार, एसके शर्मा, अमित नागलिया, प्रदीप गुप्ता, यश जुनेजा, राकेश अनेजा, अमित बंसल, रमन मिगलानी, अजय पटेल, संदीप गुप्ता, दिनेश गर्ग, नवीन धवन, पुनीत माहेश्वरी, रोहित जैन, सुभाष गुप्ता, कुलदीप अत्री, श्री रजत करनवाल, श्री ओपी धमीजा, श्री बसंत अग्रवाल, सुश्री श्रृष्टि मित्तल इत्यादि सहित सैकड़ों उद्यमी मौजूद रहे।

आरटीई के अंतर्गत दाखिले के प्रतिशत में कमी देख मुख्यमंत्री योगी ने जताई नाराजगी: अभिनव गोपाल

आरटीई दाखिले में बाधा उत्पन्न करने वाले विद्यालयों के विरुद्ध होगी कठोरतम कार्रवाई: मुख्य विकास अधिकारी

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। दुर्गावती देवी सभागार विकास भवन में मुख्य विकास अधिकारी अभिनव गोपाल की अध्यक्षता में आरटीई 2009 की धारा 12 (1) ग के अंतर्गत लक्ष्य के सापेक्ष दाखिला नहीं लेने वाले 30 स्कूलों के प्रबंधक/ प्रधानाचार्य के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में 30 में से 28 विद्यालयों के प्रधानाचार्य/ प्रबंधक/एडमिन ने प्रतिभाग किया 02 विद्यालय जीडी गोयंका पब्लिक स्कूल इंदिरापुरम एवं सीपी आर्य पब्लिक स्कूल स्वर्ण जयंतीपुरम द्वारा गाजियाबाद ने इस बैठक में प्रतिभाग नहीं किया।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अभिनव गोपाल द्वारा उपस्थित सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य/ प्रबंधको/प्रतिनिधियों को स्पष्ट शब्दों में यह कहा गया कि मुख्यमंत्री के 26 जून 2025 को जनपद गाजियाबाद के आगमन पर सांसद, विधायक एवं कई जनप्रतिनिधियों द्वारा आरटीई के अंतर्गत विद्यालयों द्वारा बच्चों के दाखिला न लेने संबंधी शिकायत की गई, जिस पर उन्होंने स्पष्ट आदेश दिया है कि जो भी विद्यालय आरटीई के अंतर्गत आवंटित बच्चों का दाखिला नहीं लेता है उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाए। इसलिए उन्होंने उपस्थित सभी विद्यालय को यह निर्देश दिया कि अगले दो दिवसों में उन सभी बच्चों का दाखिला अपने विद्यालय में कराना सुनिश्चित करें, जिनका नाम उनके विद्यालय के लिए आवंटित हुआ है।

उन बच्चो के अभिभावकों से संपर्क स्थापित करते हुए तत्काल उनका नामांकन कराए। साक्ष्य के संबंध में अभिभावकों द्वारा प्रस्तुत प्रमाण पत्र की स्वयं जांच न करवाये, यदि आवश्यक हो तो जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखें। जिन बच्चों का नामांकन अभी तक विद्यालयों ने नहीं किया है उसका स्पष्ट विवरण अपने पत्र में उल्लेखित करते हुए सोमवार 30 जून तक जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। बैठक में पांच अभिभावको को जिनके बच्चों का नामांकन नहीं हो पाया था उनको बुलाया गया जिनके द्वारा अपनी-अपनी समस्याएं मुख्य विकास अधिकारी के सामने रखी गई। जिन्हें सीडीओ द्वारा सुना गया एवं उपस्थित विद्यालयों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि आरटीई के अंतर्गत आवंटित बच्चों का शत-प्रतिशत दाखिला कराना हम सब का दायित्व है। इसलिए इस कार्य में जो भी विद्यालय बाधा उत्पन्न करेगा, उस विद्यालय के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाएगी। बैठक के प्रारंभ में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री ओम प्रकाश यादव द्वारा बैठक के उद्देश्यों के बारे में सभी को अवगत कराया गया। बैठक में जिला समन्वयक सामुदायिक सहभागिता डॉ0राकेश कुमार जिला समन्वयक एमआईएस रुचि त्यागी खंड शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र गाजियाबाद इश्कलाल, विश्वजीत राठी, अभिषेक यादव एवं शरद चंद भारती उपस्थित रहे।

एक नवंबर से गौतमबुद्धनगर और गाजियाबाद में 15 साल पुराने पेट्रोल व 10 साल पुराने डीजल वाहन को नहीं मिलेगा ईंधन

गौतमबुद्धनगर। डीएम मनीष कुमार वर्मा के निर्देशों के क्रम में ए आरटीओ डॉक्टर उदित नारायण पांडेय ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदूषण नियंत्रण और स्वच्छ हवा को बढ़ावा देने के लिए कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट (उअदट) ने एक महत्वपूर्ण आदेश जारी किया है, जिसके तहत आगामी 01 नवंबर 2025 से गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद में 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों और 10 साल पुराने डीजल वाहनों को पेट्रोल पंपों पर ईंधन प्रदान नहीं किया जाएगा। यह नियम गौतमबुद्ध नगर में पंजीकृत 2 लाख 8 हजार वाहनों पर लागू होगा। सहायक क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन), गौतमबुद्ध नगर डॉ उदित नारायण पांडेय ने इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा, 'यह कदम हमारी हवा को स्वच्छ और जीवन को स्वस्थ बनाने की दिशा में एक बड़ा प्रयास है। पुराने वाहन अधिक प्रदूषण फैलाते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए हानिकारक है। स्वच्छ हवा हम सबका अधिकार है। उन्होंने बताया कि 'पेट्रोल पंपों पर कैमरे लगाए जाएंगे, जो पुराने वाहनों की स्वचालित पहचान करेंगे।

जीडीए ने मुरादनगर क्षेत्र के लगभग 22 बीघे क्षेत्रफल में निमाणार्धीन तीन अवैध कालोनियों को किया ध्वस्त

अवैध रूप से संचालित 03 ओयो होटल भी किये गए सील

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स के अवैध निर्माण/अवैध कालोनियों के विरूद्ध कार्यवाही किये जाने के निदेर्शों के क्रम में शुक्रवार को प्रभारी प्रर्वतन जोन-02 के नेतृत्व में मुरादनगर क्षेत्र में सुधीर चौधरी पुत्र ओमवीर व सन्तोष कुमार पुत्र हर स्वरूप, बम्बा रोड, शोभापुर से सैंथली मार्ग पर, ग्राम-शोभापुर के खसरा सं0-340 पर लगभग 07 बीघा क्षेत्रफल में चिनाई कर सड़क के लिए बाक्सिंग का कार्य कर अवैध प्लाटिंग, मुकेश त्यागी, आदेश त्यागी, सचिन त्यागी, शोभापुर बम्बा, असालतनगर, के खसरा सं0-86, पर लगभग 07 बीघा क्षेत्रफल में सडक हेतु मिट्टी भराई, जीएसबी भराई व दिवारों का निर्माण एवं योगेन्द्र सिंह, सुधीर अग्रवाल व अनिल त्यागी, बम्बा रोड से शोभापुर सैंथली मार्ग पर ग्राम बसन्तपुर सैंथली के खसरा सं0-153 के लगभग 08 बीघा क्षेत्रफल में अवैध प्लाटिंग हेतु स्थल पर मिटटी भराव कर सड़क को चिन्हित करने के लिये चिनाई का कार्य किया जा रहा था। उपरोक्त क्षेत्र में कालोनाईजर द्वारा बनाई जा रही सडकें, बाउण्ड्रीवाल, साईट ऑफिस को ध्वस्त कर दिया गया। ध्वस्तीकरण की कार्यवाही के समय स्थानीय विकासकताओं/ निर्माणकताओं द्वारा काफी विरोध किया गया, परन्तु प्राधिकरण पुलिस बल द्वारा उन्हे नियन्त्रित कर ध्वस्तीकरण की कार्यवाही जारी रखी गयी। इसके अतिरिक्त मुरादनगर क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित 03 ओयो होटल को भी सील किया गया है। उक्त कार्यवाही के दौरान सहायक अभियन्ता, अवर अभियन्तागण एवं प्रवर्तन जोन-2 के समस्त स्टाफ, प्राधिकरण पुलिस बल व प्राधिकरण प्रवर्तन दस्ते की उपस्थिति में ध्वस्तीकरण/सील की कार्यवाही सम्पन्न की गई। आगामी माह में भी ध्वस्तीकरण/सील की कार्यवाही किये जाने का अभियान जारी रहेगा।

सीडीओ अभिनव गोपाल की अध्यक्षता में हुई जनपद स्तरीय बाल श्रम उन्मूलन जनपद समिति एवं जिला स्तरीय टास्क फोर्स की समीक्षा बैठक

श्रम विभाग से बाल श्रमिकों की सूची प्राप्त कर प्राथमिकता पर बच्चों के एडमिशन कराना सुनिश्चित करें बीएसए: अभिनव गोपाल

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। दुर्गावती देवी सभागार विकास भवन में जनपद स्तरीय बाल श्रम उन्मूलन जनपद समिति एवं जिला स्तरीय टास्क फोर्स की समीक्षा बैठक अभिनव गोपाल, मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में श्रम विभाग की ओर से उप श्रमायुक्त अनुराग मिश्र द्वारा की गयी विभाग की कार्यवाही एवं प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया गया। उनके द्वारा बताया गया कि विगत वित्तीय वर्ष में कुल 285 जिनमें 36 खतरनाक श्रेणी के 249 गैर खतरनाक प्रक्रिया में चिन्हांकन किये गये। निरीक्षणों में खतरनाक प्रक्रिया में 67 बाल श्रमिक एवं गैर खतरनाक में 256 किशोर श्रमिकों के चिन्हाकंन किये गये। यह कार्यवाही एण्टी ह्यूमन ट्रेफिकिंग यूनिट एवं गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से की गयी। यह भी अवगत कराया गया कि खतरनाक श्रेणी के बच्चों को चिन्हित करने के बाद उनके रेस्क्यू कर मुख्य चिकित्सा अधिकारी के समक्ष आयु परीक्षण के लिए एवं बाल कल्याण समिति के समक्ष उन बच्चों को उनके अभिभावकों को सौंपने के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया जाता है। प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में अवगत कराया गया कि विभिन्न औद्योगिक क्षेत्र यथा श्रीराम पिस्टम लि0, मेरठ रोड, बुलन्दशहर रोड़ इण्डस्ट्रीयल एरिया व आईआईए के सहयोग से समय-समय पर गोष्ठी की जाती रही एवं प्रचार वाहन को बाल श्रम सम्भावित क्षेत्रों में घुमाकर व्यापक प्रचार-प्रचार किया गया। मुख्य विकास अधिकारी अभिनव गोपाल ने शैक्षिक पुनर्वासन के सम्बन्ध में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि श्रम विभाग द्वारा बाल श्रमिकों की भेजी गयी सूची पर प्राथमिकता पर बच्चों के एडमिशन कराना सुनिश्चित करें एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिये गये कि वे बच्चों के आयु परीक्षण कराने हेतु एक नोडल अधिकारी को नामित करते हुए श्रम विभाग के साथ आवश्यक समन्वय व सहयोग कराना सुनिश्चित किया जायें। बच्चों के परिवारों का आर्थिक पुनर्वासन के लिए जिला समाज कल्याण विभाग, उद्योग विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग को निर्देशित किया कि अपने-अपने विभाग में संचालित योजनाओं से उक्त बच्चों के परिवारों को आच्छादित किया जाये एवं श्रम विभाग समय-समय पर सम्बंधित विभागों से समन्वय कर कार्यवाही पूर्ण करायें।

बुलन्दशहर रोड इण्डस्ट्रीयल क्षेत्र के प्रतिनिधि सुशील अरोडा द्वारा आश्वस्त किया गया कि उनका संगठन श्रम विभाग से सूची प्राप्त कर ऐसे बाल श्रमिकों को किताब, कॉपी एवं अन्य सामग्री उपलब्ध कराने का भी प्रयास करेगा। बैठक में डा0 जितेन्द्र सिंह, विनीता सिंह, संजय पथारिया, दिगविजय सिंह, पम्पी दास, तरूणा सिंह, संदीप कुमार सिंह, हंस राज, जितेन्द्र सिंह, अनिल गिरी एवं बिजेन्द्र सिंह, जितेन्द्र कुमार सहित अन्य उपस्थित रहे।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बनाया जाएगा गोबर से प्राकृतिक पेंट

नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने किया मोटिवेट, महिला सशक्तिकरण को निगम दे रहा है बढ़ावा

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

- **गोबर से बनी वस्तुओं की नगर आयुक्त ने खरीदारी कर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं का किया उत्साहवर्धन**
- **ब्लूमबर्ग फिलैंथ्रॉपीज 2025 मेयर्स चैलेंज मे नगर निगम को मिलेंगे 50 लाख: नगर आयुक्त**

गाजियाबाद। ब्लूमबर्ग फिलैंथ्रॉपीज 2025 मेयर्स चैलेंज के अंतर्गत गाजियाबाद नगर निगम स्वच्छता मे श्रेष्ठ कार्यों के लिए विश्व के टॉप 50 नगर निकायों में शामिल हुआ। जिसकी प्रशंसा उत्तर प्रदेश के सीएम द्वारा भी की गई नगर निगम एक्शन में दिखाई दे रहा है। नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक द्वारा स्वयं सहायता समूह की 60 महिलाओं के साथ बैठक की गई तथा गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने के लिए मोटिवेट किया गया।

महिलाओं द्वारा उत्साह पूर्वक गाजियाबाद नगर निगम के साथ जुड़कर कार्य करने के लिए अपना कदम आगे बढ़ाया गया। गाजियाबाद नगर निगम के 100 वार्डों में से दो वार्डो में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में गोबर से बने प्राकृतिक पेंट का उपयोग किया जाएगा जो की जनहित में लाभदायक सिद्ध होगा।

नगर आयुक्त द्वारा बताया गया कि ब्लूमबर्ग फिलैंथ्रॉपीज 2025 मेयर्स चैलेंज मे गाजियाबाद नगर निगम भी 630 नगर निकायों में से 50 टॉप नगर निकायों के साथ शामिल हुआ है। जिसके लिए गाजियाबाद नगर निगम को $50 हजार डॉलर भी कार्य के लिए मिलेंगे जो की गाजियाबाद के लिए सराहनीय है। कार्यवाही के उपरांत अंतिम रूप से शामिल हुए दोनों सुझाव जिसमें हाईराइज सोसाइटियों से निकलने वाले गीले कचरे से खाद बनाने की प्रणाली को बढ़ाया जाएगा। तथा गोबर से पेंट बनाने की कार्य प्रणाली को भी प्रारंभ किया जाएगा। जिससे नालियों में बहने वाले गोबर पर भी रोक लगेगी तथा प्राकृतिक पैंट बनने के बाद पायलट प्रोजेक्ट के रूप में दो वार्डों में इस्तेमाल भी किया जाएगा । जिससे गर्मी के तापमान में कमी आने से लाभ प्राप्त होगा। स्वयं सहायता समूह की 60 महिलाओं के साथ बैठक की गई स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा गोबर से कई वस्तुएं बनाई जाती है जो की प्रशंसनीय है। इसी क्रम में गोबर से पेंट बनाने की कार्यवाही भी प्रारंभ की जाएगी जिसकी संपूर्ण जानकारी बैठक में दी गई। डॉ अनुज द्वारा बताया गया कि सभी जोन से गोबर को इकट्ठा करने की कार्यवाही को बढ़ाया जाएगा। नगर आयुक्त के निर्देश के क्रम में गोबर से पेंट बनाने के लिए प्लांट भी लगाने की तैयारी की जाएगी।

जिसमें स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के माध्यम से पेंट बनाया जाएगा जो की प्राकृतिक पेंट पायलट प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने में सहयोग करेगा। नगर निगम की योजनाओं से पर्यावरण को भी लाभ मिलेगा शहर हित में किया जा रहे कार्यों से राजस्व की भी बढ़ोतरी होगी, गाय के गोबर से बनने वाली धूप बत्ती अगरबत्ती, लक्ष्मी गणेश मूर्ति तथा दिए व अन्य वस्तुओं को जो गोबर से बनती है । स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बारी-बारी प्रस्तुत किया गया। नगर आयुक्त द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को विशेष प्रोजेक्ट से जोड़ा गया तथा बैठक में उपस्थित सभी महिलाओं का उत्साहवर्धन किया गया। बैठक के उपरांत नगर आयुक्त द्वारा गोबर से बनी हुई वस्तुओं की खरीदारी भी की गई जिससे महिलाओं का उत्साहवर्धन हुआ। नगर आयुक्त द्वारा बताया गया कि टॉप 50 से टॉप 25 में शामिल होने पर गाजियाबाद नगर निगम को वन मिलियन डॉलर की प्राप्ति होगी। जिसके लिए बेहतर कार्य करने के लिए योजना बनाई जा रही है जो की सफल रहेगी। बैठक में डूडा विभाग से परियोजना अधिकारी संजय पथरिया में अन्य टीम उपस्थित रही।

मुख्यमंत्री ने गाजियाबाद में मीडिया से की विकास कार्यों की ब्रीफिंग

खोड़ा, लोनी व मुरादनगर को मिलाकर नगर निगम बनेगा ग्रेटर गाजियाबाद

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

- सीएम योगी ने इंदिरापुरम स्थित कैलाश मानसरोवर भवन में की गाजियाबाद के विकास संबंधी कार्यों की प्रेस ब्रीफिंग
- मुख्यमंत्री ने तीसरे जत्थे के 46 कैलाश मानसरोवर यात्रियों को किट वितरित की
- गाजियाबाद विकास, स्वच्छता व सुव्यवस्था का मॉडल बनकर उभर रहा है

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को इंदिरापुरम स्थित कैलाश मानसरोवर भवन में गाजियाबाद के विकास का संबंधी कार्यों की प्रेस ब्रीफिंग की। इससे पूर्व उन्होंने जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों से साथ गाजियाबाद के विकास संबंधी समीक्षा बैठक की। मुख्यमंत्री ने इस बैठक को ही बहुत सकारात्मक व विकास की दृष्टि से सराहनीय बताया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कैलाश मानसरोवर भवन में प्रेस बीफ्रिंग में कहा कि समीक्षा बैठक में गाजियाबाद के विकास के लिए नयी योजनाओं पर चर्चा की गयी है। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों के सुझाव पर लोनी, खोड़ा व मुरादनगर नगर पालिकाओं को गाजियाबाद नगर निगम में शामिल करके ग्रेटर गाजियाबाद बनाया जाएगा।

इसके साथ ही राजनगर एक्सटेंशन में बीआईसीआई द्वारा बनाये जाने वाले क्रिकेट स्टेडियम को अब गाजियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा बनाये जाने का प्रस्ताव मांगा गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जनप्रतिनिधियों के सुझाव पर गाजियाबाद के कैलाश मानसरोवर भवन, पूर्वांचल भवन, उत्तरांचल भवन आदि का उपयोग आम जनता के लिए देने का प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश दिये गये। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इससे पहले मुख्यमंत्री जी ने कैलाश तीर्थ यात्री सतेन्द्र सोनी, प्रिया सुकरानी, रविनाश, शशि, मनोज कुमार सहित 46 मानसरोवर यात्रियों को किट वितरित की। उन्होंने इन यात्रियों का हृदय से अभिनंदन करते हुए सुखद-मंगलमय यात्रा की कामना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि देवाधिदेव महादेव से प्रार्थना करता हूं कि इन सब पर कृपा बनी रहे। दर्शन करके आने वाले सभी यात्रियों को यूपी सरकार की तरफ से एक-एक लाख रुपये की सहायता दी जाएगी। कैलाश मानसरोवर भवन हमने यात्रियों की सुविधा के लिए स्थापित किया था। आज 200 से अधिक श्रद्धालु इस भवन में आकर यात्रा का हिस्सा बनने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आठ साल पहले गाजियाबाद में 12 लेन के ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे के बारे में कोई नहीं सोच सकता था, लेकिन गाजियाबाद में देश की पहली रैपिड रेल गाजियाबाद से होकर जाएगी। पिछले कुछ सालों में ही गाजियाबाद के पास रैपिड रेल, 12 लेन हाईवे, मेट्रो, एयरपोर्ट सब कुछ है।

इंटीग्रेटेड ऑफिस कॉम्प्लेक्स यानी सभी जनपदीय मुख्यालयों को एक छत के नीचे लाने और पुलिस कमिश्नरेट कार्यालय के जरिए मुख्यालय के रूप में सुरक्षा व बेहतरीन कानून व्यवस्था के बारे में भी जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि समीक्षा बैठक में दुग्धेश्वरनाथ मंदिर कॉरिडोर निर्माण समेत गाजिबाद के विकास-बुनियादी सुविधाओं से जुड़े कार्यक्रमों पर भी चर्चा होने की बात कही। आज वह गाजियाबाद विकास, स्वच्छता व सुव्यवस्था का मॉडल बनकर उभर रहा है। दुनिया की 50 और प्रदेश की पहली स्वच्छ सिटी के रूप में गाजियाबाद का नाम आ रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीईएल पहले घाटे का प्रतिष्ठान बन चुका था, लेकिन अब डिस इन्वेस्टमेंट से बचकर प्रॉफिट देने वाला भारत के मिनी रत्न प्रतिष्ठानों में से शुमार हो गया है। उन्होंने गाजियाबाद में हुए विकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों में गाजियाबाद में ग्रीनरी का लेवल बढ़ा है। यह सुंदर सिटी के रूप में आगे बढ़ी है। यहां कूड़े के ढेर समाप्त हुए और सिटी फॉरेस्ट के रूप में नया मॉडल देखने को मिल रहा है। उन्होंने हिंडन के किनारों के दोनो ओर वृक्षारोपण करने के लिए निर्देश दिये। मुख्यमंत्री की प्रेस ब्रीफिंग में कैबिनेट मंत्री सुनील कुमार शर्मा, राज्यममंत्री नरेंद्र कश्यप, गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग, बागपत के सांसद राजकुमार सांगवान, महापौर सुनीता दयाल, सदर विधायक संजीव शर्मा, मोदीनगर विधायक मंजू सिवाच, लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर, मुरादनगर विधायक अजीत पाल त्यागी आदि जनप्रतिनिधियों सहित अधिकारी व बड़ी संख्या में पत्रकार बन्धु उपस्थित रहे।

जीडीए बनाए दुर्बल आय वर्ग के लिए भवन-योगी आदित्यनाथ

दुर्बल आय वर्ग के लोग गरिमा मय जीवन जी सकें इसके लिए उठाए कदम

गाजियाबाद। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इंदिरापुरम स्थित कैलाश मानसरोवर भवन में गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के कार्यों की समीक्षा करते हुए जहां प्राधिकरण के द्वारा विकसित तुलसी निकेतन कालोनी को नए सिरे से विकसित किए जाने की परियोजना की प्रशंसा की ।साथ ही जोर दिया कि भू माफियाओं के कब्जे से मुक्त कराए जाने वाली जमीनों पर दुर्बल आय वर्ग के लिए न केवल भवनों का निर्माण किया जाए। बल्कि उत्सव भवनों का भी निर्माण किया जाए, ताकि दुर्बल आय वर्ग के लोग न केवल गरिमा मय जीवन यापन कर सकें। बल्कि प्राधिकरण स्तर से बनाए जाने वाले उत्सव भवनों में वैवाहिक एवं दूसरे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।
बैठक के दौरान प्राधिकरण उपाध्यक्ष अतुल वत्स ने जीडीए के द्वारा विकसित की जाने वाले अतिमहत्वपूर्ण हरनंदीपुरम योजना की प्रगति से मुख्यमंत्री को अवगत कराया। मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि हरनंदीपुरम योजना में सीधे किसानों से जिलाधिकारी द्वारा तय दर के आधार पर जमीन के बैनामें प्राधिकरण के पक्ष में कराने के प्रयास किए जा रहे है। इस दौरान मुख्यमंत्री के द्वारा आदेशित किया कि चूंकि गाजियाबाद देश की राजधानी दिल्ली सीमा से लगा हुआ है, ऐसे में यहां पर औद्योगिक टाउनशिप विकसित किए जाने की दिशा में भी काम किया जाए, ताकि नए उद्योगों को बढावा मिल सकें, नए उद्योग लगने से रोजगार के नए रास्तों का सृजन होगा। ये भी जोर दिया कि जीडीए अति आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्टेडियम का निर्माण करें, ताकि खेल जगत से जुडे युवाओं को प्रेक्टिस करने का एक प्लेटफार्म उपलब्ध हो। ऐसा स्टेडियम का निर्माण किया जाए, जहां पर अंतराष्ट्रीय स्तर के मैचों का आयोजन हो सकें। इससे न केवल गाजियाबाद की आर्थिक प्रगति होगी, बल्कि गाजियाबाद सीधे अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करेगा। स्टेडियम के आस-पास की भूमि को भी सम्मलित कर परियोजना तैयार की जाए, जिससे राजस्व की प्राप्ति हो सकें।

उत्कर्ष के 8 वर्ष वर्तमान सरकार के विगत 8 वर्षों में जनपद-गाजियाबाद की महत्वपूर्ण उपलब्धियों का विवरण

- आर०आर०टी०एस० द्वारा अशोकनगर दिल्ली से मेरठ साऊथ तक रैपिड मेट्रो (नमों भारत) का संचालन किया जा रहा है। यह जनपद गाजियाबाद के साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, मुरादनगर, मोदीनगर आदि स्टेशन से होकर जाती है।
- रू0 10641.69 करोड़ का ओ०डी०ओ०पी० के तहत इन्जीनियरिंग गुड्स निर्यात किया गया।
- रू0 8468.63 करोड़ का औद्योगिक निवेश कर 1127692 लाभार्थियों को रोजगार दिया गया है।
- रू0 1781.21 करोड़ की लागत से दिलशाद गार्डन (दिल्ली) से शहीद स्थल (नया बस अड्डा) डी०एम०आर०सी० मैट्रो रेल का विस्तारीकरण का कार्य किया गया।
- रू0 546.95 करोड़ की लागत से अमृत कार्यक्रम 2.0 के अन्तर्गत गाजियाबाद सिवरेज योजना (करहेडा जोन) का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।
- नगर निगम गाजियाबाद इ'ङ्क्ष्ट्री१ ढह्लल्लइँ१ङ्क्स्रू मेयर चेलेन्ज की फाइन लिस्ट में चयनित होने वाला भारत वर्ष का दूसरा नगर निगम है।
- नगर निगम गाजियाबाद प्रदेश का पहला नगर निगम है, जिसने कार्बन उत्सर्जन कम करते हुए विश्व स्तर पर आय बढाने का कार्य किया है।
- रू0 192.89 करोड़ की लागत से 65.15 कि0मी0 की मुख्य 9 सड़कों का निर्माण कार्य कराया गया।
- रू0 184.71 करोड़ की लागत से मधुवन बापूधाम योजना में 660 बहु मंजिले भवनों का निर्माण कराया गया।
- राज्य स्मार्टसिटी के अन्तर्गत रू0 103.11 करोड़ की लागत का स्पोर्ट्स कॉपलेक्स का कार्य प्रस्तावित है।
- रू0 94.94 करोड़ की लागत का नगर निगम गाजियाबाद के नवीन कार्यालय भवन का कार्य प्रस्तावित है।
- रेलवे सम्पार संख्या-153 (कोट गाँव फाटक) पर आर०ओ०बी० का निर्माण लगभग रू० 79.09 करोड़ रेलवे विभाग के माध्यम से कराया है। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा कुल लागत का 50 प्रतिशत अंश वहन किया गया। निर्माण कार्य वर्तमान में पूर्ण है तथा आर०ओ०बी० जन उपयोग हेतु संचालित है।
- रू0 66.35 करोड़ की लागत से अमृत कार्यक्रम 2.0 के अन्तर्गत लोनी सिवरेज योजना (फेज-03 पार्ट-01) का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।
- रू0 60.50 करोड़ की लागत से हिण्डन एअरफोर्स स्टेशन पर सिविल टर्मिनल का निर्माण कराया गया।
- रू0 60 करोड़ की लागत से आस्था को नमन करते हुये कैलाश मानसरोवर यात्रा भवन का निर्माण कराया गया।
- रू0 56.58 करोड़ की लागत से राजनगर एक्सटेंशन चौराहा पर ऊपर गामिपुल का निर्माण कार्य कराया गया।
- रू0 55 करोड़ की लागत से नेहरू नगर आडिटोरियम, सिटीजन क्लब, स्वीमिंगपूल एवं कार पार्किंग का निर्माण कराया गया।
- रू0 45.84 करोड़ की लागत से मधुबन बापूधाम में 1360 ई0डब्लू०एस० भवनों का निर्माण कराया गया।
- रू0 38.83 करोड़ की लागत से गाजियाबाद शहर में मल्टीलेवल कार पार्किंग का निर्माण कार्य कराया गया।
- मेरठ तिराहे पर रू0 35.00 करोड़ की लागत से रोटरी एवं 03-लेन ग्रेड सैपरेटर का निर्माण कार्य पूर्ण।
- रू0 34.98 करोड़ की लागत से गाजियाबाद में शैय्या क्रिटिकल केयर ब्लॉक का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।
- रू0 27.33 करोड़ की लागत से गाजियाबाद शहर में रमते राम रोड़ पर व्यवसायिक एवं कार पार्किंग योजना का निर्माण कार्य कराया गया।
- दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस-वे से छिजारसी बन्धा पर 02 लेन सड़क का निर्माण कार्य लगभग रू0 24.61 करोड़ की लागत से पूर्ण कराया गया है।
- रू0 23.40 करोड़ की लागत से लोनी में पेयजल हाउस कनेक्शन योजना का कार्य किया जा रहा है।
- रू0 22.42 करोड़ की लागत से पुलिस कमिश्नरेट, गाजियाबाद के थाना लोनी के आवासीय भवनों टाइप-बी के 48 नग का निर्माण कार्य कराया जा रहा है।
- जी०टी० रोड़ स्थित हिण्डन नदी पर चौथे 2-लेन पुल का निर्माण अवस्थापना निधि के अन्तर्गत रू0 22.00 करोड़ की लागत से निर्माण कार्य पूर्ण।
- प्राधिकरण द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम के माध्यम से दिल्ली मेरठ राष्ट्रीय राज मार्ग स्थित लगभग 60 वर्ष पुराने पुल का रू0 21.53 करोड की लागत से पुर्न निर्माण कराया गया।
- सी०एम० ग्रिड 2023-24 पैकेज-1 के अन्तर्गत रू0 20.56 करोड़ की लागत का मोहननगर बस स्टेन्ड से मोहन नगर चौराहे होते हुए एयरफोर्स स्टेशन तक मार्ग का विकास कार्य प्रगति पर है।
- रू0 19.90 करोड़ की लागत से 100 बेड मैटरनिटी विंग एम०एम०जी० हास्पिटल का निर्माण कराया जा रहा है।
- रू0 19.17 करोड़ की लागत से गाजियाबाद के विजय नगर (डूण्डा हेडा) में 50 शैय्या सुंयक्त चिकित्सालय का निर्माण कार्य कराया गया।
- सी०एम० ग्रिड 2023-24 पैकेज-1 के अन्तर्गत रू0 15.54 करोड़ की लागत का शेषनाग द्वार से एलिवेटिड रोड तक सड़क विकास कार्य प्रगति पर है।
- सीएम०वीएम०वाई० के अन्तर्गत रू0 13.15 करोड़ की लागत का गाजियाबाद नगर निगम के मोहननगर जोन में मॉडल जोनल कार्यालय का निर्माण कार्य प्रस्तावित है।
- रू0 11.74 करोड़ की लागत से 47वीं वाहिनी पीएसी गाजियाबाद में 200 व्यक्तियों की क्षमता की बैरक का कार्य क्राया गया।
- रू0 11.73 करोड़ की लागत से 50 शैय्या युक्त संयुक्त चिकित्सालय लोनी का निर्माण कराया गया।
- रू0 10.99 करोड की लागत से 11 पर्यटन केन्द्रों का विकास कार्य कराया गया। वर्तमान में जनपद गाजियाबाद के मुरादनगर में भगवान परशुराम मंदिर का पर्यटन विकास कार्य (92.5 लाख) एवं गाजियाबाद में श्री दूधेश्वरनाथ महादेव मंदिर (5.52 करोड) के पर्यटन विकास का कार्य प्रगति पर है।
- रू0 9.42 करोड़ की लागत से प्रधानमंत्री जनविकास योजनान्तर्गत जनपद गाजियाबाद के लोनी, धरौटी खुर्द में राजकीय बालिका डिग्री कालेज का निर्माण कराया गया ।
- रू0 08 करोड़ की लागत से गाजियाबाद शहर में हिण्डन विहार रेत मण्डी विकेन्द्रीकृत गार्बेज फैक्ट्री (कचरा कारखाना) का निर्माण कार्य कराया गया।
- रू0 7.39 करोड़ की लागत से राजकीय आई०टी०आई० की स्थापना की गयी।
- राजनगर एक्सटेंशन क्षेत्र में बन्धा रोड़ के समीप नगर निगम की 1.4 है0 भूमि पर 1300 गौवंशों के लिए अत्याधुनिक गौशाला का निर्माण लगभग रू0 7.00 करोड की लागत से कार्य पूर्ण कराया गया।

मुख्यमंत्री योगी ने किया पहल पोर्टल का विधिवत शुभारम्भ

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कर कमलो द्वारा ब्रहस्पतिवार को गाजियाबाद के इंदिरापुरम मे स्थित कैलाश मानसरोवर भवन में आगमन पर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के पहल (पब्लिक एक्सेस फॉर हाउसिंग एंड प्रोपर्टी एलॉटमेंट लॉगिन) पोर्टल का विधिवत शुभारम्भ किया गया। इस दौरान मौके पर उपस्थित तमाम जनप्रतिनिधियों व जिले के अधिकारियों के बीच प्राधिकरण के पहल पोर्टल की प्रसंशा की गई।

इस दौरान गाजियाबाद विकास प्राधिकरण उपाध्यक्ष अतुल वत्स के द्वारा मुख्यमंत्री को अवगत कराया गया कि डिजिटल क्षेत्र की दुनिया में पहल पोर्टल विकास के नए-नए आयाम स्थापित कर रहा है।

पब्लिक एक्सेस फॉर हाउसिंग एंड प्रापर्टी अलाटमेंट लॉगिन प्राधिकरण के द्वारा हाल ही में नागरिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए शुरूआत किया गया जिसके आरंभ होने के बाद 1 लाख 40 हजार से अधिक आवंटियों के लिए एक नई सुविधा उपलब्ध है, जो एक सिंगल विंडों सिस्टम की तरह डिजिटल है, जो तेज एवं पारदर्शी और पूरी तरह से डिजिटल है। अब संपत्ति का भुगतान हो, लेजर रिपोर्ट देखनी हो या किस्तों का पुनर्निधारण हो, सब कुछ संभव है, वह भी बस एक क्लिक पर। इस दौरान मुख्यमंत्री को ये भी अवगत कराया गया कि इस पोर्टल के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों से आवंटियों के द्वारा अपने निकटत्तम बैंक शाखाओं के माध्यम से किस्तों के रूप में अब तक 161.22 करोड राशि का भुगतान किया जा चुका है। इसके साथ - साथ नाम आदि में संशोधन से जुडे. 97 प्रकरणों में आवेदन किया गया। इनमें से 83 प्रकरणों में प्राधिकरण स्तर से मंजूरी दी जा चुकी है।

इस दौरान साहिबाबाद विधायक एवं प्रदेश सरकार में मंत्री सुनील शर्मा , प्रदेश सरकार में मंत्री नरेंद्र कुमार कश्यप, जिले के प्रभारी मंत्री असीम अरुण एवं स्थानीय सांसद अतुल गर्ग, महापौर सुनीता दयाल, शहर विधायक संजीव शर्मा आदि उपस्थित रहे।

क्या है पोर्टल में खास

- आवंटन पत्र और अदेयता प्रमाण पत्र भी आप स्वयं डाउनलोड कर सकते हैं। क्यूआर कोड के जरिए ऑनलाइन सत्यापन की सुविधा के साथ।
- **करेक्शन प्रिविलेज:** अब आप खुद कर सकते हैं अपने रिकॉर्ड में सुधार।
- किस्तों के सम भुगतान के लिए स्मार्ट डिजिटल चालान सुविधा।
- रजिस्ट्री के लिए ऑनलाइन स्लॉट बुक करने हेतु आप अपनी सुविधा अनुसार समय तारीख स्वयं निश्चित कर सकते हैं।
- बैंक से लोन के लिए बन्धक अनुमति पत्र तथा सम्पत्तियों के नामांतरण (मूटेशन) अब सब कुछ ऑनलाईन।
- महीनों तक लम्बित रहने वाले सम्पत्ति विषयक प्रकरण अब चन्द दिनों में निस्तारित।
- समय पर किस्त की जानकारी और डिफॉल्ट पर रिमाइंडर अब हर आवंटी तक पहुंचेगा सही समय पर अलट
- रियल टाइम अकाउंट अपडेट के साथ भुगतान का रिकॉर्ड सीधे लेखा अनुभाग में बिना किसी देरी और मानवीय हस्तक्षेप के।
- प्राधिकरण के इतिहास में प्रथम बार बैंकिंग प्रक्रिया के अनुरूप किस्तों के पुर्ननिर्धारण की सुविधा प्रदान की जाएगी।

पहल की आवश्यकता क्यों

प्राधिकरण में पूर्व से प्रचलित सम्पत्ति प्रबन्धन व्यवस्था के अन्तर्गत आवंटियों को आवंटन पत्र भुगतान विवरण पत्र, बन्धक अनुमति पत्र, लेखा गणना की जांच की कार्यवाही मैन्यूअली की जा रही है, जिसके कारण आवंटियों को जो सुविधाएँ त्वरित प्रदान होनी चाहिए, उनकी पूर्ति करने में अत्यन्त समय लगता था। वर्तमान में आवंटी द्वारा आवेदन करने पर कम से कम 60 दिनों में मांग पत्र निर्गत किया जाता है, जिसके बाद उक्त धनराशि जमा करने पर उसकी रसीद सत्यापन हेतु प्राधिकरण में जमा करानी पडती है, जिसे लेखानुभाग से सत्यापन कराकर पत्रावली पर स्वीकृति हेतु परिचालित की जाती है। इन कार्यों के निष्पादन में प्राधिकरण के लिपिकों का पत्रावलियों के परिचालन में काफी समय लग जाता है तथा समस्त कार्यवाही मैन्यूअली किये जाने के कारण त्रुटियों की सम्भावना भी अधिक रहती है। आवंटियो द्वारा उपरोक्त कार्यों हेतु प्राधिकरण के चक्कर लगाने पडते है, तथा कई पटलों पर पत्रावलियों लंबित रहती है जिससे जनसामान्य को अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पडता है। परन्तु पहल पोर्टल के माध्यम से इन समस्त कठिनाई का समाधान करते हुए डिजिटल माध्यम से घर बैठे जनसामान्य को सभी सुविधाएं सुविधाये प्रदान की जा सकती है। यह डिजिटल पहल जनसामान्य के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी, जिससे उन्हे कार्यालय के अनावस्यक चक्कर लगाने से मुक्ति मिलेगी और सभी प्रक्रियाएं पारदर्शी, सरल एवं समयबद्ध होंगी। यह पहल उपाध्यक्ष, जीडीए के कुशल नेतृत्व व दूरदर्शी सोच का परिणाम है।

मुख्यमंत्री ने की महापौर, नगर आयुक्त के प्रयासों की सराहना

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। गाजियाबाद में मुख्यमंत्री का आगमन तथा आयोजित कार्यक्रम बहुत ही शानदार रहा। गाजियाबाद नगर निगम की अहम भूमिका भी रही, उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कार्यक्रमों के क्रम में समीक्षा बैठक भी की। जिसमें गाजियाबाद नगर निगम का नाम विश्व में भी अहम स्थान प्राप्त कर रहा है मुख्यमंत्री द्वारा प्रशंसा की गई साथ ही स्वच्छ मोहल्ला स्क्वाड की इंपैक्ट एनालिसिस रिपोर्ट का अनावरण भी किया गया। गाजियाबाद नगर निगम के द्वारा स्वच्छता पर किए जा रहे विशेष महत्वपूर्ण कार्यों की भी मुख्यमंत्री द्वारा प्रशंसा की गई जो की गाजियाबाद शहर के लिए गर्व का विषय है महापौर तथा नगर आयुक्त भी गौरांवित हुए।

स्वच्छ मोहल्ला स्क्वाड के क्रम में सुनियोजित पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। जिसके क्रम में 100 स्कूलों में स्वच्छता की पाठशाला लगाई गई प्री एग्जाम के बाद गाजियाबाद नगर निगम द्वारा पोस्ट एग्जाम भी विद्यार्थियों का लिया गया। जिसमें प्री तथा पोस्ट एग्जाम के मध्य एक विशेष अंतर विद्यार्थियों में स्वच्छता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति पांच प्रतिशत की जागरूकता वृद्धि को दशार्ता है जो की सराहनीय है।

स्वच्छ मोहल्ला स्क्वाड अभियान के उपरांत गाजियाबाद नगर निगम द्वारा सर्वे किया तथा इंपैक्ट एनालिसिस रिपोर्ट को भी तैयार किया गया जिसका अनावरण मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। महापौर सुनीता दयाल द्वारा बताया गया कि गाजियाबाद नगर निगम के माध्यम से स्वच्छ मोहल्ला स्क्वाड अभियान चलाया गया। जिसमें पाया गया कि ट्रिपल आर मुहिम में छात्राओं का अधिक रुझान है छात्रों को भी ट्रिपल आर के लिए मोटिवेट किया जा रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार कक्षा 7 और 8 के विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति अधिक जागरूकता दिखाई दी साथ ही शिक्षकों में भी स्वच्छता की पाठशाला को अनिवार्य रूप से स्कूल एजुकेशन में शामिल करने के लिए अपनी रुचि दिखाई।

इसी क्रम में मुख्यमंत्री द्वारा किए गए अनावरण पर शहर में उत्साह है, महापौर द्वारा शहर वासियों तथा निगम अधिकारियों को शुभकामनाएं दी गई।

स्वच्छ मोहल्ला स्क्वायड के इंपैक्ट एनालिसिस रिपोर्ट के अनावरण पर महापौर सहित गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग तथा समस्त विधायक , उपस्थित रहे। मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार सुनील शर्मा तथा नरेंद्र कश्यप द्वारा भी गाजियाबाद नगर निगम को बधाई दी गई। नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक की योजना लगातार सफल होती दिखाई दे रही है। जिसके क्रम में गाजियाबाद नगर निगम द्वारा मुख्यमंत्री तथा अतिथियों के आगमन व्यवस्थाओं में विशेष भूमिका निभाई।

अनावरण के समय मुख्यमंत्री द्वारा स्वच्छता की पाठशाला हर विद्यार्थी के लिए अनिवार्य हो तथा स्कूल एजुकेशन में स्वच्छता की पाठशाला को शामिल करने के लिए भी कहा गया। गाजियाबाद नगर निगम स्वच्छता की बात को विश्व स्तर तक भी पहुंचा रहा है । जिसकी प्रशंसा मुख्यमंत्री द्वारा की गई । नगर आयुक्त द्वारा सभी गाजियाबाद नगर निगम के अधिकारियों तथा टीम को शुभकामनाएं देते हुए मोटिवेट किया गया।

यू.पी.ऑब्ज़र्वर

सम्पादकीय

अंतरिक्ष में भारत का 'लाल'

अंतरिक्ष में छलांग लगा कर एक और इतिहास रचा गया है। भारत के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला पहले भारतीय हैं, जो अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) तक पहुंचे हैं। अलबत्ता तत्कालीन विंग कमांडर राकेश शर्मा के बाद दूसरे भारतीय अंतरिक्ष यात्री हैं, जो अंतरिक्ष में मानव जीवन की संभावनाओं को टटोलने की एक अद्भुत और दुर्लभ यात्रा पर हैं। करीब 41 साल बाद कोई भारतीय अंतरिक्ष में जा पाया है। भारत माता के ऐसे 'लाल' को बधाई और ढेरों शुभकामनाएंङ्घ। शुभांशु भारतीय वायुसेना में ग्रुप कैप्टन हैं और लड़ाकू विमान उड़ा चुके हैं। उन्हें 2000 घंटे से अधिक उड़ान का अनुभव है। अंतरिक्ष मिशन में भी वह पायलट की भूमिका में हैं। आसमान में विचरण करना उनका पेशा है, लेकिन इस बार उन्होंने आईएसएस में 14 दिन बिताने का बीड़ा उठाया है। यह प्रथम अवसर है, जब भारत सरकार की कैबिनेट ने प्रस्ताव पारित कर, तालियां बजा कर, शुभांशु की अंतरिक्ष यात्रा का स्वागत किया है, शुभकामनाएं दी हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें 140 करोड़ (असल आबादी 146 करोड़ से अधिक) भारतीयों की 'उम्मीद' करार दिया है। जब राकेश शर्मा अप्रैल, 1984 में अंतरिक्ष में गए थे, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उनसे पूछा था–ऊपर से भारत कैसा दिखता है? राकेश का जवाब था–'सारे जहां से अच्छाङ्घ।' इस बार शुभांशु ने भारतीयों के नाम पहला ऑडियो संदेश भेजा–'क्या अद्भुत सफर है! हम 7.5 किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे हैं। मेरे कंधे पर तिरंगा मुझे बताता है कि मैं आप सभी के साथ हूं। यह भारत के मानव अंतरिक्ष मिशन की शुरूआत है। आप सभी इस सफर का हिस्सा बनें। आपका सीना भी गर्व से चौड़ा होना चाहिए ङ्घजय हिन्द, जय भारत।' बेशक यह अभियान आईएसएस तक जाने की यात्रा भर नहीं है, बल्कि भारत के 'मानव अंतरिक्ष मिशन' का पूर्वाभ्यास है। भारत का 'गगनयान' 2027 में अंतरिक्ष में जाना प्रस्तावित है। भारत 2035 तक अपना 'अंतरिक्ष स्टेशन' बनाने की योजना पर कार्यरत है। 2040 तक चंद्रमा पर इनसान भेजने का लक्ष्य है। मानव अंतरिक्ष मिशन में शुभांशु की इस यात्रा का अनुभव महत्वपूर्ण रहेगा। चूंकि 2030 तक आईएसएस सेवानिवृत्त होना लगभग तय है, लिहाजा निजी कंपनियां अपने अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने में जुटी हैं। जिस 'एक्सिओम-4' के तहत शुभांशु का चार सदस्यीय मिशन भेजा गया है, वह भी निजी कंपनी का प्रयास है। हालांकि इसरो, नासा आदि ने मिलकर मिशन को आकार दिया है। शुभांशु ने रूस में, इसरो और नासा के अंतरिक्ष केंद्रों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उसका 2019 में 'गगनयान' के लिए भी चयन हो चुका है। बहरहाल मिशन में शुभांशु भारतीय हैं, शेष तीन अंतरिक्ष यात्री अमरीका, पोलैंड और हंगरी के निवासी हैं। अमरीका की पैगी व्हिटसन अंतरिक्ष में 665 दिन गुजार चुकी हैं, लिहाजा उन्हें मिशन कमांडर बनाया गया है। यह मिशन आईएसएस में कुल 60 वैज्ञानिक प्रयोग करेगा। उनमें से 7 प्रयोग भारत के लिए किए जाएंगे। उन प्रयोगों में प्रमुख हैं–मांसपेशियों की हानि का अध्ययन, मूंग और मेथी जैसे भारतीय सुपर फूड को माइक्रोग्रैविटी में उगाने का प्रयोग, माइक्रोएल्गी (सूक्ष्म शैवाल) की तीन प्रजातियों की वृद्धि, चपाचय और आनुवंशिक गतिविधियों का अध्ययन, अंतरिक्ष में सूक्ष्मजीवी के व्यवहार और वृद्धि का अध्ययन, अंतरिक्ष में कम्प्यूटर स्क्रीन के उपयोग के शारीरिक और संज्ञानात्मक प्रभावों का अध्ययन और मानव कोशिकाओं की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया का अध्ययन। अंतरिक्ष यात्रा के मानव शरीर पर कई असर पड़ते हैं, क्योंकि वहां ग्रैविटी नहीं है। हृदय, पीठ के लिगामेंट्स, खड़े रहने या चलने में असमर्थता, हड्डियों और मांसपेशियों आदि पर प्रभाव पड़ते हैं, लिहाजा अंतरिक्ष में योग और व्यायाम अनिवार्य हैं। आईएसएस में ग्लूकोज और इंसुलिन पर भी विशेष अध्ययन किया जाएगा, जो भविष्य में मधुमेह के इलाज की दिशा बदल सकता है। बेशक शुभांशु मानवता के कल्याण की यात्रा पर हैं। वह और उनके साथियों का यह सफर सुखद रहे, ऐसी कामना है।

श्रद्धा का सफर या सिस्टम की सजा?

तीर्थस्थल लोगों की आस्था के साथ-साथ पर्यटन, रोजगार और राजस्व अर्जन के महत्त्वपूर्ण केंद्र होते हैं। अपेक्षा की जाती है कि ऐसी जगहों पर लोगों की आवाजाही, रुकने-ठहरने, खाने-पीने की समुचित और सुविधाजनक व्यवस्था हो। सरकारें तीर्थस्थलों के विकास और वहां श्रद्धालुओं-सैलानियों को आकर्षित करने का प्रयास करती हैं। इस दृष्टि से अनेक तीर्थस्थलों तक पहुंचने वाली सड़कों को चौड़ी करने, सुरंगों, उपरिगामी पुलों आदि के निर्माण, होटल, मोटेल आदि की सुविधाएं विकसित करने के प्रयास किए गए हैं। इसका असर भी नजर आता है। अनेक तीर्थस्थलों पर लोगों की आवाजाही काफी बढ़ गई है। मगर इसके साथ ही इन जगहों पर कमाई की होड़ में कई अव्यवस्थाएं भी पनपी हैं। इसका नतीजा यह है कि दुर्गम जगहों, पहाड़ों के तीर्थस्थलों पर हादसे बढ़े हैं, जिनमें हर वर्ष बहुत सारे श्रद्धालुओं-सैलानियों की जान चली जाती है। इस मामले में उत्तराखंड के तीर्थस्थलों पर अव्यवस्था की वजह से होने वाले हादसों को लेकर सबसे अधिक सवाल उठते हैं। इस वर्ष चारधाम यात्रा शुरू होने के बाद से, दो महीनों के भीतर, सड़क दुर्घटनाओं, हेलिकाप्टर हादसे आदि की वजह से करीब साठ लोगों की जान जा चुकी है। हालांकि प्रशासन का दावा है कि वह यात्रियों की हर सुविधा का ध्यान रखता है, पर सच्चाई यह है कि अव्यवस्था के कारण चारधाम यात्रा में कई तरह की असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। यों, सैलानियों की बढ़ती तादाद और उनकी सुविधाओं के मद्देनजर किए जा रहे निर्माण कार्यों की वजह से उत्तराखंड के पर्यावरण को पहुंच रहे भारी नुकसान को लेकर लंबे समय से आवाजें उठती रही हैं। वहां के पहाड़ भंगुर हैं, निर्माण कार्यों और अतार्किक ढंग से बन रहे भवनों, सड़कों आदि के कारण उनमें दरारें पड़ने की शिकायतें आती रहती हैं। तेज बरसात में भूस्खलन से जब-तब तबाही के मंजर उपस्थित हो जाते हैं। इसलिए इस बात पर जोर दिया जाता रहा है कि वहां सैलानियों और पर्यटन संबंधी गतिविधियों पर लगातार निगरानी रखी जाए, उन्हें नियंत्रित और संतुलित किया जाए, ताकि अधिक भीड़भाड़ से असुविधाओं और जोखिम की स्थिति न बने। पर प्रशासन ने जैसे वहां कारोबारियों को मनमानी की छूट दे रखी है। इसी का नतीजा है कि हेलिकाप्टर सेवा उपलब्ध कराने वाले तय मानकों को ताक पर रखते हुए उड़ान भरते रहते हैं। यही हाल वहां टैक्सी आदि की सेवाएं उपलब्ध कराने वालों का है।

बहते जल को बहने दीजिए

शास्त्रों के अनुसार पूजन, पण्डिताई, पुरोहिताई और ज्योतिष का अधिकार तो वास्तव में ब्राह्मणों का है,पंडितों का है । मंदिरों में पुजारी भी पंडित होंगे, ज्योतिष बाँचने वाले भी पंडित होंगे । सप्तऋषियों सहित जितने भी प्रारम्भिक ऋषि हुए वे सभी ब्राह्मण थे । सत्यनारायण की कथा सुनाने से लेकर श्रीमद्भागवत करने , राम कथा बाँचने , यज्ञ अनुष्ठान कराने , सोलह संस्कार और गृह प्रवेश कराने का अधिकार भी ब्राह्मणों का है । तीर्थों पर संस्कार और समस्त कर्मकांड कराने के शास्त्र सम्मत अधिकारी पण्डे पुरोहित हैं । दान लेने के अधिकारी भी ब्राह्मण हैं ।

कौशल सिखौला
(वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)

न होते तो रामेश्वरम में शिवलिंग स्थापना के लिए भगवान राम रावण जैसे प्रतापी ब्राह्मण को लंका से न बुलाते । वे स्वयं क्षत्रिय वंश में जन्मे थे । यादवकुल में जन्मे भगवान कृष्ण शास्त्रों एवं विद्याओं का अध्ययन करने ब्राह्मण ऋषि संदीपनी के आश्रम न जाते । जितने भी राज्य भारत में थे उन सभी में क्षत्रिय राजा ब्राह्मण वर्ग से राज पुरोहित का अनिवार्य आसन राजा के समकक्ष ऊंचाई पर स्थापित न करते । कारण वही कि सामाजिक संदर्भों में ब्राह्मणों को पूज्य का दर्जा प्राप्त था । ब्राह्मण पूज्य न रहा होता तो दरबार में रानियों और मंत्रियों के साथ बैठे राजा कृष्ण नंगे पांव दौड़े दौड़े बाहरी द्वार पर न आते, आंसुओं के जल से गरीब ब्राह्मण सुदामा के पांव न धोते । ब्राह्मण पूज्य था, तभी तो पांडव एवं कौरव राजकुमारों को शिक्षा के लिए द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे ब्राह्मणों के पास जाना पड़ा। भाइयों सहित चारों दशरथनंदन वशिष्ठ और विश्वामित्र के आश्रम न जाते । ब्राह्मण मेधा का धनी था, तभी तो भारत पर आक्रमण से पूर्व सिकंदर ने भारत की शक्ति का पता लगाने के लिए अपने दूत को चाणक्य के आश्रम में विद्यार्थी बनाकर भेजा था । कथा है कि सुकरात ने भी भारत की ब्रह्मशक्ति के प्रति जिज्ञासा प्रकट की थी ।यह एक छोटी सी प्रस्तावना है जो यह दिखाने के लिए सुनाई की भारतवर्ष में ब्राह्मण का महत्व अनादिकाल से है। हम इटावा में ही अप्रिय और निंदनीय घटना के बारे में जरा भी बात नहीं करना चाहते है। जो हुआ वह बहुत बुरा था, कानूनन कार्रवाई चल रही है । वस्तुतः देश के इतिहास को समझने का समय आ गया है । हमारी संस्कृति में ज्ञान की महिमा थी। न होती तो महर्षि वेदव्यास को महान ऋषि न माना गया होता । जगद्गुरु आदि शंकराचार्य भारतवर्ष में समन्वय स्थापना के लिए समरसता के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया ।

जिस मनुस्मृति ने वर्णाश्रम व्यवस्था दी, उसने कार्य निष्पादन के नियम भी दिए। इन्हीं नियमों से भारत देश युगों से चला आ रहा है। इस व्यवस्था में दासीपुत्र विदुर हस्तिनापुर जैसे विशाल राज्य के मंत्री बनते हैं और गैर क्षत्रिय चंद्रगुप्त राजा बनता है। महर्षि वेदव्यास समस्त वेदों, उपनिषदों, पुराणों और अनेक महाग्रंथों का लेखन करते हैं। क्या क्या गिनाएं, महीनों बीत जाएंगे, पूरा नहीं होगा।

जाति वर्ण व्यवस्था तो वनस्पति में भी है और जंतुओं में भी। अब देखिए न एक पेड़ दयार का है, एक चिनार का, एक चंदन का, एक खैर का और एक शीशम का। सभी वृक्ष हैं पर फर्क है ना कुछ? एक पेड़ नीम का है, एक बबूल का ... कीकर का । जीवनदायिनी पौधे तथा जड़ी बूटियां भी हैं और नरभक्षी पौधे भी? कुछ तो बात होगी जो जंगल का राजा शेर ही बनेगा उससे 100 गुना वजन वाला हाथी नहीं? कोई तो फर्क होगा गुलाब, कमल, गेंदे और बांसे के फूल में? फर्क है साहब गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी और समुद्र के जल में ?

तो छोड़िए ये राजनीति ये तमाशे ये राग रंग । भारतीय समाज एक प्रवाह है, रोड़े मत अटकाईये, बहते जल को बहने दीजिए। याद रखिए यह कालचक्र है, इसका रथ चलने दीजिए। ज्यादा राजनीतिबाज बनेंगे तो अपनी ही आग में जल जाएंगे ?

श्रृंगी ऋषि के राम

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी को इस जन्म में अक्षरबोध न होने पर भी, एक विशेष समाधि अवस्था में, शवासन की मुद्रा में लेट जाने पर पूर्व जन्मों की स्मृति के आधार पर, भगवान राम के दिव्य जीवन को प्रवचनों में साक्षात वर्णित किया है

ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी का जन्म 27 सितम्बर, सन 1942 को गाजियाबाद जिले के ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में हुआ,वे जन्म से ही जब भी सीधे, श्वासन की मुद्रा में लेट जाते या लिटा दिये जाते,तो उनकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित 45 मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन होता। पर इस जन्म में गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अक्षर बोध भी न कर सके,ऐसे ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा,बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ, कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और इसी आत्मा के द्वारा राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि याग कराया गया,और अब जब वे समाधि अवस्था में पहुँच जाते है तो पूर्व जन्मों की स्मृति के आधार पर प्रवचन करते ,यहाँ प्रस्तुत हैं उनके उनके द्वारा साक्षात्देखा गाया, भगवान्राम का दिव्य जीवन)

भाग 25

गतांक से आगे .....

अग्नि को जब हम ब्रह्म-अग्नि बना करके उसकी पूजा करते हैं,तो ब्रह्म के समीप जाते हैं,वेद के गान गाने लगते हैं,परमात्मा के समीप जा करके अपने को हम धन्य स्वीकार करते हैं। वही वेद गान,जब हम उस अग्नि को वैश्वानर नाम की अग्नि स्वीकार करते हैं,तो वैश्वानर नाम की अग्नि बन करके हम विश्व को अपना मित्र बना लेते हैं। जब गार्हपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करते हैं,तो गृह को अपने वशीभूत करके हम गृह का शोधन कर देते हैं। वहीं गार्हपथ्य नाम की अग्नि का,जब हम पूजन करना प्रारम्भ करते हैं,तो विद्यालयों को पवित्र बना देते हैं।

ब्रह्मचारी अपने में गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करके आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके उसकी पूजा करता है और पूजा के उपरान्त आचार्य उसे निगली हुई विद्या को प्रदान कर देता है। ये सब अग्नि की पूजा कही जाती हैं। परन्तु अग्नि का अभिप्रायः यह है जो काष्ठों में रहने वाली अग्नि है,उस अग्नि से हम याग करते हैं। इसी अग्नि के द्वारा हम अपने को महान् बना करके पवित्र बना लेते हैं। उस अग्नि को हम जैसी अग्नि है हम उसी प्रकार से भिन्न-भिन्न प्रकार की अग्नियों को स्वीकार करने का नाम उसकी पूजा कही जाती है।

इसलिये पूजा का अभिप्रायः यह है कि जैसी जो वस्तु है उसको वैसा ही स्वीकार करना है। जैसे एक मानव जल की पूजा करना चाहता है, जल की पूजा करने का अभिप्रायः क्या है? वह प्राण वर्धक है, वह प्राणों को देने वाला है। रुग्ण हो रहा है, कंठ में जल नहीं रहा है, तो वो जल को अपने में पान करना चाहता है अपने में धारण करता है,जब वह पान करता है तो उसके कंठ में मार्धुय-पन आ जाता है, उसके कंठ में एक शीतलता आ जाती है। वह अपने को स्वीकार

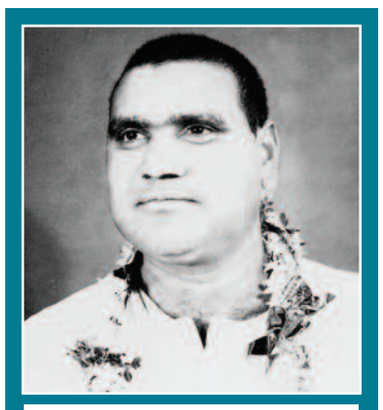

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी

करता है कि मैं शीतल बन गया हूँ। पवित्रता में अपने को पनपा रहा हूँ। अब जल को उसी रूप में स्वीकार करके उसे हम अपने प्रयोग में लाये, तो यह उसकी पूजा कही जाती है।

प्रत्येक मानव अपने माता-पिता की पूजा करना चाहते हैं,तो माता-पिता अमरनाथ में परिणित करें उसको नाना प्रकार का सुख देने का प्रयास करें,तो यह उसकी पूजा कही जाती है। पूजा का अभिप्रायः क्या है? सुख को देना ही उसकी पूजा है। परमात्मा की हम पूजा करना चाहते हैं, परमात्मा के हम समीप जाना चाहते हैं,तो प्राण का हमें निरोध करना होगा। प्राण का निरोध करते-करते वह हमें ब्रह्म के समीप ले जाता है क्योंकि प्राण एक सूत्र है संसार का, ब्रह्माण्ड का सूत्र बना हुआ है। हम उस सूत्र को अपने में सूत्रित करें तो वह परमात्मा से हमारा मिलान करा सकता है।

माता अरून्धती ने कहा, ''हे ब्रह्मचारियो! मैंने यह सूक्ष्म सा उपदेश तुम्हें दिया,यह दीक्षान्त है कि तुम ज्ञान,कर्म और उपासना में रत्त हो करके अपने में आचार्य की पूजा करो। आचार्य की पूजा का अभिप्रायः क्या है,जो आचार्य ने निगली हुई विद्या प्रदान की है अथवा तुम्हारे में भरण कर दी,उस विद्या को अपने में स्वीकार करके और उस विद्या से अपने आचरणों,अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाना ही आचार्य की पूजा कही जाती है। पूजा का अभिप्रायः यही है।'' माता अरून्धती यह उच्चारण करके मौन हो गयी।

जब मौन हो गयी,तो ब्रह्मचारी भी अपने में आश्चर्यचकित हो गये,कि हमें तो मातेश्वरी ने ज्ञान देकर उपासना के ब्रह्माण्ड का स्पष्टीकरण कराया है। यह तो विशाल वन है जिस विशाल वन में हमें मातेश्वरी ने पहुँचाया है। हमें मातेश्वरी की पूजा करनी होगी। सबसे प्रथम उसी की पूजा में हमें रत्त रहना है, क्योंकि उसी के वाक्यों का पान करके हमें तपस्वी बनना है,अपने को तपस्या में परिणित कर देना है।

क्योंकि संसार का इतना वैभव है संसार की इतनी सक्रीर्णताएं हैं,उन्होंने सक्रीर्णता के ऊपर कोई अपना प्रकाश नहीं दिया है। उन्होंने ऊर्ध्वा में व्यापकता का एक उपदेश दिया है। ब्रह्मचारी मौन हो गये और मातेश्वरी माता अरून्धती भी मौन हो गयी। क्रमश.....

पुण्य सस्मरण-

राष्ट्रवादी चिंतक थे कमलकिशोर गोयनका

गिरीश पंकज
प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक लेखक

डॉ. कमलकिशोर गोयनका पर कुछ लिखने का अवसर जब भी आया, मैंने लिखा, क्योंकि उनके जैसे लोग सदियों में पैदा होते हैं। लेकिन अब उनके बारे में भारी मन से लिखना पड़ रहा है। वे हमारे बीच नहीं हैं। पिछले दिनों 86 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। वर्षों पहले दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रहे। डॉ गोयनका कुछ समय से वह बीमार चल रहे थे। न जाने कितने लोग होंगे, जो एक बात तो यही कहते होंगे कि मुझे गोयनका जी का बड़ा स्नेह मिला। इस पंक्ति में मैं भी शुमार हूँ। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा से खार खाए लोग भी थे। कुछ लोग उनकी राष्ट्रवादी भावना को अन्यथा लेते थे, लेकिन मुझे यह अच्छा लगता था कि कुछ लोग तो हैं जो ईमानदारी के साथ देश प्रेम के लिए समर्पित हैं और लिख भी रहे हैं। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद साहित्य के विशेषज्ञ के रूप पहचाने जाने वाले डॉ. कमलकिशोर गोयनका का जाना एक साहित्यिक क्षति है। एक सांसारिक साधक-तपस्वी कैसा हो सकता है, वह देखना हो तो गोयनका जी को देखा जा सकता था। मुँहदेखी करने की आदत नहीं रही और यह कलम किसी के लिए भी नहीं चलती। बड़े-बड़े राजनेता और लम्पट किस्म के महान साहित्यकार तरस गए, उन पर एक लाइन नहीं लिखी, लेकिन जब गोयनका जी जैसी विभूति पर कुछ लिखना हो तो अपनी कलम अपने आप दौड़ने लगती है। और उनके महाप्रयाण के बाद तो मुझे उन पर लिखना ही था।

गोयनका जी को बचपन से ही पढ़ता आया हूँ। वे सत्यान्वेषी रहे हैं। खोजी प्रवृत्ति के। साहित्य के भी अनेक छिपे रहस्य इन्होने ही खोजे। कुछ महत्वपूर्ण गुमनाम लेखकों के बारे में भी उन्होंने विस्तार से लिखा। प्रवासी साहित्य के बारे में भी हुए निरंतर लिखते रहे। साहित्य अकादमी ने उनके संपादन में प्रेमचंद ग्रंथावली प्रकाशित की थी। उनके इसी उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें 'व्यास सम्मान' से विभूषित किया गया था।

अनेक झूठे चेहरों से नकाब भी हटाए है। सत्य को सामने रखने का नैतिक साहस अगर देखना हो तो गोयनका जी के यहाँ देखा जा सकता था। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के बारे में प्रगतिशील खेमे ने एक भ्रम -सा फैला कर रखा था। खास कर प्रेमचंद जी की गरीबी या बदहाली के बारे में । उस झूठ को गोयनका जी ने प्रमाण सहित तोड़ा और प्रेमचंद जी का वो बैंक खाता सबके सामने रखा जिसमे उनकी मृत्यु के कुछ समय पहले एक बड़ी रकम जमा थी। अनेक प्रमाणों के साथ गोयनका जी ने सिद्ध किया कि प्रेमचंद को गरीब कहना, उनके फटे जूते दिखाना आदि गलत है।

स्व. कमलकिशोर गोयनका

प्रेमचंद हमारे समय के सबसे बड़े लेखक है। इससे कौन इंकार करता है, । मगर उनका दयनीय रूप पेश करना कहाँ का इन्साफ है? और भी अनेक महत्वपूर्ण बाते हैं, जिससे प्रेमचंद जी के जीवन के कुछ पहलू सामने आते है। और इसका पूरा श्रेय जाता है गोयनका जी। उन सबका यहाँ जिक्र करना लेख को अनावश्यक विस्तार देना होगा। संक्षेप में यही कहना चाहता हूँ कि गोयनका जी ने हमेशा कथा सम्राट प्रेमचंद का वो मानवीय रूप सामने रखा, जो किसी भी मनुष्य को होता है या हो सकता है।

पिछले डेढ़ दशक पूर्व उनसे व्यक्तिगत परिचय भी हुआ। यह मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उनसे परिचय हुआ और उनके साथ ही बड़े नाटककार दयाशंकर सिन्हा से भी परिचय हुआ। वे भी मेरे छोटे-मोटे कामो से परिचित थे। खास कर 'सद्भावना दर्पण' के प्रकाशन से। और मेरी राष्ट्रवादी सोच से भी। यही कारण है कि दिनकर न्यास, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित मेरे उपन्यास "एक गाय की आत्मकथा" के द्वितीय संस्करण का दिल्ली में लोकार्पण हुआ तो गोयनका जी उस कार्यक्रम में न केवल शरीक हुए वरन उपन्यास पर एक विस्तृत समीक्षात्मक आलेख भी लिख कर लाए। उनकी समीक्षा मेरे लिए यादगार घटना बनी क्योंकि उसे लिखने वाला एक शीर्षस्थ लेखक था, जो किसी भी कृति पर ऐसे ही कलम नहीं चलाता। उन्हें लगा की मैंने भारतीय गायों की दुर्दशा पर लिखने का एक प्रयास किया है। और इस वक्त गाय के सवाल को उठता है? खास कर हिन्दी के उत्तरआधुनिक किस्म के लेखक। मेरी भावनाओं को स्वर देते हुए उन्होंने मंच से कहा था कि इस देश में गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगना ही चाहिए।

गोयनका जी को पता था कि मेरी पत्रिका भारतीय एवं विश्व साहित्य के अनुवाद को प्राथमिकता देती है। और देश-विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रमुखता से प्रकाशित करती है इसीलिये उन्होंने फोन करके कहा कि सद्भावना दर्पण को मॉरीशस के लेखक अभिमन्यु अनत पर एक विशेषांक प्रकाशित करना चाहिए।वे पचहत्तर वर्ष के हो रहे हैं। यह एक दशक पहले की बात है। गोयनका जी की बात सुन कर मेरी तो खुशी का ठिकाना न रहा। अभिमन्यु अनत से मैं मॉरीशस प्रवास के दौरान मिल चुका था । और बचपन से ही उनकी कहानिया एवं उपन्यास पढ़ने का अवसर मिलता रहा है।

मुझे खुशी हुई कि अनत जी की हीरक जयन्ती पर विशेषांक निकालने के लिए उन्होंने मुझे याद किया। गोयनका जी ने मुझे अनत जी की रचनाएँ और उनके अनेक छाया चित्र मुझे भेज दिए। उनके सहयोग से मेरी पत्रिका का अभिमन्यु अनत विशेषांक निकल गया। उसकी कुछ प्रतिया मैंने मॉरीशस भी भिजवा दी। विशेषांक का जब काम चल रहा था, तभी मैंने एक दिन गोयनका जी से बातचीत के दौरान कहा कि आप भी तो पचहत्तर के हो चुके हैं या होने वाले होंगे। मेरी बात सुन कर उन्होंने ठहाका लगाया और कहा-"आपने भी खूब पकड़ा। अभी दो महीने बाद मैंने भी पचहत्तर वर्ष का होने जा रहा हूँ।"

उनकी बात सुन कर मैंने कहा-"तो फिर एक विशेषांक आप पर भी केंद्रित होगा।"

मेरी बात सुन कर वे संकोच में पड़ गए। मना करने लगे लेकिन मैं जिद पर अड़ गया। आखिर वे झुके और मैंने 'सद्भावना दर्पण' का एक विशेष अंक उन पर केंद्रित किया। और ये भला कैसे न होता कि दुनिया भर के लोगो पर कलम चलने वाले मनीषी पर कोई बात न हो। साहित्य की दुनिया में अनेक शातिर लोग छाए हुए है। तोड़मरोड़ कर लिखने की कला में पारंगत आलोचक उनके पास है। साहित्य में गिराने और उठाने की कला में माहिर कुछ जमूरे भी शातिर माफियाओ के पास है। उनसे लड़ते हुए गोयनका जी ने न जाने कितने खतरे उठाए हैं। इसलिए उन पर किसी पत्रिका का विशेषांक निकले, उन पर कोई ग्रन्थ प्रकाशित हो, इससे बढ़ कर कोई सुन्दर बात हो नहीं सकती।

अन्याय-अत्याचार के विरुद्ध हरदम खड़े रहने वाले गोयनका जी आपातकाल के दौरान पूरे समय जेल में बंद रहे। उनके रचनात्मक तेवरों के कारण उन्हें गिरफ्तार किया गया, मगर वे झुके नही। जेल से छूटने के बाद भी वे अपना काम करते रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से उनका रिश्ता किसी से छिपा नहीं था। उन्होंने इसे छुपाया भी नहीं, इसलिए वामपंथी लेखक उन्हें दक्षिण पंथी कह कर उनको नजरअंदाज करने की कोशिश करते थे। लेकिन इससे डॉ गोयनका को कभी फर्क नहीं पड़ा। वे अपना प्रामाणिक लेखन करते रहे। गोयनका जी की साहित्य की दुनिया में एक सम्मानजनक उपस्थिति हमेशा बनी रही। उनके आलोचक भी उनकी अध्ययनशीलता और अन्वेषी-प्रतिभा का लोहा मानते रहे। भाजपा सरकार जब केंद्र में आयी तो उन्हें केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा का उपाध्यक्ष बनाया गया। गोयनका जी के आने के बाद अनेक लघु पत्रिकाओं को, हाशिये में पड़े लोगों का ध्यान रखा गया। इसके पहले गुटबाजी के कारण अनेक साहित्यिक प्रतिभाओं को सम्मान से वंचित रहना पड़ता था, लेकिन इस बार ऐसे लोगों को सम्मानित किया गया, जो वर्षो से साहित्य की उपेक्षा का शिकार होते रहे।जबकि इनकी लेखनी लोक मंगल के लिए समर्पित रही। गोयनका जी की महानता और उदारता का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि संस्थान से एक-दो ऐसी पत्रिकाओं को भी अनुदान दिया गया, जो वामपंथी सोच वाली थीं। गोयनका जी का मानना है कि ये पत्रिकाएं भले ही एक विशेष विचारधारा से प्रतिबद्ध हों, मगर वे साहित्य में बौद्धिक-विमर्श तो करती ही है।

हम चाहते थे कि 130 से अधिक पुस्तकों के लेखक डॉ. गोयनका जी शतायु हों। खूब लिखें और हम सबका मार्गदर्शन करते रहे। लेकिन विधि को कुछ और ही मंजूर था। गोयनका जी जैसे लोग बरगद होते हैं। छायादार बरगद। ऐसे बरगद जिसके नीचे साहित्य की नयी पौध भी पनप सकती है। पनप रही थी।जबकि कहा जाता है कि बरगद के नीचे कोई पौधा नहीं पनपता। गोयनका रूपी बरगद अपवाद रहे। आप अंत समय तक नयी पीढ़ी को प्रोत्साहित करते रहे। उनका मार्गदर्शन करते थे और अपने कर्म से ही सबको सन्देश देते कि लेखक को कैसा होना चाहिए। हिन्दी में अनेक नकली लेखक-आलोचक भरे पड़े है। सुरा-सुंदरी और मांसाहार आदि के शौकीन ये लोग साहित्य के उन्नयन की जब बात करते हैं तो

हँसी आती है। ऐसे लोगों के कारण स्त्री-विमर्श फूहड़ प्रहसन में तब्दील हुआ। इन खतरनाक लोगों के बीच गोयनका जी जैसे सात्विक लेखक-आलोचकों की उपस्थिति आश्वस्त करती थी कि जब तक इनके जैसे मुट्ठी भर अच्छे लोग विद्यमान हैं, सामाजिक-साहित्यिक मूल्य कायम रहेंगे।

उन्हें शत-शत नमन!

RNI No. 62592/95 स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक चंद्रशेखर शास्त्री ने भारती प्रिंटर्स, निकट पुरानी स्टील चुंगी, लोअर बाजार, मोदीनगर-201204, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित किया।
सम्पादक: चन्द्रशेखर शास्त्री, मोबाइल: 7351200046/9411246969, email: u.p.observer@gmail.com

नेत्र शिविर में 566 के रोगियों की जांच, 12 का हुआ मोतियाबिंद ऑपरेशन

स्वतंत्रता सेनानी लाला अर्जुन सिंह जी के जीवन से ले प्रेरणा: जिलाधिकारी

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

बागपत। कस्बा अग्रवाल मंडी टटीरी में आज स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय लाला अर्जुन सिंह जी की 33वीं पुण्यतिथि पर अग्रवाल धर्मशाला में निशुल्क नेत्र जांच एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारम्भ विधायक योगेश धामा ने फीता काटकर किया। शिविर में 566 नेत्र रोगियों की जांच की गई। 486 को चश्मे प्रदान किए गए। 12 रोगियों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए चयनित कर तारा नेत्रालय लोनी भेजा गया। कर्ण रोग विशेषज्ञ डॉक्टर शर्मा ने 87 रोगियों की जांच की, जिसमें 37 को श्रवण यंत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा, सभी को स्वतंत्रता सेनानी लाला अर्जुन सिंह जी के संस्कारों से सीख लेकर समाज की सेवा करनी चाहिए। लायन मंडल अध्यक्ष एमजेएफ लायन एके मित्तल ने कहा मानवता की सेवा ही सच्चा लायनवाद है। विशिष्ट अतिथि अशोक कुमार गुप्ता प्रधान सूरजमल विहार ने कहा की 40 वर्षों से निरंतर समाज की सेवा के लिए नेत्र शिविरों का आयोजन एक अनूठी सेवा है। 56 हजार से अधिक मोतियाबिंद के ऑपरेशन करना प्रभु की कृपा से ही संभव है। डॉक्टर रवि भटनागर ने कहा कि अग्रवाल मंडी में निरंतर मानव सेवा का कार्य चलता रहता है इसके लिए अभिमन्यु गुप्ता व समस्त टीम बधाई की पात्र है।

अध्यक्षता लायन धीरज अग्रवाल एवं लायन संजय गोयल ने की। कार्यक्रम में शिविर के मुख्य संयोजक अभिमन्यु गुप्ता, डॉ जे एस शर्मा, डिप्टी सीएमओ डॉक्टर दीपक दलाल ,डिप्टी सीएमओ डॉक्टर रोबिन चौधरी, पूर्व अध्यक्ष प्रमोद गुप्ता चेयरपर्सन, लायन पंकज गुप्ता, लायन दीपक गोयल, लायन प्रवीण गुप्ता, लायन सुनील मित्तल, लायन मास्टर मूलचंद, अनिल गांधी, अशोक कुमार, प्रदीप नैन, डॉक्टर मयंक गोयल, अतुल जिंदल, ,अंकित जिंदल, मनोज गुप्ता, डॉक्टर रामलाल, प्रदीप कुमार मानव, श्रीपाल वर्मा, विभोर जिंदल, गौरव आर्य, बृजभूषण गोयल, आशुतोष मित्तल, प्रमोद जैन, संजय जिंदल, सतीश जिंदल, अनिल जिंदल, गौरव जिंदल, श्रीमती रजनी गुप्ता, श्रीमती सुधा गुप्ता, संतोष गुप्ता, सुदेश जिंदल, रुद्र जिंदल, संजय गर्ग, मनोज गोयल आदि का सहयोग रहा।

चार पदक जीतकर लौटे यश का भव्य स्वागत

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

बागपत। उत्तर प्रदेश के बागपत में खेकड़ा क्षेत्र के गौना सहवानपुर गांव के होनहार यश यादव ने कर्नाटक में शानदार प्रदर्शन कर तीन स्वर्ण पदक और एक कांस्य पदक जीतकर क्षेत्र का नाम रोशन किया। रविवार को गांव पहुचने पर यश का गौना सहवानपुर के अलावा चिरोडी और भागौट में फूल मालाओं से स्वागत किया गया।

कर्नाटक के दावणगेरे में आयोजित सब जूनियर इक्विप्ड नेशनल पावरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप 22 से 29 जून तक आयोजित की गई थी, जिसमें यश यादव ने 53 किलो भार वर्ग में कुल 482.5 किलो वजन उठाकर तीन स्वर्ण और एक कांस्य पदक अपने नाम किए।

यश ने वेटलिफ्ट में नेशनल रिकॉर्ड भी बनाया। प्रदर्शन के चलते यश का चयन आगामी एशियन इक्विप्ड पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप के लिए भी हो गया है। रविवार को यश के गांव लौटने पर ग्रामीणों ने फूल मालाओं और ढोल नगाड़ों के साथ उनका जोरदार स्वागत किया।

स्वागत करने वालों में जिला पंचायत सदस्य मनुपाल बंसल, ग्राम प्रधान वेद सिंह, प्रमोद पहलवान भगौट, मुकेश गुर्जर बॉडीबिल्डर, राजा पहलवान, चरत सिंह, मुकेश यादव, खुशीराम, विजयपाल फुलेरा, अजब सिंह, मुखिया यादव, नरेश यादव, दीपचंद, चमन, कमल सिंह आदि शामिल रहे।

रक्तदान शिविर में 21 रक्तवीरों ने किया रक्तदान

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

बागपत। अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन आईवीएफ महिला इकाई बागपत, जिला रेडक्रॉस समिति बागपत एवं लायंस क्लब अग्रवाल मंडी के संयुक्त तत्वावधान में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन जिला संयुक्त अस्पताल के सीएमएस डॉक्टर महेंद्र मलिक द्वारा फीता काटकर किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि रक्तदान से मानव जीवन बचाया जा सकता है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बुलंदशहर आईवीएफ की जिला अध्यक्ष श्रीमती मंजू गुप्ता ने कहा कि आईवीएफ के स्थापना दिवस के पखवाड़े पर पूरे देश में रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। बागपत में श्रीमती दीपाली गोयल की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम किया जा रहा है। संचालन करते हुए राष्ट्रीय प्रभारी अभिमन्यु गुप्ता ने बताया कि शिविर में जिला रक्त बैंक बागपत की टीम द्वारा डॉक्टर शुक्ला के नेतृत्व में 21 रक्तवीरों से रक्त प्राप्त किया। बागपत रक्त बैंक में पहले से ही ज्यादा रक्त उपलब्ध होने से लगभग 30 रक्तदाताओं को वापस भेजना पड़ा। इस अवसर पर बुलंदशहर से श्रीमती पुष्पा गुप्ता, बागपत से श्रीमती हेमा गुप्ता, कंचन गुप्ता, पंकज गुप्ता, डॉक्टर मयंक गोयल, मनोज गोयल, डॉक्टर हर्षित गोयल, विनोद गुप्ता, लवी जैन, राजेश खुराना, नरेश गुप्ता, संदीप गुप्ता एडवोकेट, आशुतोष अग्रवाल, शिप्रा गोयल, हेमा गुप्ता, किरण गुप्ता, अचला गुप्ता, हेमलता शर्मा, स्नेहा गुप्ता ने रक्तदान कर शिविर को सफल बनाने में सहयोग किया। सभी रक्तदाताओ को आईवीएफ की ओर से सर्टिफिकेट एवं 8 वैश्य रक्तदाताओं को आजीवन सदस्यता उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

जीएसटी की विसंगति व समाधान पर मंथन

विश्व बंधु शास्त्री

बागपत। डिस्ट्रिक्ट टैक्स बार एसोसिएशन द्वारा आयोजित सेमिनार में जीएसटीकी विसंगतियों व उसके समाधान पर मन्थन किया गया और एक्ट में संशोधन कर सरल किये जाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। प्रदेश भर से 50 से अधिक जनपदों से टैक्सैसन प्रतिनिधियों ने सेमिनार में सहभागिता की। मुख्य अतिथि सेवानिवृ त्त न्यायमूर्ति मयंक जैन ने सेमिनार आयोजन के लिए बागपत टैक्स बार एसोसिएशन की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को अपने वरिष्ठों से उनके अनुभवों का लाभ लेना चाहिए। इस मौके पर दिल्ली से पधारे मुख्य वक्ता जी एस टी विशेषज्ञ सी ए बिमल जैन ने जी एस टी की विसंगतियों व उनके समाधान पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने मुख्य रूप से जी एस टी की धाराओं पर विशेष चर्चा की। अध्यक्षता डिस्ट्रिक्ट टैक्स बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सुधीर कुमार जैन एडवोकेट ने की। इस मौके पर उत्तर प्रदेश कर अधिवक्ता संगठन के संस्थापक अध्यक्ष हर्ष शर्मा एडवोकेट व प्रांतीय अध्यक्ष विक्रम सिंह भदौरिया एडवोकेट व एन के अरोरा, प्रेम सुंदर उपाध्याय ने भी संबोधित किया। डिस्ट्रिक्ट टैक्स बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सुधीर कुमार जैन एडवोकेट ने व उनकी टीम ने अभ्यागतों का स्वागत किया। संचालन जितेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट व आशुतोष अग्रवाल एडवोकेट ने संयुक्त रूप से किया। सीए राहुल जैन व कन्विनर सौरभ जैन एडवोकेट ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। समारोह में उद्योगपति योगेन्द्र जैन, नीरज सिंह अध्यक्ष जिला बार एसोसिएशन बागपत, जसपाल सिंह राणा, नरेन्द्र मान, अंकित लपराणा, अरूण जैन, मनुऋषि, आलोक गोयल, अरविंद कालरा नोएडा, दिलीप शर्मा गाजियाबाद, जितेन्द्र कुमार,जे पी गुप्ता, अशोक अग्रवाल, रघुनंदन गुप्ता, दीपिका के अलावा सोनभद्र, प्रयागराज,आगरा, अलीगढ़, मथुरा, गाजियाबाद, नोएडा, मुजफ्फरनगर, कौशाम्बी आदि अनेक जनपदों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

संचारी रोगों से बचाव अभियान में सहयोग करेंगे शिक्षक

बीआरसी पर खंड शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

खेकड़ा (बागपत)। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक स्कूल चलो अभियान के तहत संचारी रोगों से भी जागरूकता करेंगे। शनिवार को बीआरसी पर बैठक में प्रधानाध्यापकों ने संकल्प को दोहराया।

एक जुलाई से विधिवत स्कूल खुल जाएंगे। बच्चों को स्कूल परिसर में पुष्प वर्षा से स्वागत होगा। मिडडे मिल में खीर या हलवा बनेगा। शनिवार को खंड शिक्षा अधिकारी सुभाष चन्द्र की अध्यक्षता में प्रधानाध्यापकों की बैठक आयोजित हुई। इसमें स्कूल चलो अभियान के तहत बच्चों को स्कूल में प्रवेश पर बल दिया गया। कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। स्वास्थ्य विभाग की ओर से आरबीएसके टीम के डा. दीपक, पंकज जोशी, शिवसरन आदि ने संचारी रोगों से बचाव जागरूकता की जानकारी देते हुए बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में ब्लाक के सभी 76 स्कूलों के प्रधानाध्यापक मौजूद रहे।

सरकारी अनाज के अवैध भंडारण की सूचना पर की कार्यवाही

बागपत। खेकड़ा नगर पालिका क्षेत्र में सरकारी अनाज के अवैध भंडारण की सूचना प्राप्त होने पर उपजिलाधिकारी खेकड़ा निकेत वर्मा ने तीन सदस्यीय टीम का गठन कर तत्काल मौके पर भेजा। टीम में नायब तहसीलदार खेकड़ा, ए.आर.ओ. एवं सप्लाई इंस्पेक्टर शामिल रहे। जांच के दौरान मौके से सरकारी सील बंद चावल के 60 कट्टे (लगभग 30 क्विंटल) तथा प्लास्टिक के कट्टों में कुल 17 क्विंटल चावल बरामद किया गया। बरामद समस्त अनाज को क्रय-विक्रय समिति, खेकड़ा की सुपुर्दगी में दे दिया गया है। एसडीएम ने बताया कि इस प्रकरण में आमिर व संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध आवश्यक वस्तु अधिनियम के अंतर्गत कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

दिल्ली आम महोत्सव में रटौल के आम की रहीं धूम

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

बागपत। देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित 34वें आम महोत्सव में उत्तर प्रदेश में बागपत के रटौल गांव से लाए गए आमों ने दर्शकों और विशेष अतिथियों का दिल जीत लिया। रटौल आम अपने अनोखे स्वाद और भीनी खुशबू के चलते प्रदर्शनी में आकर्षण का केंद्र बना रहा। रटोल में आम उत्पादकों ने बताया कि यह महोत्सव 27 जून से 29 जून तक दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है, जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया। देश भर से आए आम उत्पादकों ने लगभग 290 किस्मों के आम प्रदर्शनी में पेश किए। रटौल से पहुंचे आम उत्पादक हबीब खान और चौधरी गुलाम रब्बानी ने अपने-अपने स्टॉल लगाए, जहां बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ उमड़ रहीं है। दर्शकों ने न सिर्फ रटौल आम का स्वाद लिया, बल्कि इसके इतिहास, विशेषताओं और अंतरराष्ट्रीय पहचान को लेकर भी उत्सुकता जताई।

चौधरी गुलाम रब्बानी और हबीब खान ने बताया कि रटौल आम अपनी विशिष्ट मिठास और खुशबू के कारण देश ही नहीं, विदेशों में भी काफी लोकप्रिय है। महोत्सव के अंतिम दिन यानी 29 जून को सर्वश्रेष्ठ आम का चयन कर प्रथम स्थान प्राप्त आम की घोषणा की जाएगी। रटौल आम की लोकप्रियता को देखते हुए उत्पादक इस बार शीर्ष स्थान की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

ड्रिप सिंचाई से 50 प्रतिशत पानी की बचत व उत्पादन में 20-25 प्रतिशत की वृद्धि

प्रधानमंत्री कृषि सिचाई योजना से टपक सिंचाई सयंत्र का लाभ उठाएं गन्ना किसान: गन्ना आयुक्त

पौधों की जड़ो में सीधा पानी पहुँचने से खरपतवार की समस्या में होगी कमी

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

लखनऊ। प्रदेश के आयुक्त, गन्ना एवं चीनी ने बताया कि लघु व सीमान्त किसानों एवं अन्य कृषकों के हित के दृष्टिगत प्रधानमंत्री कृषि सिचाई योजना 'पर ड्राप मोर क्राप' (माइक्रोइरिगेशन) को गन्ना खेती में लागू कर उत्पादकता में वृद्धि के सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं, जिससे गन्ना उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ जल संरक्षण / पानी की बचतके क्षेत्र में दीर्घकालिक लाभ किसानों को मिल सके।

आयुक्त, गन्ना एवं चीनी प्रमोद कुमार उपाध्याय बताया कि गन्ना विकास विभाग द्वारा कृषि क्षेत्र में पानी के दोहन में कमी लाकर जल संरक्षण, गन्ना खेती के लागत में कमी लाने और किसानों की आमदनी में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए ड्रिप सिंचाई किसानों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस संबंध में सभी गन्ना उत्पादक जिलों का लक्ष्य निर्धारित कर दिया गया है। वर्ष 2025-26 के लिए 25000 हेक्टेयर का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिससे लगभग 20-25 हजार गन्ना किसान लाभान्वित होंगे।

गन्ने की खेती में ड्रिप इरीगेशन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए गन्ना आयुक्त ने बताया कि प्रतिदिन जल स्तर में हो रही कमी में सुधार हेतु भू-जल संचयन, सिंचाई जल के उपयोग में कमी उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि के दृष्टिगतपारम्परिक सिंचाई विधियों की तुलना में ड्रिप सिंचाई प्रणाली बहुत प्रभावी तकनीक है। इससे पानी सीधे पौधों की जड़ों तक पहुंचता हैऔर फलस्वरूप कम पानी में ही पौधों की जरूरत पूरी हो जाती है। जिससे खेती में 50 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है और गन्ना उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ जल व ऊर्जा की बचत होती है तथा खेत में खरपतवार में कमी आती है।

गन्ना आयुक्त ने यह भी बताया कि गन्ना विकास विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 'पर ड्राप मोर क्राप' (माइक्रोइरिगेशन) योजना के अन्तर्गत आर्थिक रूप से पिछड़े लघु एवं सीमान्त कृषकों हेतु 90 प्रतिशत अनुदान दर पर 5000 हेक्टेयर एवं अन्य श्रेणी के कृषकों हेतु 80 प्रतिशत अनुदान दर पर 20000 हेक्टेयर अर्थात गन्ना से आच्छादित जिलों हेतु कुल 25000 हेक्टेयर क्षेत्रफल में गन्ने की फसल हेतु लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि गन्ने की खेती के लिए जल एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक है, कृषि कार्यों के लिए दिन प्रतिदिन जल स्तर में हो रही कमी, पानी की घटती उपलब्धता एवं भू-गर्भ जल की महत्ता को देखते हुए पानी का सदुउपयोग अत्यन्त आवश्यक है। ड्रिप सिंचाई में पानी और पोषक तत्वों का सही मात्रा में, सही समय पर इस्तेमाल होता है। इससे पानी की बचत होती है और पौधों का विकास बेहतर होता है। उन्होनें बताया कि ड्रिप सिंचाई को बढावा दिये जाने तथा प्रगतिशील किसानों को योजना के मुख्य बिन्दु से जोड़ने एवं इसका सफल व प्रभावी क्रियान्वयन की प्रक्रिया के संबंध मेंजनपद एवं परिक्षेत्रीय अधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी किये गये हैं।

गन्ना सर्वेक्षण कार्य 30 जून 2025 तक पूर्ण करने के निर्देश पेराई सत्र 2025-26 हेतु अब तक 37.62 लाख कृषकों के प्लाटों का सर्वे कार्य पूर्ण: गन्ना आयुक्त

- जी.पी.एस. सर्वे से गन्ना सर्वेक्षण कार्य में शुद्धता एवं पारदर्शिता आयी है
- गन्ना सर्वेक्षण का कार्य प्रत्येक दशा में 30 जून, 2025 तक किया जायेगा पूर्ण
- प्रदेश के 7014 कार्मिकों की संयुक्त टीम द्वारा गन्ना सर्वेक्षण का किया जा रहा कार्य

लखनऊ। प्रदेश के आयुक्त, गन्ना एवं चीनी प्रमोद कुमार उपाध्याय ने बताया कि गन्ना उत्पादन के सही आंकलन के लिये सर्वेक्षण कार्य में शुद्धता, पारदर्शिता एवं गन्ना किसानों की समस्याओं के निस्तारण के लिये गन्ना सूचना प्रणाली एवं स्मार्ट गन्ना किसान प्रोजेक्ट के अन्तर्गत हैण्डहेल्ड कम्प्यूटर के माध्यम से जी.पी.एस. सर्वे कराया जा रहा है। आगामी पेराई सत्र 2025-26 के लिए गन्ना सर्वेक्षण कार्य 30 जून, 2025 तक पूर्ण करा लिया जायेगा।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के कुल 46.84 लाख गन्ना कृषकों में से 37.62 लाख कृषकों के प्लाटों का सर्वे कार्य पूर्ण हो चुका है। गन्ना सर्वेक्षण कार्य में पारदर्शिता तथा शुद्धता के दृष्टिगत 7014 कार्मिकों की संयुक्त टीमें (राजकीय गन्ना पर्यवेक्षक, चीनी मिल कार्मिक) 4700 हैण्डहेल्ड कम्प्यूटर जी.पी.एस. मशीनों से सर्वे कार्य कर रही हैं।

आयुक्त ने बताया कि प्रदेश में गन्ने से आच्छादित 39075 ग्रामों का सर्वे कार्य पूर्ण करा लिया गया है, शेष बचे हुए ग्रामों का गन्ना सर्वेक्षण कार्य 30 जून तक सम्पन्न होगा। सर्वेक्षण समाप्ति के पश्चात् कम्प्यूटरीकृत गश्ती केन सर्वे रजिस्टर में गन्ना क्षेत्रफल का सारांश (गोशवारा) तैयार करते हुए कम्प्यूटरीकृत गश्ती केन सर्वे रजिस्टर के अंतिम पृष्ठ पर संबंधित चीनी मिल के सर्वे कर्मी, विभागीय गन्ना पर्यवेक्षक / समिति कार्मिक, संबंधित ब्लाक इंचार्ज, ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक एवं चीनी मिल के महाप्रबन्धक (गन्ना) के संयुक्त हस्ताक्षर उपरान्त सर्वे आंकड़ों को अन्तिम रूप दिया जायेगा।

उन्होंने बताया कि 30 जून, 2025 तक चलने वाले गन्ना सर्वेक्षण कार्य का समय-समय पर यथा निर्देश मुख्यालय एवं परिक्षेत्र के अधिकारियों द्वारा औचक निरीक्षण भी किया जा रहा है। सर्वेक्षण कार्य के संबंध में समस्त परिक्षेत्रीय उप गन्ना आयुक्तों एवं जिला गन्ना अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रसारित किये जा चुके हैं।

आपातकाल में किया गया पाप यथावत जारी क्यों ?

25 जून की रात को जय प्रकाश नारायण, मुरारजी देसाई, राज नारायण, चरण सिंह, अटल जी, आडवानी जी, नाना जी, देशमुख, जोशी जी और बहुत सारे लोग, बहुत सारे युवा नेता किशन पटनायक, जो नीतीश कुमार वगैरह भी, ये सब लोग गिरफ्तार हो गए। गोविंदाचार्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के थे। गोविंदाचार्य तो भूमिगत हो गए। लेकिन अन्य बहुत से छात्र नेता गिरफ्तार भारतीय जनता पार्टी जो बाद में बनी, पहले जनसंघ थी जनसंघ के महत्वपूर्ण नेता, समाजवादियों के महत्वपूर्ण नेता, सारे ही बंदी बना लिए गए। जयप्रकाश जी ने बस इतना कहा ''विनाश काले विपरीत बुद्धि''।

प्रो. रामेश्वर मिश्र पंकज

25 जून को आपातकाल की स्मृति का दिन है। आपातकाल में क्या हुआ पहले तो संक्षेप में आपको यह बता दें। वैसे तो सारा देश जानता है लेकिन नई पीढ़ी शायद नहीं जानती हो कि उस इमर्जेन्सी की पृष्ठभूमि क्या थी। जयप्रकाश नारायण जी ने भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए जो आंदोलन छेड़ा उसकी पृष्ठभूमि यह थी कि देश के नवयुवकों ने वह आंदोलन छेड़ा। सबसे पहले गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन हुआ। उसके बाद फिर देश भर के युवक इकट्ठे, हुए विशेषकर गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, आदि के और दक्षिण भारत के भी और उन्होंने जयप्रकाश जी से निवेदन किया कि आप नेतृत्व करें इस युवा आंदोलन छात्र आंदोलन की अगुवाई करें। तो जयप्रकाश जी ने स्वीकार कर लिया ये कह के कि फिर मेरा अनुशासन मानना पड़ेगा। तो सब ने स्वीकार कर लिया और उन्होंने जो आंदोलन छेड़ा वो जो लोग उस समय जीवित थे, केवल वही उसका महत्व ठीक से आंखों देखा बता सकते हैं जिन जय प्रकाश जी की उससे पहले 1960-62 के बाद केवल छोटी-छोटी सभाएं ही हो पाती थीं संपूर्ण क्रांति आंदोलन प्रारंभ होते ही उनकी सभा में लाखों की भीड़ होने लगी। लाखों लाखों लोग। हर शहर में। कहीं एक लाख, कहीं दो लाख, कहीं 5 लाख लोग उमड़ पड़ते थे। जिसका अर्थ था कि सारा देश परिवर्तन चाहता है।

इंदिरा गांधी जिस तरह से सत्ता चला रही थी और जो मनमानी कर रही थी उसके विरुद्ध सारा देश चाहता है। स्वच्छ शासन इंदिरा जी ने बिहार में गोली भी चलवाई आंदोलनकारियों पर। लेकिन दमन ..... लोगों ने और ज्यादा प्रतिरोध का मार्ग अपनाया। सारे देश में एक अलग ही वातावरण बन गया। इस बीच राज नारायण जी ने इंदिरा गांधी की चुनावी विजय को लेकर चुनाव को चैलेंज करते हुए एक याचिका दाखिल की जिसमें ये बताया कि गलत संसाधनों का उपयोग करके और गलत ढंग से प्रोपेगेंडा करके, झूठा प्रोपेगेंडा करके इंदिरा गांधी सरकारी साधनों के दुरुपयोग के द्वारा जीती हैं और प्रमाणों के द्वारा उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया। तो माननीय उच्च न्यायालय ने ने उनकी चुनाव की विजय को रद्द घोषित कर दिया कि ये अवैध साधनों से विजय हुई है इसलिए ये इनकी जीत नहीं मानी जाएगी। वो प्रधानमंत्री बन गई थी इस विजय के द्वारा। तो इससे हड़कंप मच गया और इंदिरा गांधी को बहुत क्रोध आया तो उन्होंने जुडिशरी को भी सबक सिखाने की सोची और विपक्षी नेताओं को भी और उन्होंने देश में अपने लोगों से सलाह करके इमरजेंसी घोषित कर दी।

25 जून की रात को जय प्रकाश नारायण, मुरारजी देसाई, राज नारायण, चरण सिंह, अटल जी, आडवानी जी, नाना जी, देशमुख, जोशी जी और बहुत सारे लोग, बहुत सारे युवा नेता किशन पटनायक, जो नीतीश कुमार वगैरह भी, ये सब लोग गिरफ्तार हो गए। गोविंदाचार्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के थे। गोविंदाचार्य तो भूमिगत हो गए। लेकिन अन्य बहुत से छात्र नेता गिरफ्तार भारतीय जनता पार्टी जो बाद में बनी, पहले जनसंघ थी जनसंघ के महत्वपूर्ण नेता, समाजवादियों के महत्वपूर्ण नेता, सारे ही बंदी बना लिए गए। जयप्रकाश जी ने बस इतना कहा ''विनाश काले विपरीत बुद्धि''। और जो पुलिस दल उन्हें लेने आया था, उसके साथ सहज ही चल दिए। उनकी बात बाद में अंह्लातः सही निकली पर अंह्लातः तो वह पाप आज तक जारी है। सभी गेर कांग्रेसी नेता जेल में डाल दिए गए छात्र नेता डाल जेल में डाल दिए गए और कुछ पत्रकार जो संपूर्ण क्रांति आंदोलन का खुलकर समर्थन कर रहे थे, जिनमें से एक मैं भी था, उनको भी जेल में डाल दिया गया और कुछ के विरुद्ध तैयारी की जाने लगी क्योंकि प्रमाण नहीं थे सिवाय इसके कि उन्होंने भाषण दिया और लेख लिखा। तो ये तो कोई प्रमाण नहीं था तो उनके विरुद्ध कुछ घेरने की तैयारी होने लगी और ज्यादातर पत्रकारों को उनके मालिकों पर दबाव डाल के उनको उनकी नौकरी से अलग कर दिया गया जिनमें से स्वयं मेरी भी जो पत्रकारिता की नौकरी थी वो समाप्त कर दी गई। कहा गया कि अब आप की सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। जहां चाहे वहां जाइए। ऐसे बहुत से लोग हो गए। उनमें से जिन्होंने और सक्रियता दिखाई उनको तो जेल में डाल दिया गया और शेष की नौकरी समाप्त कर दी गई। बहुत सारे लोग जैसे डॉक्टर रघुवंश थे जिनके दोनों हाथ काम नहीं करते थे वो पैर से लिखते थे वैसे बहुत बड़े विद्वान थे प्रयागराज के एक लेखक थे उनको भी कह दिया गया कि यह भी कुछ नारा लगा रहे थे और कुछ गलत काम कर रहे थे जो कि वो कर ही नहीं सकते थे सिवाय लिखने पढ़ने के उनको भी जेल में डाल दिया। जगह जगह जो कांग्रेस के विरोधी लोग थे उनको पुलिस के द्वारा सताया जाने लगा। कहीं किसी का घर गिरा दिया गया। यूं ही बिना किसी नोटिस के अथवा बहुत शॉर्ट नोटिस के और कई जगह तो अचानक झुग्गी झोपड़ियां तोड़ी जाने लगी और फिर विरोध करने पर गोली चली। नई दिल्ली तुर्कमान गेट में गोली चली। उस समय में दिल्ली में ही विद्यमान था जब तुर्कमान गेट में गोली चली। संजय गांधी के नेतृत्व में उनकी एक शिष्या थी मुस्लिम उसकी उपस्थिति में वो सब झुग्गियां उजाड़ी गई और गोली चली। सारी दिल्ली में तहलका मच गया, सारे देश में तहलका मच गया और जो कांग्रेस के चाटुकार थे और प्रशंसक थे और

साथ ही कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों ने सम्मेलन करना शुरू किया फासिस्ट विरोधी रैली यानी जयप्रकाश नारायण को फासिस्ट कह दिया। जो कि केवल लोकतांत्रिक आंदोलन कर रहे थे शांतिपूर्वक उनको सबको फासिस्ट कह के जेल में डाल दिया गया कि ये तो देश में फासिस्ट है और जो कांग्रेस स्वयं कर रही थी वो दूसरों पर आरोप लगा दिया गया और फासिस्ट विरोधी रैली कांग्रेस के लोग कम्युनिस्टों के सहयोग से करने लगे। कम्युनिस्ट उस समय शबाब पर थे, जवानी पर थे, जोश पर थे, सोवियत संघ से नेता आने लगे। हर शहर में सोवियत संघ का कोई ना कोई प्रतिनिधि आता, उसका स्वागत होता और वहां के मुख्यमंत्री मंत्री आदि उनके स्वागत में आते। फिर बहुत बड़ा सम्मेलन करने की कोशिश होती लेकिन अक्सर वो सम्मेलन विफल हो जाते। कई जगह छात्र नेताओं ने, युवा लोगों ने अपने मन से भी काले झंडे दिखाए। तो उनको बहुत बुरी तरह मारा गया। स्वयं मेरा एक शिष्य था रामायण पटेल। उसने सोवियत उपराजदूत को रीवा में प+द्यधर पार्क में जब उनकी सभा थी तो काला झंडा दिखाया बड़ी होशियारी से क्योंकि पुलिस जबरदस्त चैकसी करती थी। उसको पकड़ लिया गया वो। बहुत ही दुबला पतला तेजतर्रार लड़का था। उसकी बहुत बुरी तरह पिटाई की गई। यहां तक कि उसके एक दो शरीर के अंग काफी कमजोर हो गए। उसको बहुत मारा गया। बाद में उपचार से ठीक हुआ। लेकिन बहुत मारा गया। ऐसे ही लेकिन देश भर में जगह-जगह आंदोलन होने लगे। कुछ हमारे भी अनुयायी बहुत से युवकों ने, जो वैसे विद्यार्थी ही थे पढ़ रहे थे, लेकिन वो वास्तव में किसी राजनीतिक दल में सक्रिय भी नहीं थे, ऐसे बहुत से लोग अचानक सक्रिय हो गए। हमारे अपने महाविद्यालय के छात्र जो अब वृद्ध भी हो गए हैं, उन्होंने कई कहीं कलेक्टेज्ट का झंडा उतार के वहां काला झंडा लगाया, कहीं कमिश्नरी ऑफिस का झंडा उतार कर काला झंडा फहराया। देश भर में ये होने लगा और क्योंकि उसमें ज्यादातर अच्छे मेधावी छात्र काम कर रहे थे, मुख्य लोग तो जेल चले गए थे, तो उन पर सामान्यत पुलिस को शंका भी नहीं जाती थी। पुलिस बहुत परेशान थी।

ऐसा भय फैला दिया गया कि सामान्यत लोग कानाफूसी में में भी कांग्रेस का विरोध करने से बचते थे लेकिन अंत में तो लोग तो लोग ही है वो भी भारत के लोग, आपस की बातचीत को बहुत महत्व देते हैं। तो चारों तरफ खूब जोर से किस्से फैल आपातकाल लगने के कारण प्रेस पर प्रतिबद्धता थी तो यह हुआ कि जितना हो रहा था उससे कई गुनी अधिक कहानियां फैलने लगी कि वहां घर ढहा दिया। अगर चार घर ठहे तो 400 घर ठहने की बात फैली चार लोग मरे तो 440 लोग मर गए यह फैल गया। इंदिरा गांधी के प्रति घृणा फैलने लगी। कांग्रेस के प्रति विरोध फैलने लगा। भय भी फैला। आतंक फैल गया। अखबार सब झुक गए। मध्य प्रदेश प्रदेश में केवल दो अखबारों ने पहले दिन में संपादकीय छोड़ा एक नई दुनिया इन्दौर दूसरा बांधवीय समाचार, रीवा। इसके संपादकीय पेज मैं ही देखता था तो हमने काला छोड़ दिया। अगले दिन अखबार के मालिक की ओर से संपादक ने संदेश दिया कि आपने तो संपादकीय पेज काला छोड़ दिया, बहुत गलत किया। अब आपकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। ऐसे ही और जगह हुआ होगा। नई दुनिया में तो किसी को नहीं निकाला गया क्योंकि वहां नरेंद्र तिवारी जी थे वरिष्ठ कांग्रेसी थे लेकिन वो बहुत ही दमदार आदमी थे, बहादुर। तो उन्होंने किसी को नहीं निकाला श्री राहुल बालपुते संपादक थे और मालिकों में से ही अभय छपलानी उनके सहयोगी थे और राजेंद्र माथुर भी वहां काम करते थे। किसी को नहीं निकाला। सबको रहने दिया। यथावत। लेकिन बाकी अखबारों में प्रायः जो अच्छे पत्रकार थे उनको निकाल दिया गया। दिल्ली में, मुंबई में, कोलकाता में, और जबलपुर, रीवा, ग्वालियर, इन्दौर, पटना, प्रयागराज, कानपुर, काशी, सब जगह दमन हुआ। जयपुर में, जोधपुर में, जैसलमेर में, बीकानेर में, सभी जगह दमन हुआ। महाराष्ट्र में, गुजरात में, हरियाणा में, दिल्ली में। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार में तो भयंकर दमन हुआ क्योंकि ये मुख्य केंद्रीय भूमि थे आंदोलन के। तो ऐसा अत्याचार हुआ। और बिना किसी प्रमाण के बिना किसी व्यवस्थित चार्जशीट के अनेक लोगों को जेल में डाल दिया गया और लोगों के घर ढहाए जाने लगे। पुलिस के द्वारा आतंकित किया जाने लगा हमारे भी परिवार के और भी परिवार के लोगों को पुलिस बार-बार आतंकित करने लगी। नेताओं के इशारे पे। लेकिन इसके साथ पुलिस के भीतर यह भाव भी आने लगा कि हमको बेकार नागरिकों से उलझाया जा रहा है तो कई जगह पुलिस नरमी भी बरतती थी। कई बार पुलिस जिनके खिलाफ वारंट भी हो, उन्हें देख भी लेती थी तो गिरफ्तार नहीं करती थी। सभी प्रकार के लोग थे पुलिस में भी। ऐसे बहुत लोग थे जिनको लगता था कि अपनी गद्दी के लिए इतना अत्याचार। देश के अपने ही जैसे नेताओं के विरुद्ध कांग्रेस ये सब करवा रही है। दोनों बात थी। खैर मेरी स्थिति तो ये थी कि दिल्ली में तो मुझे काम मिला नहीं। हालांकि मैं दिल्ली में रहा। लेकिन हमारे जितने परिचित थे उसमें से रघुवीर सहायजी 'दिनमान' के संपादक थे। बहुत डरे हुए थे, कांप रहे थे और उन्होंने कहा कि अब तो मेरी नौकरी चली जाएगी। तो मुझे संजय गांधी की आज्ञा माननी ही पड़ेगी और संजय गांधी के जो पांच सूत्र थे उनके आधार पर उन्होंने 'दिनमान' जैसी अत्यंत प्रबुद्ध राजनैतिक पत्रिका का एक एक एक विशेष अंक निकाल दिया जो कि बौद्धिक समर्पण की पराकाष्ठा थी। श्रीकांत वर्मा कवि थे, लेखक थे, लेकिन उससे ज्यादा वो कांग्रेस के नेता थे और वो स्वयं रघुवीर सहाय को आए दिन धमकाते कि मैं मैडम को जाकर आपकी शिकायत करता हूं, मैं ये करता हूँ, वो करता हूँ। तो इस प्रकार वो कांग्रेस के एक लंपट किस्म के और लफंगे किस्म के कार्यकर्ता की भूमिका निभाने लगे बजाय कवि और लेखक और पत्रकार के बाकी तो मनोहर श्याम जोशी जैसे लोग थे वो कम्युनिस्ट ही थे तो वो तो कांग्रेस के साथ ही थे। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना सोशलिस्ट थे लेकिन उस समय दब गए तो इस प्रकार दिल्ली में तो निर्मल वर्मा के सिवाय कोई भी बड़ा लेखक पत्रकार ऐसा नहीं रहा जिसने खुलकर विरोध का साहस किया हो। जैनेंद्र जी ने किया लेकिन उनका तो एक दार्शनिक वाला पक्ष था, अधिकांश शांत रहते थे। निर्मल वर्मा खुलकर विरोध में थे असयजी विदेश चले गए कोई भी बड़ा लेखक बड़ा पत्रकार इंदिरा गांधी के विरुद्ध खड़े होने का साहस नहीं कर पाया और बहुत से लोग बढ़चकर इंदिरा गांधी की चाटुकारिता प्रशंसा, चापलूसी करते हुए सब तरह से निकृष्ट भूमिका निभाने लगे। जयप्रकाश जी उनको एक बार आपातकाल लगने के पहले ही हरियाणा में एक पहलवान किस्म के आदमी ने कसकर ऐसे दबाया था चपेट के छाती से कि उनकी छाती की पसलियां दरक गई थी जिनके कारण उनका हृदय कमजोर हो गया था, उसका उपचार अंत तक होता रहा। डायलिसिस भी होता रहा। किडनी भी कमजोर हो गई और अंत में उसी डायलिसिस की बीमारी के दौरान आपातकाल समाप्त होने के कुछ ही महीनों बाद जयप्रकाश जी का देहांत भी हो गया। इंग्लैंड, फ्रांस, हित पश्चिमी यूरोप और अमेरिका के दबाव से और भारत में आनंदमयी मां तथा अन्य संतों के दबाव से इंदिरा गांधी को आपातकाल समाप्ति की घोषणा चुनाव करने की घोषणा करनी पड़ी। साधारण आदमी तो डरा हुआ था कि कौन हिम्मत करेगा इंदिरा गांधी के विरोध की। लेकिन जनता में भीतर जो भाव सुलग रहे थे, उसको जयप्रकाश नारायण ने तथा संतों ने देख लिया था। मैं आचार्य श्री राम शर्मा जी के पास शांति कुंज में था हरिद्वार में। तो हमने कहा कि क्या होगा? हमको तो नहीं लगता कि कोई खड़ा हो पाएगा या खड़ा होगा तो जीत पाएगा? तो उन्होंने कहा- ''नहीं बेटे, सारे देश में आग लगी हुई है इंदिरा गांधी की कांग्रेस का सफाया हो जाएगा।''

तो जो श्रेष्ठ लोग थे, बड़े लोग थे प्रतिभाशाली लोग थे, समाज की धड़कन का जिनको अंदाज था उनको सबको लगा कि अब जनता जवाब देगी और यही हुआ। जैसे ही चुनाव घोषित हुआ, जगह जगह जनता स्वयं उमड़ कर जो विरोधी दल के लोग थे उनको सहयोग देने लगी। जय प्रकाश जी ने दबाव डाल के सभी दलों का विलय करवाया और जनता पार्टी नाम की एक नई पार्टी बनी। इसमें सारे ही दल थे। जनसंघ भी था, सोशलिस्ट भी था, लोकदल भी था जनता पार्टी के सब प्रतिनिधि बनाए गए। उनके प्रत्याशी बनाए गए जनता प्रत्याशी और जनता प्रत्याशी के पक्ष में सचमुच जनता जगह खड़ी जगह खड़ी हुई। जैसे मैं रीवा के लोकसभा चुनाव का उस बार प्रचार संयोजक। था यमुना प्रसाद शास्त्री जी हमारे प्रिय थे तो वो हमको हरिद्वार से आचार्य श्री राम शर्मा जी के यहां जहां मैं साधना के लिए था, आपातकाल में मैं वही रहने लगा था क्योंकि और कहीं कोई ठिकाना नहीं था तो मुझे वहां से बुला के ले गए कि आप चलिए। क्योंकि आप रीवा में बहुत दिन रहे हैं तो जानते हैं तो मुझे चुनाव प्रचार का प्रभारी बनाया गया तब मैंने देखा कि जनता अपनी ओर से धन दे रही है जिसकी जो हैसियत है कोई 1 रुपया कोई 2 रुपया कोई हजार भी, कोई 2000 भी, साधनों की कमी नहीं लोग साइकिल दे रहे हैं। उस समय साइकिल भी बड़ा साधन थी जो कार्यकर्ता प्रचार के लिए जा रहे हैं तो उनको आगे से लोग कहते थे हमारे घर में दो साइकिल है एक साइकिल आप चुनाव के समय तक रख लीजिए। कुछ लोगों ने मोटरसाइकिल दी कार दिया। ऐसे सारे देश में हुआ। जनता ने स्वयं वो चुनाव लड़ा। परिणाम यह हुआ कि महाराजा रीवा जो रीवा राज्य में निर्विवाद रूप से लोकप्रिय व्यक्ति थे और थे भी बहुत अच्छे आदमी लेकिन क्योंकि वो कांग्रेस के समर्थन से खड़े हुए थे तो महाराजा रीवा जिनके बारे में कोई कल्पना नहीं कर सकता कि ये पराजित किए जा सकते हैं वो हार गए। यमुना प्रसाद शास्त्री जैसे अत्यंत साधारण आर्थिक स्थिति के लगभग गरीब परिवार के एक नेता से महाराजा रीवा हार गए। ये जनता में भावना आ गई ये। अलग बात है कि बाद में जब जनता पार्टी आपस में लड़ी और 18 महीने बाद ही फिर से चुनाव हुआ तो महाराजा रीवा जीत गए देश भर में कांग्रेस जीत गई क्योंकि लोगों को लगा कि ये तो बंदरों की तरह आपस में लड़ते हैं और शासन करना जानते ही नहीं। आपस में लड़ते हैं कुत्ते बिल्लियों की तरह और इनको शासन करना नहीं आता तो लोगों ने फिर से कांग्रेस को वापस ला दिया। लेकिन पहली बार 77 में जो चुनाव हुआ उसमें जनता ने कांग्रेस का उत्तर भारत में सफाया कर दिया। तो ये तो हुआ। आपातकाल में जितना दमन संभव था लोकतंत्र के परिवेश वाले देश में उतना अधिकतम दमन कांग्रेस ने किया। हालांकि अगर सोवियत संघ और चीन से तुलना करें अथवा यूरोप के अन्य देशों में जैसा आपातकाल लगने पर बर्बर दमन होता है, कठोरता होती है, उसकी तुलना में तो कुछ नहीं था भारत का दमन क्योंकि हमने यूरोप का इतिहास पढ़ा है, हमें पता है यूरोप में विरोधियों को बहुत ही कठोरता से कुचला जाता है। देश का वातावरण ऐसा था, भारत का वातावरण ऐसा है विशेषकर हिंदू समाज का कि जो कोई ज्यादा अत्याचार करे उसके विरुद्ध लोग हो जाते हैं। इंदिरा गांधी को यह पता था तो उन्होंने छिपछिप कर जो नीचता हो सकती है, जो कुटिलता हो सकती है, जो दमन हो सकता है, जो अत्याचार हो सकता है वह किया। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि चाहे जिसको गोली मरवा दे, चाहे जिसको मार दे। ऐसा नहीं था। संभाल के। लेकिन योजना चल रही थी। अगर चार छ साल, और रह जाते बाहर का दबाव नहीं पड़ता तो इंदिरा गांधी से ज्यादा उनके जो चाटुकार सिपाहसालार थे वो दमन पर उतारू थे और वो चाहते थे कि सबको निपटा दिया जाए। तो तैयारी कांग्रेसियों की तो बहुत अधिक थी। लेकिन ना तो प्रशासन तंत्र में सब के सब उनके समर्थक थे, ना पुलिस में सब मन से उनके समर्थक थे, ना जुडिशरी में सब उनके मन से समर्थक थे, और देश का वातावरण तो ऐसे सब अत्याचारों के विरुद्ध ही है। तो इसलिए जब यूरोप का दबाव पड़ा पश्चिम यूरोप का और संयुक्त राज्य अमेरिका का तो इंदिरा गांधी को चुनाव की घोषणा करनी पड़ी जनवरी 1977 में चुनाव सम्पन्न हुए। दिसंबर के अंत में ही घोषणा हो गई थी। उसका परिणाम यह हुआ कि जनता खुलकर आ गई जनता ने अपने मनोभाव व्यक्त किए खुलकर। 1977 का चुनाव वस्तुतः जनता ने लड़ा ये मैंने अपनी आंखों से देखा है। उसमें पार्टियां तब तक संगठित ही नहीं हो पाई थी। बस मिली ही थी जयप्रकाश नारायण के दबाव से ज्यादातर नेता जो जेले में रहे 18 महीने तो उनका घर ही अस्तव्यस्त हो गया था। किसी के पास साधन नहीं थे, कुछ अपवाद नेताओं को छोड़कर। कुछ ही थे जिनके पास बहुत धन है। शेष विरोधी नेताओं के पास अधिक साधन भी नहीं थे। तो बहुत ही कठिन परिस्थिति में लोग लड़े। जार्ज फर्नांडिस पर एक आरोप लगा दिया गया डायनामाइट कांड का केस जो कभी सिद्ध नहीं हो पाया कह दिया गया कि ये षड्यंत्र से इंदिरा गांधी की सत्ता को उलटना चाहते हैं। स्वयं जय प्रकाश नारायण पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया कि ये स्थापित सत्ता को समाप्त करना चाहते हैं जबकि उनका तो कुछ भी नहीं था। वो तो केवल आंदोलन कर रहे थे और जिसने स्वयं सत्ता का दुरुपयोग किया इंदिरा गांधी वो उस समय नायिका बनी हुई थी सोवियत संघ और कम्युनिस्टों के सहयोग से। तो एक प्रकार से बड़ा काला दौर था। बहुत ही अंधकारमय दौर था। लेकिन अगर आप यूरोप का और विशेषकर सोवियत संघ और चीन का, या यूरोप का भी चाहे वो जर्मनी हो, चाहे फ्रांस हो, चाहे इंग्लैंड हो जब वहां इस तरह से आपातकाल आता है तो बहुत कठोरता की जाती है बहुत कठोरता। उसकी तुलना में भारत में कम ही कठोरता हुई और सोवियत संघ जैसी क्रूरता तो यहां संभव ही नहीं है। क्योंकि यहां के किसान और यहां के नागरिक बहुत ही जागरूक है और वो वीर भी है नेताओं से अधिक वीर। इसलिए वैसा दमन तो संभव नहीं हुआ लेकिन जितना संभव था देश की परिस्थिति में उतना दमन कांग्रेस ने किया और जिस लोकतंत्र की अभिव्यक्ति की आजादी की बात राहुल गांधी और कांग्रेसी करते हैं, असल में भारत की जनता अगर वस्तुत सजग हो तो तो क्या कहें, पता नहीं यूरोप हो तो इनके मुंह पर थूक दें लोग और जूता मारे और टमाटर मारे। कि तुमने तो सभी लोकतांत्रिक अधिकारों को कुचल डाला था। भीषण दमन करने वाली कोई पार्टी है तो कांग्रेस है। सारा दमन कांग्रेस ने किया। लोकतंत्र को एकदम कुचल डाला। जितना अधिक लोकतांत्रिक अधिकारों का दमन संभव है उतना कांग्रेस ने किया। कांग्रेस का रिकॉर्ड है कि उसने लोगों की आवाज दबाई। विश्वविद्यालयों में झूठी पढ़ाई कराई। 'मैनिटीज में कम्युनिस्टों के सहयोग से झूठा इतिहास लिखवाया। इंदिरा गांधी ने तो एक कैप्सूल भी तैयार करवाया उसको गड़वा दिया कि ये सदा के लिए गड़ा रहेगा कि यही भारत का इतिहास है। उसमें अपनी चाटुकारिता लिखवाई लेकिन अंत में वो कुछ नहीं चला तो भारत की यह विशेषता भी है कि यहां लोग उतने खून खराबा के लिए तो नहीं निकलते लेकिन शांति से धैर्य से मन ही मन वो सत्य और असत्य का निर्णय करते रहते हैं और मौके पर अवसर आते ही वो सत्य के पक्ष में और असत्य के विरुद्ध खड़े होते हैं। इसके लिए भारत के लोगों की विशेषकर हिंदू समाज की प्रशंसा करनी होगी स्तुति करनी होगी कि वो अंत में सत्य के पक्ष में ही खड़ा होता है राजनीतिक दलों का यह हाल है कि वस्तुत जब चुनाव जीत गए उस समय जो नेताओं का आचरण था उसकी याद करिए आप तो हंसी आती है। कोई कहता था कि मैं हनुमान चालीसा पढ़ता था जेल में इसलिए छूट गया। कोई कहता था गायत्री मंत्र पढ़ता था इसलिए मेरी रक्षा हुई। भारत की जनता इतनी सजग है और उसने ये वातावरण बनाया, उस जनता के प्रति हम कृतज्ञ हैं, ऐसी भाषा 1977 में किसी भी नेता को बोलते हमने नहीं सुना। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि भाई, जिस जनता ने इनको जिताया है, उसके प्रति साधुवाद तो दे नहीं रहे उसको। कहना कि आप हमारे ऊपर आशीर्वाद बनाए रखिए, कृपा बनाए रखिए, ऐसी स्वाभाविक भाषा कोई बोल ही नहीं रहा था। मैंने ये किया, मैंने वो किया। मैंने महामृत्युंजय मंत्र पाठ किया। मैंने हनुमान चालीसा पढ़ा। मैंने सत्यनारायण की कथा का संकल्प लिया था। मैंने गायत्री मंत्र पढ़ा था। पढ़ा था या नहीं पढ़ा था क्योंकि ये कोई साधक तो थे नहीं। सब रजोगुणी लोग थे। नेता तो रजोगुण प्रधान ही होते है। किसी की तैयारी नहीं थी। आपातकाल में जो वास्तविक समस्या सामने आई कि सिवाय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के और कोई भी संगठन सक्षम ही नहीं था कि विरोध कर पाता। अगर इंदिरा गांधी 10 या 20 साल आपातकाल जारी रखती तो वो अंग्रेजों ने जैसा दमन किया उससे अधिक दमन कर देती और कुछ नहीं होता क्योंकि संगठन के स्तर पर कोई तैयारी नहीं थी। समाज में अवश्य चेतना थी। जैसे क्रांतिकारी लोग अंग्रेजों के समय तैयार हुए अगर कुछ समय तक आपातकाल रहा आता तो नए लड़के लड़कियां जो अराजनैतिक है, राजनीति में नहीं है वो निश्चित निकलते और वो फिर मारकाट भी करते इनको खत्म कर देते कांग्रेसियों को। लेकिन संगठित राजनीतिक दलों में ऐसी कोई भी तैयारी नहीं थी। यहां तक कि सिवाय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाकी के संगठनों में तो सहायता को भी तैयारी नहीं थी। व्यक्तिगत मैत्री या रिशेदारी के द्वारा लोगों ने खोज खबर ली। अगर किसी परिवार में कष्ट है, समस्या है रोग है हारी-बीमारी है, तो रिश्तेदारों ने, नातेदारों ने, मित्रों ने कुछ मदद की हो तो की लेकिन एक राजनीतिक संगठन के रूप में बहुत मदद करते हो एक दूसरे को, ये समाजवादियों तथा अन्य राजनीतिक दलों में बिल्कुल नहीं दिखा। केवल केवल जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में यह बात दिखी। लेकिन साथ ही क्योंकि ये लोग उतने ज्यादा लड़ाका नहीं थे तो बहुत सारे लोग टूट भी गए बहुत से लोगों ने माफी भी मांगी कि चलो माफी मांग ले और बाहर जाए। लेकिन सबसे ज्यादा व्यवस्थित विरोध अगर किसी ने किया तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकताओं ने ही देश भर में किया। अगर लगभग एक लाख लोग देश भर में गिरफ्तार हुए तो उसमें 50 हजार से अधिक संघ और जनसंघ के लोग थे और शेष 50 हजार में सात आठ पार्टियों के लोग थे। तो उसमें बहुत अच्छे कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए थे जो तपे तथपाए थे। वो तो झुकने का सवाल ही नहीं। वो तो जीवन भर जेल में रहने की तैयारी थी। उनकी भगवान का भजन करना, वही शाखा लगाना, वही प्रार्थना करना, सब मस्त रहते थे। लेकिन जो नए नए लोग जुड़े थे अथवा साधारण स्थिति के थे जो इसलिए जाते थे कि हम देश का गीत गाते हैं देश की याद करते हैं देश की प्रार्थना करते हैं भजन करते हैं कोई गलत काम तो करते नहीं और अराजनैतिक लोग थे उनमें से कुछ लोग टूट भी गए कि अरे हमें तो ये पता नहीं था, हम तो अच्छा काम करते थे भगवान का काम, देश का काम, ये क्या हो गया? चलो भाई, घर में एकदम अकेलापन है, अभाव है तो ऐसे भी है। जो बड़ा संगठन है उसमें सब प्रकार के लोग संख्या में अधिक होते हैं तो वीर और तेजस्वी और प्रतिरोध करने वाले संघर्ष करने वाले भी सबसे ज्यादा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ के ही लोग थे और संख्या बल अधिक होने के कारण जो लोग माफी मांग के छूटे तो उनमें हो सकता है कि इनकी संख्या भी अन्य दलों से कम नहीं हो। अन्य दल के लोगों ने भी खूब माफी मांगी। तो ये सब वातावरण उस समय देश में था। ये हो गयी चालू स्थिति की समीक्षा। एक संकट सा आया राजनैतिक संकट और चला गया राजनीतिक कारणों से लेकिन कोई बौद्धिक स्तर पर गहरे स्तर पर सांस्कृतिक स्तर पर विशेषकर बौद्धिक और विधिक स्तर पर कोई तैयारी हुई इसका कहीं कोई प्रमाण नहीं मिलता। आपातकाल लगाकर इंदिरा गांधी ने जो मूल पाप किए थे, संविधान की प्रस्तावना में भी अवैध परिवर्तन का पाप, वह तो अब तक यथावत है। उनकी ओर किसी पार्टी ने कोई कार्यवाही सोची ही नहीं।

(क्रमशः)

विवाह संस्कार के सात वचन

डॉ. आनन्द शर्मा

वर्तमान समय में जिस प्रकार विवाह जैसी पवित्र संस्था कमजोर हुई है और समाज में नए प्रकार के अपराध सामने आ रहे हैं, वह चिंतित करने वाला विषय है। हिंदू धर्म में तो विवाह को एक संस्कार माना गया है और सात जन्मों का साथ बताया गया है। जितनी स्वतंत्रता और अधिकार पति के हैं, उतने ही पत्नी के भी हैं। पत्नी को वामांगनी, अर्धांगिनी और भार्या कहा गया है। वह किसी भी मायने में पति से अधिकारों में कम नहीं है, किंतु तथाकथित नारीवादी समूहों ने और पाश्चात्य संस्कृति के अंधे अनुकरण ने भारतीय समाज में गहरी पकड़ बना ली है, जिसने विवाह जैसे पवित्र संस्कार को भी दूषित कर दिया है। विवाह विवाह न होकर जैसे सुविधा और शर्तों को पूरा करने का माध्यम बन गया है। अधिकार सभी को चाहिए कर्तव्य कोई नहीं निभाना चाहता। विवाह के जिस पक्ष पर सर्वाधिक महत्व दिया जाना चाहिए अर्थात सात फेरों की जो प्रक्रिया है उस पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए किंतु विवाह में अब अनेक प्रकार के कार्यक्रम चालू हो गए हैं, जिन्होंने विवाह को एक नाटक में परिवर्तित कर दिया हैं।

विवाह के 7 पवित्र वचनों के मंत्र और अर्थ सुंदर जीवन के लिए जरूरी है इनका पालन।

विवाह के समय पति-पत्नी अग्नि को साक्षी मानकर एक-दूसरे को सात वचन देते हैं जिनका दांपत्य जीवन में काफी महत्व होता है। आज भी यदि इनके महत्व को समझ लिया जाता है तो वैवाहिक जीवन में आने वाली कई समस्याओं से बचा जा सकता है।

विवाह समय पति द्वारा पत्नी को दिए जाने वाले 7 वचनों के महत्व को देखते हुए उन वचनों के महत्व के विषय में जानकारी इस प्रकार है।

1. तीर्थव्रतोद्यापन यज्ञकर्म मया सहैव प्रियवयं कुर्याः
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति वाक्यं प्रथमं कुमारी!।

(यहां कन्या वर से कहती है कि यदि आप कभी तीर्थयात्रा को जाओ तो मुझे भी अपने संग लेकर जाना। कोई व्रत-उपवास अथवा अन्य धर्म कार्य आप करें तो आज की भांति ही मुझे अपने वाम भाग में अवश्य स्थान दें। यदि आप इसे स्वीकार करते हैं तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्यों की पूर्णता हेतु पति के साथ पत्नी का होना अनिवार्य माना गया है। पत्नी द्वारा इस वचन के माध्यम से धार्मिक कार्यों में पत्नी की सहभागिता व महत्व को स्पष्ट किया गया है।

2. पुज्यो यथा स्वौ पितरौ ममापि तथेशभक्तो निजकर्म कुर्याः
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं द्वितीयम!!

(कन्या वर से दूसरा वचन मांगती है कि जिस प्रकार आप अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं, उसी प्रकार मेरे माता-पिता का भी सम्मान करें तथा कुटुम्ब की मयार्दा के अनुसार धमार्नुष्ठान करते हुए ईश्वर भक्त बने रहें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

यहां इस वचन के द्वारा कन्या की दूरदृष्टि का आभास होता है। उपरोक्त वचन को ध्यान में रखते हूए वर को अपने ससुराल पक्ष के साथ सदव्यवहार के लिए अवश्य विचार करना चाहिए।

3. जीवनम अवस्थात्रये पालनां कुर्यात
वामांगंयामितदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं तृतीयं!!

(तीसरे वचन में कन्या कहती है कि आप मुझे ये वचन दें कि आप जीवन की तीनों अवस्थाओं (युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था) में मेरा पालन करते रहेंगे, तो ही मैं आपके वामांग में आने को तैयार हूं।)

4. कुटुम्बसंपालनसर्वकार्य कर्तु प्रतिज्ञां यदि कातं कुर्याः
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं चतुर्थ।।

(कन्या चौथा वचन ये मांगती है कि अब तक आप घर-परिवार की चिंता से पूर्णतः मुक्त थे। अब जब कि आप विवाह बंधन में बंधने जा रहे हैं तो भविष्य में परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का दायित्व आपके कंधों पर है। यदि आप इस भार को वहन करने की प्रतिज्ञा करें तो ही मैं आपके वामांग में आ सकती हूं।)

इस वचन में कन्या वर को भविष्य में उसके उत्तरदायित्वों के प्रति ध्यान आकृष्ट करती है। इस वचन द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि पुत्र का विवाह तभी करना चाहिए, जब वो अपने पैरों पर खड़ा हो, पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करने लगे।

5. स्वसद्यकार्ये व्यहारकर्मण्ये व्यये मामापि मन्त्रयेथा
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचः पंचमत्र कन्या!!

(इस वचन में कन्या कहती जो कहती है, वो आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्व रखता है। वो कहती है कि अपने घर के कार्यों में, लेन-देन अथवा अन्य किसी हेतु खर्च करते समय यदि आप मेरी भी मंत्रणा लिया करें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

यह वचन पूरी तरह से पत्नी के अधिकारों को रेखांकित करता है। अब यदि किसी भी कार्य को करने से पूर्व पत्नी से मंत्रणा कर ली जाए तो इससे पत्नी का सम्मान तो बढ़ता ही है, साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति संतुष्टि का भी आभास होता है।

6. न मेपमानमं सविधे सखीना द्यूतं न वा दुर्व्यसनं भंजश्वेत
वामाम्गमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं च षष्ठम!!

(कन्या कहती है कि यदि मैं अपनी सखियों अथवा अन्य स्त्रियों के बीच बैठी हूं, तब आप वहां सबके सम्मुख किसी भी कारण से मेरा अपमान नहीं करेंगे। यदि आप जुआ अथवा अन्य किसी भी प्रकार के दुर्व्यसन से अपने आपको दूर रखें तो ही मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

7. परस्त्रियं मातूसमां समीक्ष्य स्नेहं सदा चेन्मयि कान्त कूर्या।
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचः सप्तमत्र कन्या!!

(अंतिम वचन के रूप में कन्या ये वर मांगती है कि आप पराई स्त्रियों को माता के समान समझेंगे और पति-पत्नी के आपसी प्रेम के मध्य अन्य किसी को भागीदार न बनाएंगे। यदि आप यह वचन मुझे दें तो ही मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

इस वचन के माध्यम से कन्या अपने भविष्य को सुरक्षित रखने का प्रयास करती है

उपरोक्त बताएं गए पवित्र सात वचन ही सुखी वैवाहिक जीवन की आधारशिला है। जिसमें पति और पत्नी दोनों का हित समाहित है। कोई किसी से श्रेष्ठ और कोई किसी का अधिकारी नहीं है, बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।यही हमारी हिंदू संस्कृति की विशेषता भी है। वर्तमान समय में इसे पुन जीवित करने की आवश्यकता है और विवाह में होने वाले बेवजह के कार्यक्रमों को तुरंत बंद करने की जरूरत है। इसी में समाज का हित समाहित है।

पर्यटन

प्रकृति, रोमांच और जैव विविधता का अद्भुत संगम है दलमा वन्यजीव अभयारण्य

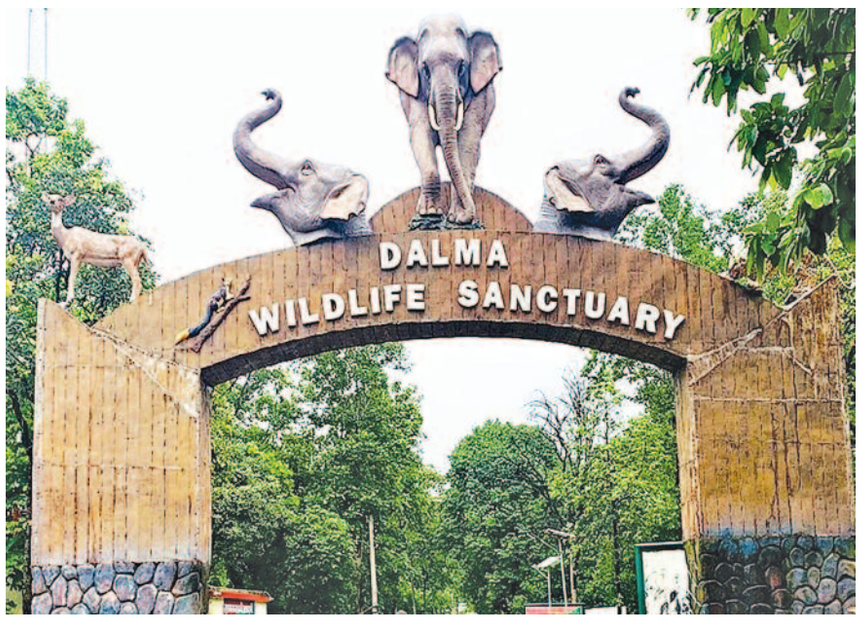

> दलमा अभयारण्य भारतीय हाथियों की महत्वपूर्ण आबादी के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा, यहाँ तेंदुआ, स्लॉथ भालू, भौंकने वाला हिरण, जंगली सूअर, चीतल, सांभर, भारतीय गौर, भारतीय पैंगोलिन, भारतीय साही, उड़ने वाली गिलहरी, भारतीय खरगोश और रीसस मकाक जैसे स्तनधारी पाए जाते हैं।

प्रीटी

झारखंड के पूर्वी सिंहभूम और सरायकेला-खरसावां जिलों में स्थित दलमा वन्यजीव अभयारण्य (ऊँ ह्'ïी रंल्लू३४१८) प्रकृति प्रेमियों, साहसिक यात्रियों और वन्यजीव उत्साही लोगों के लिए एक आदर्श गंतव्य है। यह अभयारण्य जमशेदपुर से लगभग 10-15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और 195 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह क्षेत्र दलमा पहाड़ियों में स्थित है, जिनकी ऊँचाई समुद्र तल से 915 मीटर तक है।

जैव विविधता और वन्यजीव

दलमा अभयारण्य भारतीय हाथियों की महत्वपूर्ण आबादी के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा, यहाँ तेंदुआ, स्लॉथ भालू, भौंकने वाला हिरण, जंगली सूअर, चीतल, सांभर, भारतीय गौर, भारतीय पैंगोलिन, भारतीय साही, उड़ने वाली गिलहरी, भारतीय खरगोश और रीसस मकाक जैसे स्तनधारी पाए जाते हैं। पक्षियों में मोर, भारतीय रोलर, भारतीय पिट्टा, मालाबार पाइड हॉर्नबिल, क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल, ओरिएंटल हनी बजर्ड, पीले पाँव वाला हरा कबूतर, व्हाइट-रम्प्ड शामा, ब्लैक ड्रोंगो, भारतीय पैराडाइज फ्लाईकैचर, भारतीय रॉबिन, ग्रेटर कूकल, ग्रे-हेडेड फिश ईगल और चेंजेबल हॉक-ईगल प्रमुख हैं।

सरीसृपों में भारतीय अजगर, किंग कोबरा, कॉमन क्रेट, रसेल वाइपर, भारतीय मॉनिटर लिजर्ड, कॉमन इंडियन स्किंक, कॉमन इंडियन गिरगिट और भारतीय गार्डन लिजर्ड शामिल हैं।

वनस्पति और प्राकृतिक सौंदर्य

अभयारण्य में मुख्यतः सूखी मिश्रित पर्णपाती वनस्पति पाई जाती है, जिसमें साल, महुआ, बांस, जामुन, आम, नीम, शीशम, अर्जुन, करंज, कदम और अन्य स्थानीय प्रजातियाँ शामिल हैं। दलमा पहाड़ियों की हरियाली और शांत वातावरण इसे ट्रेकिंग और प्रकृति प्रेमियों के लिए आकर्षक बनाते हैं।

प्रमुख गतिविधियाँ

ट्रेकिंग और हाइकिंग: दलमा पहाड़ियों में ट्रेकिंग के लिए कई मार्ग हैं, जो 2500 फीट तक की ऊँचाई तक जाते हैं। इन मार्गों पर चलते हुए पर्यटक दलमा टॉप और शिव मंदिर तक पहुँच सकते हैं।

पक्षी अवलोकन: यह अभयारण्य लगभग 300 प्रजातियों के पक्षियों का घर है, जो पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान है।

प्रकृति व्याख्या केंद्र (NIC): मकुलाकोचा प्रवेश द्वार के पास स्थित यह केंद्र पर्यटकों को अभयारण्य की जैव विविधता और संरक्षण प्रयासों की जानकारी प्रदान करता है।

कैसे पहुँचें

सड़क मार्ग: दलमा अभयारण्य ठऌ-33 के पास स्थित है और जमशेदपुर से लगभग 10-15 किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ तक पहुँचने के लिए निजी वाहन या टैक्सी का उपयोग किया जा सकता है।

रेल मार्ग: निकटतम रेलवे स्टेशन टाटानगर जंक्शन है, जो अभयारण्य से लगभग 20-25 किलोमीटर दूर है।

वायु मार्ग: निकटतम हवाई अड्डा बिरसा मुंडा एयरपोर्ट, रांची है, जो अभयारण्य से लगभग 140 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

यात्रा का सवो

दलमा अभयारण्य की यात्रा के लिए अक्टूबर से मार्च का समय सबसे उपयुक्त है, जब मौसम सुखद और ठंडा होता है। मानसून के दौरान (जुलाई से सितंबर) यहाँ की हरियाली और जल स्रोतों की सुंदरता बढ़ जाती है, लेकिन भारी वर्षा के कारण फिसलन और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हो सकती हैं।

यात्रा सुझाव

अभयारण्य में प्रवेश के लिए अनुमति आवश्यक हो सकती है; यात्रा से पहले स्थानीय अधिकारियों से जानकारी प्राप्त करें। अभयारण्य के अंदर फिसलन हो सकती है; उचित जूते पहनें और बच्चों पर विशेष ध्यान दें।स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण का सम्मान करें; कचरा न फैलाएँ और वन्यजीवों को परेशान न करें।

दलमा वन्यजीव अभयारण्य न केवल झारखंड का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, बल्कि यह भारत के जैव विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य का भी प्रतीक है। यदि आप प्रकृति, वन्यजीव और रोमांच का संगम अनुभव करना चाहते हैं, तो दलमा अभयारण्य की यात्रा अवश्य करें।

ब्यूटी / फैशन

घने बालों में जूं और लीख ढूंढना होगा आसान, बस इन तरीकों से करें सिर की जांच

अनन्या मिश्रा

घने-लंबे बाल देखने में काफी खूबसूरत लगते हैं। लेकिन जब इन्हीं घने और लंबे बालों में बिन बुलाए मेहमान यानी की जूं और लीखें अपना घर बना लेती हैं, तो सुकून काफूर हो जाता है। घने और लंबे बालों में इन पैरासाइट्स को ढूंढना किसी मिशन से कम नहीं होता है। लेकिन जूं और लीख के कारण लगातार होने वाली खुजली शर्मिंदगी का कारण बनती है और चिड़चिड़ापन होने लगता है। ऐसे में अगर आपके बाल भी घने हैं, तो कुछ आसान और असरदार तरीके से मिनटों में सिर की जांच करके इन पैरासाइट्स का पता लगा सकती हैं।

> *जूं और लीख के कारण लगातार होने वाली खुजली शर्मिंदगी का कारण बनती है और चिड़चिड़ापन होने लगता है। ऐसे में अगर आपके बाल भी घने हैं, तो कुछ आसान और असरदार तरीके से मिनटों में सिर की जांच करके इन पैरासाइट्स का पता लगा सकती हैं।*

ड्राई चेकिंग

सबसे पहले बालों को नॉर्मल कंघी से अच्छे से सुलझा लें। जिससे कि बाल उलझे हुए न लगें। बालों को छोटे-छोटे सेक्शन में बांट लें। घने बालों के लिए यह स्टेप जरूरी है, आप हेयर क्लिप्स का यूज करके बाकी बालों को बांध सकती हैं। अब फाइन-टूथ कॉम्ब लें और एक-एक सेक्शन में स्कैल्प से शुरू करते हुए बालों के सिरों तक कंघी करें। हर स्ट्रोक के बाद कंघी को किसी कागज या सफेद तौलिए पर झाड़ या पोंछ लें।

वेट कॉम्बिंग से निकालें जूं

सबसे पहले बालों को हल्का गीला करें और अच्छी मात्रा में कंडीशनर लगाएं। इससे बाल चिकने हो जाएंगे और कंघी करना आसान होगा। कंडीशनर लगाने से जूं हिलना-डुलना बंद हो जाएगा और इनको पकड़ना काफी आसान होता है। अब सामान्य कंघी से बालों को सुलझाकर छोटे-छोटे सेक्शन में बांट लें। इसके बाद जूं वाली कंघी से हर सेक्शन में कंघी करें और बालों के सिरे तक लाएं। इससे जूं आसानी से सिर से निकल जाएंगी।

विनेगर का इस्तेमाल

आप सफेद सिरके की मदद से भी सिर से जूं निकाल सकती है। क्योंकि इसकी गंध जूं को भगाने पर मजबूर कर देती है और कंघी में आसानी से जूं आ जाती हैं।

बालों को धोएं, इस दौरान जब बाल हल्के गीले रहें, तो इसमें विनेगर को कॉटन पैड से स्कैल्प पर अच्छे से अप्लाई करें और कुछ देर के लिए छोड़ दें। अब बालों को 2-4 सेक्शन में अलग-अलग कर लें। फिर जूं वाली कंघी से स्कैल्प से लेकर सिर तक कंघी करें। इससे जूं अपने आप कंघी में आ जाएगी।

तेल लगाकर निकालें जूं

आप ऑलिव ऑयल लगाकर जूं निकाल सकती हैं। इसके लिए रात भर के लिए स्कैल्प पर तेल लगाएं। तेल लगाने से जूं स्कैल्प छोड़ने पर मजबूर हो जाता है। ऐसे में आप कंघी करके इनको आसानी से निकास सकती हैं।

सबसे पहले ऑलिव ऑयल को हल्का गुनगुना करके स्कैल्प पर 1 मिनट तक मालिश करें। फिर शावर कैप पहनकर रातभर के लिए छोड़ दें।

फिर अगले दिन बालों को सेक्शन में डिवाइड कर लें और कंघी करें। वहीं नीचे सफेद तौलिया बिछा लें। इससे जूं नीचे बिछे तौलिए में गिर जाएंगी।

ऐसे करें बालों की देखभाल

गंदे बालों में जूं और लीख जल्दी अपना घर बना लेते हैं। इसके लिए हर रोज बालों को अल्टरनेटिव दिन में धोते रहना चाहिए। अगर सिर में ज्यादा खुजली हो रही है, तो बिना देर किए सिर की जांच करनी चाहिए।

रोजाना बालों में जूं वाली कंघी करना चाहिए। इससे आसानी से जूं निकल जाएंगे।

वहीं गंदी कंघी का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे स्कैल्प गंदा हो सकता है और जूं पैदा हो सकते हैं।

घरेलू नुस्खे

एल्युमीनियम के बर्तन में भूलकर भी नहीं गर्म करनी चाहिए ये चीजें, स्वास्थ्य को हो सकता है नुकसान

अनन्या मिश्रा

हम सभी के घरों में स्टील, लोहे और एल्युमीनियम के बर्तन मिल जाते हैं। हर बर्तन की अपनी अलग खासियत होती है। वहीं हर मेटल में बने खाने का स्वाद अलग-अलग होता है। जहां पर कुछ बर्तन बल्कि होते हैं, तो कुछ बर्तन भारी होते हैं। हल्के बर्तनों में एल्युमीनियम के भी बर्तन आते हैं, जिनकी खासियत यह होती है कि यह जल्दी गर्म होते हैं और बजट में भी आते हैं। लेकिन कुछ खाद्य पदार्थ ऐसे होते हैं, जिनको इन बर्तनों में गर्म करना गलत माना जाता है। कई महिलाएं एल्युमीनियम के बर्तन में चटनी बनाने से लेकर दूध तक गर्म करती हैं। जोकि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि एल्युमीनियम के बर्तनों में कौन-सी चीजें गर्म नहीं करनी चाहिए और क्यों।

दूध न गर्म करें

दरअसल, एल्युमीनियम के बर्तन हल्के और जल्दी गर्म हो जाते हैं। हालांकि कई लोग दूध उबालने के लिए इन बर्तनों का उपयोग करते हैं। लेकिन इन बर्तनों में दूध नहीं गर्म करना चाहिए। क्योंकि दूध में लैक्टिक एसिड होता है, जोकि एल्युमीनियम के साथ रिएक्ट कर सकता है। जिससे दूध का स्वाद बिगड़ सकता है और दूध से मेटल की गंध भी आ सकती है। वहीं इस बर्तन में दूध उबालने से बर्तन की सतह पर दाग पड़ सकते हैं या फिर यह धीरे-धीरे घिस सकता है।

क्या करें

आप स्टेनलेस स्टील या बोरोसिलिकेट ग्लास के बर्तन में दूध गर्म कर सकते हैं।

> *हल्के बर्तनों में एल्युमीनियम के भी बर्तन आते हैं, जिनकी खासियत यह होती है कि यह जल्दी गर्म होते हैं और बजट में भी आते हैं। लेकिन कुछ खाद्य पदार्थ ऐसे होते हैं, जिनको इन बर्तनों में गर्म करना गलत माना जाता है।*

इसके अलावा आप इंडक्शन या इलेक्ट्रिकल केटल का इस्तेमाल करते हैं, तो इसमें भी सेफ कोटिंग या स्टील वाले बर्तन का इस्तेमाल करना चाहिए।

नमक या नमक वाला पानी

नमक सोडियम क्लोराइड मौजूद होता है। जोकि एल्युमीनियम के साथ मिलकर एक रासायनिक प्रक्रिया शुरू करता है। इससे धीरे-धीरे बर्तन की सतह खराब हो सकती है।

अगर आप नमकीन खाना एल्युमीनियम बर्तन में पकाते हैं, तो इसको धोने में देर नहीं करनी चाहिए। क्योंकि धोने में देर करने से बर्तन की सतह पर काले या सफेद धब्बे आ सकते हैं। इससे एल्युमीनियम के पार्टिकल्स भी आपके खाने में मिल सकते हैं, जोकि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

क्या करें

खाने या नमक वाले पानी के लिए स्टेनलेस स्टील, नॉन स्टिक या कास्ट आयरन बर्तनों का इस्तेमाल करना चाहिए। अगर आपने एल्युमीनियम बर्तन में नमक वाला कुछ पकाया है, तो उसको फौरन धोकर सुखा लेना चाहिए। एल्युमीनियम बर्तनों को सूखा और साफ रखना चाहिए। जिससे कि जंग लगने की संभावना न हो।

रेडीमेड सॉस या पैकेज्ड फूड

कई बार हम जल्दी खाना बनाने के लिए फ्रोजन फूड को पका लेते हैं या फिर किसी तरह के सॉस को एल्युमीनियम में गर्म करते हैं। इन खाद्य पदार्थों में एसिडिटी रेगुलेटर, प्रिजरवेटिव्स और अन्य केमिकल्स होते हैं। जोकि गर्म एल्युमीनियम से प्रतिक्रिया कर सकते हैं। इससे खाने का स्वाद बिगड़ सकता है। इस तरह का खाना बार-बार एल्युमीनियम में गर्म करने से बॉडी में एल्युमिनियम पार्टिकल्स प्रवेश करते हैं। जोकि सेहत के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

क्या करें

बता दें कि पैकेज्ड फूड या सॉस को गर्म करने के लिए सेरामिक, ग्लास या स्टेनलेस स्टील के बर्तनों का इस्तेमाल करें। वहीं माइक्रोवेव में गर्म कर रहे हैं, तो इढअ-१ी माइक्रोवेव सेफ कंटेनर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

सरकार का संकल्प, सड़कों का हो कायाकल्प

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। विधानसभा क्षेत्र में वर्ष 2024-25 में राज्य कृषि उत्पादन मंडी परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा स्वीकृत ग्राम पतला से ग्राम सुहाना तक की सड़क निर्माण परियोजना का उद्घाटन माननीय विधायक डॉ. मंजू शिवाच द्वारा फीता काटकर किया गया। यह सड़क परियोजना लगभग 2.20 किलोमीटर लंबी है, जिसकी कुल लागत 86.02 लाख है। इस विकास कार्य से ग्रामीण क्षेत्र की कनेक्टिविटी बेहतर होगी और क्षेत्रीय लोगों को आवागमन में अत्यंत सुविधा प्राप्त होगी।

इसके साथ ही ग्राम सुहाना में विधायक निधि से स्वीकृत मतीम के घर से इसरार के मकान तक सी.सी. रोड एवं नाली निर्माण कार्य का भी शुभारंभ विधायक द्वारा किया गया। इस कार्य की लागत 3.51 लाख है।

डॉ. मंजू शिवाच ने इस अवसर पर कहा,विकास ही हमारी प्राथमिकता है। क्षेत्र के प्रत्येक गांव, हर गली को सुदृढ़ आधारभूत ढांचे से जोड़ने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। यह केवल सड़क नहीं, विकास की दिशा में विश्वास का मार्ग है। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, क्षेत्रीय गणमान्य नागरिक एवं ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

विधायक ने फीता काटकर किया सड़कों का उद्घाटन

मोदीनगर। विधानसभा क्षेत्र मे निवाड़ी रोड, केशव कुंज, गली संख्या-2 में विधायक निधि से स्वीकृत इंटरलॉकिंग एवं नाली निर्माण कार्य मुकेश शर्मा के मकान से अनिल फौजी के मकान तक का उद्घाटन विधायक ने फीता काटकर किया। इस कार्य पर कुल 5.70 लाख की लागत स्वीकृत की गई है साथ ही ग्राम भोजपुर में मैन रोड से चामुंडा मंदिर तक इंटरलॉकिंग व नाली निर्माण कार्य का उद्घाटन भी विधायक द्वारा किया गया। इस निर्माण कार्य की कुल लंबाई 115 मीटर है जिसकी अनुमानित लागत 12.98 लाख है विधायक डॉ. मंजू शिवाच जी ने अपने संबोधन में कहा कि ह्लजनता की सुविधा और क्षेत्र का सतत विकास ही हमारी प्राथमिकता है, और यह कार्य उसी दिशा में एक और सार्थक प्रयास है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय जनप्रतिनिधि, निवासी एवं संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।...

कावड़ यात्रा को शांतिपूर्ण संपन्न करने के लिए पुलिस प्रशासन ने बुलाई बैठक

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। कावड़ यात्रा को शांतिपूर्ण संपन्न करने के लिए पुलिस प्रशासन ने कोतवाली में कावड़ सेवा शिविरों के संचालको एवं एसपीओ की एक बैठक बुलाई। जिसमें अधिकारियों ने सभी से सहयोग करने की अपील की। बैठक में एसीपी ज्ञान प्रकाश राय तथा कोतवाली प्रभारी निरीक्षक नरेश कुमार शर्मा ने लोगों से सुझाव लिए। कावड़ सेवा शिविर लगाने के लिए एक ही जगह अनुमति मिलने बिजली आदि समस्याओं से अवगत कराया । अधिकारियों ने सुझावो पर अमल करने का आश्वासन दिया। एसीपी ज्ञान प्रकाश राय एवं कोतवाली प्रभारी निरीक्षक नरेश कुमार शर्मा ने कावड़ सेवा शिविर संचालको से कावड़ सेवा शिविर सड़क से हटकर निर्धारित स्थान पर लगाने तथा शिविर में सेवा करने वाले श्रद्धालु जनो की पूरी जानकारी रखने आदि बातें बताने के साथ-साथ सहयोग करने की अपील की। बैठक में सभी लोगो ने कावड़ यात्रा को शांतिपूर्ण संपन्न करने के लिए अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। एसपीओ के प्रभारी विनोद गोड ने बैठक का संचालन करते हुए एसपीओ की तरफ से पूर्ण सहयोग देने का पूर्ण आश्वासन दिया। बैठक में भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ पवन सिंघल व्यापारी नेता मूलचंद गर्ग डा बबली गुर्जर अरविंद अग्रवाल सभासद संघर्ष समिति के अध्यक्ष वेद प्रकाश चौधरी सभासद प्रदीप शर्मा मोनू धामा सुबह सिंह पंकज कंसल महेश तायल जयप्रकाश शर्मा राजेंद्र कौशिक बबलू चौधरी आदि लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए।

पीड़ितों को न्याय दिलाना मेरी पहली प्राथमिकता डॉ. हिमानी

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। गोविंदपुरी स्थित छाया पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश महिला आयोग की सदस्य डॉक्टर हिमानी अग्रवाल ने अपने संबोधन में कहा कि पीड़ित व वंचित महिलाओं को न्याय दिलाना मेरी पहली प्राथमिकता है । शिक्षा, चिकित्सा व अन्य सभी क्षेत्रों से जुड़ी जो भी समस्याएं महिलाएं आज पीड़ित है उनके जल्द से जल्द निस्तारण करना योगी सरकार व महिला आयोग की पहली प्राथमिकता है । सरकार द्वारा चलाए जा रहे जिले व तहसील स्तर पर जनसुनवाई के दौरान समस्याओं का त्वरित निस्तारण किया जा रहा है । छाया स्कूल के प्रबंधक अखिलेश द्विवेदी प्रधानाचार्य डॉ अरुण त्यागी द्वारा डॉ.हिमानी का समस्त स्टाफ के साथ फूल माला व प्रतीक चिन्ह देकर जोरदार स्वागत किया गया। इस अवसर पर गाजियाबाद लोकदल महिला विग की जिला अध्यक्ष सुमन चौधरी, दीपशिखा, पिंकी, गौरव वर्मा ,के के शर्मा पारुल त्यागी, अनीता गुप्ता ,नीतू, चित्रा आदि शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद रही।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी में पौधारोपण से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। एक पेड़ मां के नाम अभियान -2 के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण करने एवं पर्यावरण के लिए जीवन शैली का अनुकरण करने के क्रम में पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय आयुध निमार्णी मुरादनगर के एन सी सी कैडेट, छात्रों एवं स्टाफ ने विद्यालय प्रांगण में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण के लिए जीवनशैली का अनुकरण करने का संदेश दिया।इस दौरान जामुन,इमली, आँवला, अमरूद, नीम,अर्जुन,सीसम, अशोक आदि विभिन्न प्रजातियों के 60 पौधे लगाये गए। विदित हो कि वन महोत्सव से पूर्व विद्यालय में सौ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है जिसे समय से पूर्ण कर लिया जाएगा।पौधरोपण के उपरांत एन सी सी ऑफिसर अनुराग गुप्ता ने सभी को उनकी देख रेख करने एवं आमजन को पौधारोपण कराने एवं पर्यावरण संरक्षण का संकल्प भी दिलाया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य मनोज कुमार ने बताया कि बसंत ऋतु के दौरान वृहद स्तर पर पौधारोपण के लिये शासन के निदेर्शों के अनुक्रम में विद्यालय प्रांगण में पर्यावरण संरक्षण के क्रम में सुरक्षित स्थानों पर पौधारोपण कर आमजन को पर्यावरण संरक्षण करके हरा भरा बनाने का संदेश देंने एवं अन्य लोगों को भी पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधारोपण करने के लिए प्रेरित करने का काम किया जा रहा है ताकि पर्यावरण को रक्षित एवं संरक्षित किया जा सके। पौधारोपण कार्यक्रम के अवसर पर पर्यावरण क्लब गाज़ियाबाद की टीम के सदस्यों,उत्कर्ष शर्मा ,परवेज, आर सी त्यागी,यश शर्मा,अर्पित वर्मा,वैभव गुप्ता आदि का सहयोग अति सराहनीय रहा। इस दौरान मोदी कॉलेज के एन सी सी अधिकारी प्रवीण जैनर एवं लेफ्टिनेंट राजीव जांगिड़ ने भी विद्यालय परिसर में दो दो पौधे लगाए तथा सभी से वसंत ऋतु के दौरान अपने अपने परिवेश में दो दो पौधे लगाने का आह्वान किया। इस दौरान वन विभाग से उपनिरीक्षक महेद्र, उप निरीक्षक संजीव कुमार व 35 यू पी वाहिनी एन सी सी मोदीनगर के अधिकारियों का विशेष योगदान रहा। पौधारोपण कार्यक्रम में विद्यालय की उपप्राचार्य श्रीमती स्वीटी जैन, यामिनी बत्रा,शिक्षक सुषमा अहलावत, रविंद्र, विकास वालिया,सुषमा त्यागी,एन सी सी ऑफि सर अनुराग गुप्ता इत्यादि एवं छात्रों का विशेष सहयोग रहा।

आईटीएस डेंटल कॉलेज द्वारा सैटेलाइट डेन्टल क्लीनिक का उद्घाटन

मुरादनगर। आई0टी0एस0 डेंटल कॉलेज, द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पीएचसी), भोजपुर में एक नवीन सैटेलाइट डेन्टल क्लीनिक का उद्घाटन किया गया। क्लीनिक का उद्घाटन मुख्य अतिथि रविन्द्र कुमार, नोडल, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) और सुचेता सिंह, ब्लॉक प्रमुख, भोजपुर, एवं सदस्य, जिला स्वास्थ्य समिति, मोदीनगर द्वारा किया गया। इस सैटेलाइट क्लीनिक की स्थापना संस्थान की कम्युनिटी आउटरीच पहल के अंतर्गत की गई है, जिसके माध्यम से भोजपुर और आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में निवारक एवं उपचारात्मक मौखिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करायी जाएंगी। क्लीनिक में मौखिक स्वास्थ्य जांच, दांतों की सफाई, फिलिंग, रूट कैनाल इत्यादि जैसी सेवाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ अधिकारी, दंत चिकित्सक, स्थानीय प्रशासन और ग्रामीण जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय लोकदल कार्यालय पर बैठक आयोजित

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। मेरठ रोड स्थित राष्ट्रीय लोकदल कार्यालय पर एक मीटिंग का आयोजन हुआ। जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री अनिल कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस मौके पर राष्ट्रीय लोकदल की जिला कमेटी के पदाधिकारियों को मनोनयन पत्र भी दिए गए । इस मौके पर उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री अनिल मंत्री कुमार ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई दी । और राष्ट्रीय लोकदल की नीतियों के बारे में बताया । अनिल कुमार ने कहा कि केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी दिन-रात अपने मंत्रालय में ईमानदारी से कार्य कर रहे हैं ।

जयंत चौधरी सभी समाज को साथ लेकर चलने का काम करते हैं । क्षेत्रीय अध्यक्ष योगेंद्र चेयरमैन ने सभी कार्यकताओं को पूरी मेहनत और निष्ठा से पार्टी के प्रचार प्रसार में जुट जाने का आवाहन किया । कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय महासचिव अरुण चौधरी भुल्लन ने किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष रामपाल चौधरी ने की । इस मौके पर अनिल कुमार मंत्री , क्षेत्रीय अध्यक्ष योगेंद्र चेयरमैन , जिलाध्यक्ष रामपाल चौधरी ,चेयरमैन अमरजीत सिंह बिड्डी, मनोज धामा चेयरमैन ,दिल नवाज खान ,इंद्रवीर भाटी सरदार इंद्रजीत सिंह टीटू , अजय पाल प्रमुख, डॉ पूनम गर्ग, हिमांशु नागर, सत्येंद्र तोमर, राम भरोसे लाल मोरिया ,रवि वाल्मीकि ,मनोज राठी, सुमन चौधरी ,रेखा चौधरी ,जगराज बालियां ,रामकुमार पवार, प्रदीप मुखिया, तुषार बंसल ,देशराज दुहाई , प्रदीप त्यागी ,मनिंदर बिल्ला, दीपू शर्मा, लोकेश कटारिया, वीर सिंह सलेमाबाद, अरुण शर्मा, सतपाल सलेमाबाद ,नरेंद्र सिंह, जयवीर नेहरा ,आलोक चौधरी ,तेजवीर दबाना, नीरज नबीपुर, रईस नेताजी ,सुशील सैनी, रणजीत सिंह तेवतिया, मनीष किलहोदा,दिनेश शर्मा, विशाल चौधरी , ललित सेन, मुन्ना खान, अभिषेक शर्मा, सरफराज, जीतेंद्र मोनू , रवि हरित , संजय सागवान , संजीव अरोड़ा , विनोद गौतम ,अमित त्यागी, योगेश कुमार, इरशाद रंगरेज , चंद्रपाल डायरेक्टर, मनवीर बंसल आदि लोग उपस्थित रहे ।

फेस-टू-फेस फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का हुआ आयोजन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, दिल्ली-एनसीआर कैंपस, गाज़ियाबाद के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग द्वारा पीटर एफ. ड्रकर हॉल में एआईसीटीई ट्रेनिंग एंड लर्निंग (अटल) अकादमी के फेस-टू-फेस फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं अनुप्रयोग (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड एप्लीकेशन्स) विषय पर किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रूबी शुक्ला, डायरेक्टर, प्रोग्राम मैनेजमेंट, पब्लिसिस सैपिएंट, नोएडा रहीं। उन्होंने मुख्य भाषण देते हुए वर्तमान डिजिटल प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वास्तविक दुनिया में उपयोगिता और औद्योगिक अनुप्रयोगों पर अपने अनुभव साझा किए। इस कार्यक्रम की शुरूआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन, वंदना और सरस्वती वंदना के साथ हुई, जो संस्थान की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। इसके पश्चात डॉ. अवनीश वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग ने सभी गणमान्य अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया।

प्रोफेसर (डॉ.) धौम्या भट्ट, डीन, आईक्यूएसी और एफडीपी समन्वयक ने छह दिवसीय कार्यक्रम की संरचना और उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की और उन्नत तकनीकी विषयों में फैकल्टी कौशल उन्नयन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह भी बताया कि प्रतिभागियों को विशेषज्ञों द्वारा संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों के साथ-साथ प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी इवैल्यूसर्व सेज प्राइवेट लिमिटेड के औद्योगिक दौरे का भी अवसर प्राप्त होगा।

इसके बाद, प्रोफेसर (डॉ.) आर. पी. महापात्रा, डीन, एसआरएम आईएसटी दिल्ली-एनसीआर कैंपस ने एक विशेष संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने संस्थान द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में की जा रही पहलों और शैक्षणिक प्रगति को उजागर किया। सत्र का समापन डॉ. रोली गुप्ता, एफडीपी को-कोऑर्डिनेटर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने आयोजन समिति, अतिथि वक्ताओं और प्रतिभागियों के योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। इस एफडीपी में कई प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के संकाय सदस्यों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई, जिनमें जामिया हमदर्द (नई दिल्ली), वीआईटी भोपाल विश्वविद्यालय, गलगोटियास विश्वविद्यालय, आईटीएस इंजीनियरिंग कॉलेज (ग्रेटर नोएडा), और एमआईईटी (ग्रेटर नोएडा) शामिल हैं। तकनीकी सत्रों के लिए आमंत्रित विशेषज्ञ वक्ता अकादमिक और औद्योगिक क्षेत्रों के प्रतिष्ठित प्रोफेशनल हैं। प्रमुख विशेषज्ञों में शामिल हैं: डॉ. शेली सचदेवा (एनआईटी दिल्ली), डॉ. नन्हे सिंह (एनएसयूटी, ईस्ट कैंपस, दिल्ली), डॉ. विनय कौशिक (आईआईआईटी सोनीपत), डॉ. कपिल आर्य (सीएसआईआर दिल्ली), और श्री विनय कुमार त्रिपाठी (एचसीएल टेक्नोलॉजीज, नोएडा)। इन सत्रों का उद्देश्य प्रतिभागियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के हालिया विकास और व्यावहारिक ज्ञान से परिचित कराना है। यह फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम शिक्षकों और शोधकताओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आधुनिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव से सशक्त बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। यह छह दिवसीय कार्यक्रम विशेषज्ञ व्याख्यानों, व्यावहारिक सत्रों और संवादात्मक चचाओं से परिपूर्ण है, जो प्रतिभागियों की शैक्षणिक और व्यावसायिक क्षमताओं को सुदृढ़ करेगा।

अहल्या की वंश-परम्परा और अहल्या-इन्द्रोख्यान

अहल्या रामकथा की ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय के उपेक्षित स्त्री पात्र है। अहल्या का सर्वप्रथम उल्लेख ब्राह्मणग्रन्थों में अहल्या मैत्रेयी नाम से मिलता है (शतपथब्राह्मण 3/3/4/18; जैमिनीब्राह्मण 2/79; पंचविंशब्राह्मण 1/1)। अहल्या विषयक आख्यान की चर्चा करने के पूर्व अहल्या की वंश-परम्परा को जान लेना आवश्यक है। वायुपुराण में अहल्या के वंश-परम्परा का विस्तृत वर्णन किया गया है। प्राचीनकाल में एक अशिज नामक परम विद्वान् ऋषि विख्यात हो गये हैं, उन परम महात्मा ऋषि की पत्नी का नाम ममता था। अशिज के छोटे भाई देवताओं के पुरोहित परम तेजस्वी बृहस्पति थे। एक बार वे कामवश होकर ममता के पास गये। देवी ममता ने बृहस्पति के प्रति अपनी इच्छा प्रकट नहीं की। वे बोलीं, मैं इस समय तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता के संयोग से गर्भवती हूँ, बृहस्पति! यह हमारा महान् गर्भ अपने तेज से प्रकाशित हो रहा है। यह गर्भावस्था में ही अशिज के अंशभूत होने के कारण षडंग वेदों का उच्चारण करता है एवं ब्रह्म का अभ्यास करता है। तुम भी अमोघवीर्यवाले हो, इसलिए ऐसी स्थिति में मेरे साथ सम्भोग नहीं कर सकते। हे सर्वसमर्थ! इस काल के व्यतीत हो जाने के पश्चात् तुम्हारी जैसी इच्छा हो, वैसा करना। ममता के इस प्रकार कहने पर परम तेजस्वी बृहस्पति महात्मा होकर भी अपनी कामवशीभूत आत्मा को वश में न रख सके। परम धर्मात्मा होकर भी उन्होंने ममता के साथ सम्भोग किया। जिस समय वे वीर्यधान कर रहे थे, उसी समय गर्भस्थ शिशु ने उनसे कहा- तात! आप अपना वीर्य यहाँ न निहित करें, क्योंकि इसमें दो प्राणियों का निवास सम्भव नहीं है। तुम भी अमोघवीर्यवाले हो, मैं यहाँ पहिले से ही उपस्थित हूँ। गर्भस्थ शिशु के इस वाक्य से बृहस्पति के वीर्यधान में बाधा पहुँची। परम तेजस्वी ऋषिवर बृहस्पति ने अप्रसन्न होकर अपने बड़े भाई अशिज के संयोग से समुत्पन्न गर्भस्थ शिशु को शाप दिया कि सभी प्राणधारियों के परम अभीष्ट ऐसे सुखमय अवसर में तुमने बाधा पहुँचायी है, अज्ञानवश तुमने मुझको ऐसा कहा है, अतः महान् अन्धकार को प्राप्त होगे। बृहस्पति के शाप के कारण वह शिशु दीर्घतमा ऋषि के नाम से विख्यात हुआ-

डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह 'संजय'

अशिजो नाम विख्यात आसीद्धीमानृषिः पुरा।
भार्या वै ममता नाम बभूवास्य महात्मनः।।
अशिजस्य कनीयांस्तु पुरोधा यो दिवौकसाम्।
बृहस्पतिर्बृहत्तेजा ममतां सोऽभ्यपद्यत।।
उवाच ममता तं तु बृहस्पतिमनिच्छती।
अन्तर्वत्न्यस्मि ते भ्रातुर्ज्येष्ठस्याष्टमिता इति।।
अयं हि मे महागर्भो रोचसेऽति बृहस्पते।
अशिजं ब्रह्म चाभ्यस्य षडङ्गं वेदमुद्गिरन्।।
अमोघरेतास्त्वं चापि न मां भजितमर्हसि।
अस्मिन्नेव गते काले यथा वा मन्यसे प्रभो।।
एवमुक्तस्तया सम्यग्बृहत्तेजा बृहस्पतिः।
कामात्मानं महात्माऽपि नाऽऽत्मानं सोऽऽभ्यधारयत्।।
संबभूवेव धर्मात्मा तया सार्द्धं बृहस्पतिः।
उत्सृजन्तं तदा रेतो गर्भस्थः सोऽभ्यभाषत।।
नोस्नातको न्यसेह्यस्मिन्द्वयोनेर्हास्ति सम्भवः।
अमोघरेतास्त्वं चापि पूर्वं चाहमिहाऽऽगतः।।
शशाप तं तदा क्रुद्ध एवमुक्तो बृहस्पतिः।
आशिजं तं सुतं भ्रातुर्गर्भस्थं भगवानृषिः।।
यस्ममात्त्वमीदृशे काले सर्वभूतेप्सिते सति।
मामेवमुक्तवान्मोहात्तमो दीर्घं प्रवेक्ष्यसि।।
ततो दीर्घतमा नाम शापादृषिरजायत।

- वायुपुराण (हिं.सा.सं. संस्करण) 99/36-46

कामवशीभूत पितृव्य बृहस्पति के शाप से जन्मान्ध ऋषि दीर्घतमा अपने पितृव्य बृहस्पति के आश्रम में ही रहते थे। एक दिन दीर्घतमा ने देव की अकृपा से हतबुद्धि होकर अपने छोटे भाई औतथ्य की पत्नी को कामवश होकर छेड़ने का उपक्रम किया। उसके अनाकानी करने और रोने पर भी वे अपने इस निंद्य कर्म से विरत नहीं हुए। दीर्घतमा का यह महान्-गर्वमूलक अपराध ऋषि शरद्वान्-को सहन नहीं हुआ। उन्होंने देखा कि दीर्घतमा अपने बल के कारण छोटे भाई की स्त्री, जो पुत्रवधू के समान है, के साथ सम्भोग कर रहे हैं। इस महान्-विपर्यय को देखकर महात्मा शरद्वान् को बड़ी चिन्ता हुई, किन्तु भविष्य में घटित होनेवाली घटना के प्रभाव को जानते हुए उन्होंने दीर्घतमा को मृत्यु का शाप नहीं दिया-

ततो यवीयसः पत्नीमोतथ्यस्याभ्यमन्यत।
विचेष्टमानां रुदतीं दैवात्संमूढचेतनः।।
अवलेपं तु तं मत्वा शरद्वांस्तस्य नाक्षमत्।
गोधर्मं वै बलं कृत्वा स्नुषां स सममन्यत।।
विपर्यय तु तं दृष्ट्वा शरद्वान्प्रत्यचिन्तयत्।
भविष्यमर्थं ज्ञात्वा च महात्मा च न मृत्युताम्।।

- वायुपुराण (हिं.सा.सं. संस्करण) 99/58-60

कालान्तर में वृष ने प्रसन्न होकर दीर्घतमा से कहा- 'तुमने गौधर्म की मयार्दा पर भली भाँति विचार कर पालन किया है। हे मुने! तुम्हारे इस आचरण से मैं परम प्रसन्न हूँ, देखो; आज महान्-अन्धकार से मैं तुम्हारी मुक्ति कर रहा हूँ, तुम्हारे शरीर से बृहस्पति के शाप के कारण जो पाप चिरकाल से निबद्ध था, उसे भी तुमसे अलग कर रहा हूँ। अपने नथुनों से सूँघकर तुम्हारे शरीर से वृद्धता एवं मृत्यु के शाप को भी मैं दूर कर रहा हूँ।' ऐसा कहने के उपरान्त वृषभ के सूँघते ही दीर्घतमा का चिरकालीन अन्धकार दूर हो गया और वे देखने लगे। आशीर्वाद के फलस्वरूप वे दीघार्युसम्पन्न युवा और नेत्रवान् हो गये। इस प्रकार गौ के आशीर्वाद से ऋषि दीर्घतमा गौतम - इस नये नाम से प्रख्यात हुए। यथा-

विचार्य यस्माद्गोधर्म्मं त्वमेवं कृतवानसि।
तेन न्यायेन मुमुचे अहं प्रीतोऽस्मि तेन ते।।
तस्मात्तव तमो दीर्घं निस्तुदाम्यद्य पश्य वै।
बार्हस्पत्यं च यत्तेऽन्यत्पापं संतिष्ठते तनौ।।
जरामृत्युभयं चैव आघ्राय प्रणुदामि ते।
आघ्रातमात्रः सोऽपश्यत्सद्यस्तमसि नाशिते।।
आयुष्मांश्च युवा चैव चक्षुष्मांश्च ततोऽभवत्।
गवा दीर्घतमाः सोऽथ गौतमः समपद्यत।।

- वायुपुराण (हिं.सा.सं. संस्करण) 99/89-92

वायुपुराण में ही महात्मा अशिज की आसन्नप्रसवा पत्नी ममता के साथ उनके अनुज देवगुरु बृहस्पति के द्वारा किये गये सम्भोग की कथा का उत्तरपक्ष भी वर्णित है। वायुपुराणकार ने लिखा है-

पत्न्यामासन्नगभार्यामशिजः संस्थितः किल।
भ्रातुर्भार्यां स दृष्ट्वाऽथ बृहस्पतिरुवाच ह।
अलंकृत्य तनुं स्वां तु मैथुनं देहि मे शुभे।।
एवमुक्ताऽब्रवीदे नमन्तर्वत्नी ह्यहं विभो।
गर्भः परिणतश्चायं ब्रह्म व्याहरते गिरा।।
अमोघरेतास्त्वं चापि धर्मश्चैव विगर्हितः।
एवमुक्तोऽब्रवीदेनां स्मयमानो बृहस्पतिः।।
विनयो नोपदेष्टव्यस्त्वया मम कथं चन।
हर्षमाणः प्रसह्यैनां मैथुनायोपचक्रमे।।
ततो बृहस्पतिं गर्भो हर्षमाणमुवाच ह।
सन्निविष्टो ह्यहं पूर्वमिह तात बृहस्पते।।
अमोघरेताश्च भवान्नावकाशोऽस्ति च द्वयोः।
एवमुक्तः स गर्भेण कुपितः प्रत्युवाच ह।।
यस्मान्मामीदृशे काले सर्वभूतेप्सिते सति।
प्रतिषेधसि तत्तस्मात्तमो दीर्घं प्रवेक्ष्यसि।।
पादाभ्यां तेन तच्छन्नं मातुर्द्वारं बृहस्पतेः।
तद्रेतस्तुर्मध्येऽनिवार्यः शिशुकोऽभवत्।।
सद्योजातं कुमारं तं दृष्ट्वाऽथ ममताऽब्रवीत्।
गमिष्यामि गृहं स्वं वै भरद्वाजं बृहस्पते।।
एवमुक्त्वा गतायां स पुत्रं त्यजति तत्क्षणात्।
भरस्व बाढमित्युक्तो भरद्वाजस्ततोऽभवत्।।

- वायुपुराण (हिं.सा.सं. संस्करण) 99/141-150

अर्थात् यह प्रसिद्ध है कि प्राचीनकाल में ऋषिवर अशिज की पत्नी ममता जब आसन्नप्रसवा हुई, तब वे तपस्या में निरत हो गये। एकान्त में अपने भाई की भार्या को देखकर बृहस्पति ने कहा- 'मंगले! अपने शरीर को विधिवत अलंकारादि से अलंकृत करके मुझे मैथुन का दान करो।' बृहस्पति के इस प्रकार कहने पर देवी ममता ने कहा- 'समर्थ! मैं सम्प्रति गर्भवती हूँ, यह गर्भ भी अब पूर्ण हो चुका है, ब्रह्म (वेद) का उच्चारण करता है, तुम्हारा वीर्य भी निष्फल हो जानेवाला नहीं है, और प्रकार व्यभिचार करने पर धर्म की विगर्हणा होगी।' ममता के ऐसे कहने पर बृहस्पति हँसते हुए बोले- 'सुन्दरि! मुझे तुम किसी प्रकार भी आचार की शिक्षा नहीं दे सकतीं, मैं सब कुछ जानता हूँ।' ऐसा कहकर बड़े आनन्द के साथ बृहस्पति ने साहसपूर्वक ममता के साथ सम्भोग करने का उपक्रम किया। रतिकर्म में आनन्दविभोर बृहस्पति से गर्भस्थ शिशु ने कहा- 'तात! बृहस्पते! मैं यहाँ पहिले से ही सन्निविष्ट हूँ, आपका वीर्य कदापि निष्फल होनेवाला नहीं है, इस संकीर्ण स्थली में दो व्यक्तियों के निवास की सम्भावना नहीं है।' गर्भस्थ शिशु के ऐसा कहने पर बृहस्पति को बड़ा क्रोध हो गया। वे बोले- 'सभी प्राणियों के अभीष्टतम इस सुन्दर अवसर पर तुम मुझे निषेध कर रहे हो, इस कारण तुम महान्-घोर अन्धकार में प्रवेश करोगे।' बृहस्पति के इस कथन के उपरान्त गर्भस्थ शिशु ने अपने दोनों पैरों से माता के योनिद्वार को आवृत कर दिया, किन्तु उस पर भी बृहस्पति का वीर्य उसके दोनों पैरों के मध्य भाग से अनिवार्य होकर उदर के भीतर चला गया और एक छोटे शिशु के रूप में उत्पन्न होकर बाहर निकल पड़ा। इस सद्योजात कुमार को देखकर देवी ममता ने कहा- 'बृहस्पते! मैं तो अपने निवास को जा रही हूँ इस द्वाज (जारज) पुत्र की पालना तुम्हें करनी होगी।' ऐसा कहकर ममता के चले जाने पर बृहस्पति ने भी उसी क्षण उस पुत्र को छोड़ दिया। 'भर-द्वाजम्' (इस जारज शिशु की रक्षा करो) इस कथन के अनुसार वह शिशु भरद्वाज नाम से प्रसिद्ध हुआ।

देवी ममता से उत्पन्न बृहस्पति के इस जारज पुत्र भरद्वाज को उठाकर मरुद्गणों ने चन्द्रवंशी सम्राट् भरत को दे दिया, जो सम्राट् भरत के दत्तक पुत्र भरद्वाज वितथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ-

भरतस्तु भरद्वाजं पुत्रं प्राप्य तदाऽब्रवीत।
प्रजायां संहृतायां वै कृतार्थोऽहं त्वया विभो।।
पूर्वं तु वतथं तस्य कृतं वै पुत्रजन्म हि।
ततः स वितथो नाम भारद्वाजस्तथाऽभवत्।।
तस्माद्दिव्यो भरद्वाजो ब्राह्मण्याक्षत्रियोऽभवत्।
द्विमुख्यायननामा स स्मृतो द्विपितरस्तु वै।।
ततोऽथ वितथे जाते भरतः स दिवं ययौ।।

- वायुपुराण (हिं.सा.सं. संस्करण) 99/155-158

देवगुरु बृहस्पति के जारज पुत्र एवं सम्राट् भरत के दत्तक पुत्र भरद्वाज वितथ की वंशावली अधिकांश पुराणों में उपलब्ध है। भागवतपुराण के अनुसार भरद्वाज वितथ की वंशावली निम्नांकित है-

1. **भरद्वाज (वितथ)**
2. **मन्यु**
3. **बृहत्क्षत्र**
4. **हस्ती**
5. **अजमीढ़**
6. **नील**
7. **शान्ति**
8. **सुशान्ति**
9. **पुरुज**
10. **अर्क**
11. **भर्म्याश्व**
12. **मुद्गल**
13. **अहल्या + गौतम**
14. **शतानन्द**
15. **सत्यधृति**
16. **शरद्वान**
17. **कृपाचार्य एवं कृपी (गौतमी) + द्रोणाचार्य।**

- भागवतपुराण (गीताप्रेस संस्करण) 9/21/1-36

उपर्युक्त वंशावली के अनुसार चन्द्रवंशी नरेश भर्म्याश्व के पुत्र मुद्गल से यमज (जुड़वा) सन्तान हुई। उनमें पुत्र का नाम था दिवोदास और कन्या का अहल्या। अहल्या का विवाह महर्षि गौतम से हुआ। गौतम के पुत्र हुए शतानन्द-

मिथुनं मुद्गलाद् भार्म्याद् दिवोदासः पुमानभूत्।
अहल्या कन्यका यस्यां शतानन्दस्तु गौतमात्।।

- भागवतपुराण 9/21/34

भागवतपुराण में जहाँ अहल्या भर्म्याश्व की पौत्री एवं मुद्गल की पुत्री कही गयी है, वहीं हरिवंशपुराण में भर्म्याश्व की प्रपौत्री, महायशस्वी ब्रह्मर्षि इन्द्रसेन की पौत्री एवं वर्ध्यश्व की पुत्री कही गयी है। वर्ध्यश्व द्वारा मेनका के गर्भ से एक पुत्र और एक कन्या का जन्म हुआ, ऐसी प्रसिद्धि है। पुत्र का नाम दिवोदास था, जो राजर्षि एवं ब्रह्मर्षि थे। कन्या यशस्विनी अहल्या थी। अहल्या महर्षि शरद्वान् (गौतम) की पत्नी थी। उसने गौतम के पुत्र मुनिश्रेष्ठ शतानन्द को जन्म दिया था-

मौद्गलस्य सुतो ज्येष्ठो ब्रह्मर्षिः सुमहायशाः।
इन्द्रसेनो यतो गर्भं वर्ध्यश्वं प्रत्यपद्यत।।
वर्ध्यश्वान्मिथुनं जज्ञे मेनकायामिति श्रुतिः।
दिवोदासश्च राजर्षिरहल्या च यशस्विनी।।
शरद्वतस्तु दायादमहल्या समसूयत।
शतानन्दमृषिश्रेष्ठं तस्यापि सुमहायशाः।।
- हरिवंशपुराण 1/32/30-32
वायुपुराण में भी ऐसा ही वर्णन उपलब्ध होता है-
इन्द्रसेना यतो गर्भं वध्यश्वं प्रत्यपद्यत।
वध्यश्वान्मिथुनं जज्ञे मेनका इति नः श्रुतिः।।
दिवोदासश्च राजर्षिरहल्या च यशस्विनी।
शरद्वतस्तु दायादमहल्या समसूयत।।

- वायुपुराण (हिं.सा.सं. संस्करण) 99/200-201

अहल्या को ब्रह्मा की मानसपुत्री भी कहा जाता है। ब्रह्मदेव ने अहल्या का अत्यन्त सुन्दर निर्माण किया था। हल का अर्थ है विरूपता तथा हल्या का अर्थ है विरूपता के कारण प्राप्त निन्द्यत्व। इसे हल्य न होने के कारण ब्रह्मदेव ने इसका नाम अहल्या रखा था। वाल्मीकीयरामायण में इस तथ्य का उल्लेख किया गया है-

ततो मया रूपगुणैरहल्या स्त्री विनिर्मिता।
हलं नामेह वैरूप्यं हल्यं तत्प्रभवं भवेत्।।
यस्या न विद्यते हल्यं तेनाहल्येति विश्रुता।
अहल्येत्येव च मया तस्य नाम प्रकीर्तितम्।।40
- वाल्मीकीयरामायण 7/30/22-23

अर्थात् उन अद्भुत रूप-गुणों से उपलक्षित जिस नारी का मेरे द्वारा निर्माण हुआ था, उसका नाम हुआ अहल्या। इस जगत में हल कहते हैं कुरूपता को, उससे जो निन्दनीयता प्रकट होती है उसका नाम हल्य है। जिस नारी में हल्य (निन्दनीय रूप) न हो, वह अहल्या नाम से विख्यात हुई। मैंने ही उसका नाम अहल्या रखा दिया था। वस्तुतः अहल्या 'ब्रह्मा की मानस पुत्री है' यह एक मुहावरा है। जिस तरह आज किसी सुन्दर स्त्री या पुरुष को देखकर कहा जाता है कि भगवान् ने इन्हें बड़े फुरसत से गढ़ा है, ठीक वैसा ही भाव 'ब्रह्मा के मानस पुत्र एवं मानस पुत्री' का है। इस सन्दर्भ में धर्मसम्राट् पूज्यपाद स्वामी श्री करपात्री जी महाराज लिखते हैं- 'अहल्या की वंशावली के सम्बन्ध में हरिवंश, विष्णुपुराण आदि के मतभेद का भी समन्वय कर लेना चाहिए। श्रीभागवतपुराण (9/21/34) के अनुसार अहल्या के पिता मुद्गल थे। इसका अर्थ है कि मुद्गलवंश में अहल्या की उत्पत्ति हुई थी। अतएव हरिवंश (1/32/28-32) के अनुसार वर्ध्यश्व मुद्गल से मोद्गल, उनसे इन्द्रसेन और उनसे वर्ध्यश्व और वर्ध्यश्व से दिवोदास तथा अहल्या की उत्पत्ति हुई थी। विष्णुपुराण (4/19/61) के बृहदश्व तथा मत्स्यपुराण (50/60) के विन्ध्याश्व को वर्ध्यश्व से अभिन्न ही समझना चाहिए। वाल्मीकीयरामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार ब्रह्मा ने सब प्राणियों के तथा सहस्त्रों सुन्दरियों के अंगों के सौन्दर्य को लेकर अहल्या का निर्माण किया और उसमें कुरूपता का अत्यन्त अभाव था, इसलिए उसका नाम अहल्या हुआ। अतः अहल्या ब्रह्मा की पुत्री थी। वैसे तो सभी प्राणियों के रचयिता ब्रह्मा ही होते हैं, तथापि अहल्या को विशेषरूप से रचा गया, इसलिए उसे ब्रह्मा की पुत्री कहा जा सकता है, किन्तु मनुष्यलोक में वह मुद्गल-वंश में उत्पन्न हुई।' (स्वामी करपात्री जी महाराज : रामायणमीमांसा, राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, रमण रेती, वृन्दावन, मथुरा, सप्तम संस्करण 2015 ई., पृ. 395)।

वस्तुतः विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि ममता और अशिज के संयोग से उत्पन्न हुए दीर्घजीवी महात्मा दीर्घतमा ही वृषभ की कृपा से गौतम हुए एवं ममता और बृहस्पति के संयोग से उत्पन्न भरद्वाज वितथ की तेरहवीं पीढ़ी में उत्पन्न हुई अनिन्द्य सुन्दरी अहल्या का विवाह गौतम से हुआ। तत्त्वतः गौतम और अहल्या के मूल में ममता ही है। वाल्मीकीयरामायण के उत्तरकाण्ड में सर्वप्रथम अहल्या की उत्पत्ति तथा गौतम-अहल्या-परिणय का वर्णन है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि दीर्घतमा, शरद्वान् एवं गौतम कल्पभेद एवं पाठभेद से परस्पर अभिन्न हैं। अहल्या के अकलंक सौन्दर्य पर मुग्ध होकर देवराज इन्द्र उसकी अभिलाषा करते थे, किन्तु ब्रह्मा ने उसे धरोहर रूप में गौतम ऋषि के यहाँ रखा था। बहुत वर्षों के अनन्तर गौतम ने उसे ब्रह्मा को वापस लौटाया। ब्रह्मा ने तपस्वी गौतम की सिद्धि देखकर उन्हें अहल्या को पत्नी रूप में प्रदान किया। 'ब्रह्मपुराण' (अध्याय 87) में इस वृत्तान्त का विकसित रूप उपलब्ध है। उसके अनुसार ब्रह्मा ने गौतम को अहल्या के पालन-पोषण का दायित्व सौंपा था। अहल्या की यौवन-प्राप्ति पर समस्त देवता, मुनि, दानव, यक्ष तथा राक्षस उसे माँगने लगे; किन्तु इन्द्र ने विशेष आग्रह किया। यह देखकर ब्रह्मा ने कहा कि जो पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके सर्वप्रथम मेरे पास आयेगा, उससे ही अहल्या का विवाह होगा। इस पर समस्त देवता पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने निकले, किन्तु गौतम ने अर्धप्रसूता सुरभि तथा शिवलिंग की प्रदक्षिणा की और अहल्या को प्राप्त किया। 'आनन्दरामायण' में भी इस आख्यान की ओर संकेत किया गया है-

ब्रह्मणा निर्मिताऽहल्या द्विमुखीगोः परिक्रमात।
दत्ता पुरा गौतमाय.......।।

- आनन्दरामायण 1/3/18

'पउमचरियं' (पर्व 13) के अनुसार अहल्या का जन्म ज्वलनसिंह तथा वेगवती के संयोग से हुआ था। 'पउमचरियं' की अहल्या अपने स्वयंवर के अवसर पर इन्द्र को ठुकरा कर नन्दिमाली (अथवा आनन्दमालिवर) का वरण करती है। बाद में नन्दिमाली को वैराग्य हुआ और उन्होंने दीक्षा ले ली। किसी दिन इन्द्र ने उस ध्यानस्थ नन्दिमाली को बाँधा था, जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्द्र रावण से परास्त हो गये।

गौतमभार्या अहल्या के साथ देवराज इन्द्र के दुराचार का वर्णन सर्वप्रथम महाभारत में मिलता है। जहाँ चिरकारिता की प्रशंसा करते हुए ऋषि गौतम के पुत्र चिरकारी का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। अपनी पत्नी के व्यभिचार से क्रुद्ध गौतम अपने पुत्र चिरकारी को अहल्या का वध करने का आदेश देकर वन चले गये। अपने स्वभाव के अनुसार चिरकारी ने अपने पिता की इस आज्ञा पर बहुत समय तक विचार किया। इतने में गौतम वन में सोचने लगे कि मैंने अपनी निर्दोष पत्नी के वध का आदेश देकर अच्छा नहीं किया। इन्द्र ब्राह्मण के वेष में मेरे आश्रम में आये थे, मैंने उनका आतिथ्य-सत्कार किया था। बाद में जो दुःखद घटना हुई उसमें मेरी स्त्री का कोई दोष नहीं था- 'अत्र चाकुशले जाते स्त्रिया नास्ति व्यतिक्रमः' (महाभारत, गीताप्रेस संस्करण 12/258/46)। इस प्रकार चिन्तन करते हुए गौतम घर लौटे तथा अपनी भार्या अहल्या को सकुशल पालक अपने पुत्र की चिरकारिता की प्रशंसा करने लगे। महाभारत में अनेक स्थलों पर इन्द्र के प्रति गौतम के शाप का उल्लेख है, किन्तु अहल्या को सर्वत्र निर्दोष ही माना गया है। वाल्मीकीयरामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग 30) में वर्णित कथानुसार भी अहल्या निर्दोष है, किन्तु बालकाण्ड में वर्णित है कि कुतूहल से प्रेरित होकर अहल्या ने इन्द्र को गौतम के वेष में पहचानते हुए भी उनका प्रस्ताव स्वीकार किया था-

मुनिवेषं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन।
मतिं चकार दुमेर्धा देवराजकुतूहलात्।।
अथाब्रवीत सुरश्रेष्ठं कृतार्थेनान्तरात्मना।
कृतार्थास्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमितः प्रभो।।
आत्मानं मां च देवेश सर्वथा रक्ष गौतमात्।46

- वाल्मीकीयरामायण (गीताप्रेस संस्करण) 1/48/19-21

अर्थात् रघुनन्दन! महर्षि गौतम का वेष धारण करके आये हुए इन्द्र को पहचान कर भी उस दुर्बुद्धि नारी ने 'अहो! देवराज इन्द्र मुझे चाहते हैं' इस कौतूहलवश उनके साथ समागम का निश्चय करके वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। रति के पश्चात उसने देवराज इन्द्र से सन्तुष्टचित्त होकर कहा- 'सुरश्रेष्ठ! मैं आपके समागम से कृतार्थ हो गयी। प्रभो! अब आप शीघ्र यहाँ से चले जाइए। देवेश्वर! महर्षि गौतम के कोप से आप अपनी और मेरी भी सब प्रकार से रक्षा कीजिए।'

परवर्ती कथाओं में इस पर बल दिया जाने लगा कि अहल्या ने इन्द्र को नहीं पहचाना था। ब्रह्मपुराण के अनुसार गौतम अपनी पत्नी के साथ ब्रह्मगिरि पर तप कर रहे थे। अहल्या के परिणय के पूर्व से इन्द्र उस पर आसक्त थे, अतः गौतम की अनुपस्थिति में इन्द्र गौतम का रूप धारण करके अहल्या के पास आया करते थे, किन्तु वह उन्हें गौतम समझती थी-

न बुबोध अहल्या तं जारं मेने तु गौतमम।।

- ब्रह्मपुराण 78/44

किसी दिन संयोगवश आश्रम में दोनों ही गौतम दिखायी पड़े। आश्रमवासी यह आश्चर्य देखकर इसे तप का प्रभाव समझकर गौतम से कहने लगे-

भगवन् किमिदं चित्रो बहिरन्तश्च दृश्यसे।
प्रिययाऽन्तः प्रविष्टोऽसि तथैव च बहिर्भवान्।
अहो तपःप्रभावोऽयं नानारूपधरो भवान्।।

- ब्रह्मपुराण 78/48

यह सुनकर गौतम अपने घर पहुँच गये यथा इन्द्र ने गौतम के आगमन पर बिडाल (बिल्ली) का रूप धारण कर लिया। बिडाल अथवा मार्जार के ब्याज से अन्यान्य स्थलों पर यह बताया गया है कि इन्द्र, अहल्या के जार (उपपति) हैं। 'कथासरित्सागर' में इस सन्दर्भ का उल्लेख करते हुए लिखा गया है-

पुराभूद् गौतमो नाम त्रिकालज्ञो महामुनिः।
अहल्येति च तस्यासीद् भार्या रूपजिताप्सराः।।
एकदा रूपलुब्धस्तामिन्द्रः प्रार्थितवान् रहः।
प्रभूणां हि विभूत्यन्धा धावत्यविषये मतिः।।
सानुमेने च तं मूढा वृषस्यन्ती शचीपतिम्।
तच्च प्रभावतो बुद्ध्वा तत्रागाद् गौतमो मुनिः।।
मार्जाररूपं चक्रे च भयादिन्द्रोऽपि तत्क्षणम्।
कः स्थितोऽत्रेति सोऽपृच्छदहल्यामथ गौतमः।।
एसो ठिओ खु मज्जारो इत्यपभ्रष्टवक्त्रया।
गिरा सत्यानुरोधिन्या सा तं प्रत्यब्रवीत् पतिम्।।
सत्यं त्वज्जार इत्युक्त्वा विहसन् स ततो मुनिः।
सत्यानुरोधक्लृप्तान्तं शापं तस्यामवातयत्।।
पापशीले शिलाभावं भूरिकालमवाप्नुहि।
आ वनान्तरसञ्चारिराघवालोकनादिति।।
वराङ्गलुब्धस्याङ्गे ते तत्सहस्त्रं भविष्यति।
दिव्यस्त्रीं विश्वकर्मा यां निर्मास्यति तिलोत्तमाम्।।
तां विलोक्य तदैवाक्ष्णां सहस्त्रं भविता च ते।
इतीन्द्रमपि तत्कालं शपति स्म स गौतमः।।

- कथासरित्सागर 3/3/127, 138-145

उपर्युक्त वचनों में भी इन्द्र और अहल्या दोनों सदोष हैं। मार्जार रूप में इन्द्र को सत्यानुरोधिनी प्राकृत भाषा में अहल्या ने मार्जार-बोधन की दृष्टि से 'मज्जार' कहा, जिसका अर्थ मज्जार मेरा जार ही था। गौतम ने उपहास करते हुए कहा 'सत्य ही यह त्वज्जार तुम्हारा जार (उपपति) ही है।' उन्होंने उसे शाप दिया 'पापशीले! तुम बहुत काल तक शिलाभाव को प्राप्त होओ और तब तक शिला बनी रहो, जब तक वनान्तर संचारी राघवेन्द्र का दर्शन नहीं होता।' इन्द्र के लिए पुनः कहा 'वराङ्गलुब्ध इन्द्र! तुम्हारे शरीर में सहस्त्र भग तब तक रहेंगे, जब तक विश्वकर्मा द्वारा निर्मित दिव्यस्त्री तिलोत्तमा नहीं प्राप्त होती। उसको देखते ही वे सहस्त्र भग सहस्त्र नेत्रों के रूप में परिणत हो जायेंगे।'

वाल्मीकीयरामायण के बालकाण्ड के अनुसार देवेन्द्र ने देवताओं के पास जाकर कहा कि गौतम की तपस्या में विघ्न डालकर उनमें क्रोध उत्पन्न कर मैंने देवताओं का उपकार किया है-

कुर्वता तपसो विघ्नं गौतमम्य महात्मनः।
क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरकार्यमिदं कृतम्।।

- वाल्मीकीयरामायण (गीताप्रेस संस्करण) 1/49/2

वाल्मीकीयरामायण में जहाँ गौतम ने इन्द्र को विफल (अण्डकोषरहित) होने का शाप दिया, वहीं अहल्या को कई हजार वर्षों तक केवल हवा पीकर या उपवास करके कष्ट उठाती हुई राख में पड़ी रहने का शाप दिया-

मम रूपं समास्थाय कृतवानसि दुर्मते।
अकर्तव्यमिदं यस्याद् विफलस्त्वं भविष्यसि।।
गौतमेनैवमौक्तस्य सुरोषेण महात्मना।
पेततुर्वृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात्।।
तथा शप्त्वा च वै शक्रं भार्यामपि च शप्तवान्।
इह वर्षसहस्राणि बहूनि निवसिष्यसि।।
वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।
अदृष्ट्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन् वसिष्यसि।।

- वाल्मीकीयरामायण (गीताप्रेस संस्करण) 1/48/27-30

शाप का स्वरूप अनेक रूपों में उपलब्ध होता है। गौतम-शाप से अहल्या के शिला हो जाने का सर्वप्रथम उल्लेख महाकवि कालिदास के रघुवंश में आया है, जहाँ वे कहते हैं-

प्रत्यपद्यत चिराय यत्पुनश्चारु गौतमवधूः शिलामयी।
स्वं वपुः स किल किल्बिषच्छिदां रामपादरजसामनुग्रहः।।

- रघुवंश 11/34

अर्थात् शिलामयी गौतमवधू बहुत काल के अनन्तर जो पुनः अपने दिव्य रूप को प्राप्त हो गयी, उसे सकलकल्मषहारी श्रीराम के पदरजों का ही अनुग्रह समझना चाहिए। कालान्तर में अहल्या के पाषणभूता अथवा पाषाणी हो जाने का सन्दर्भ नृसिंहपुराण (अध्याय 47), स्कन्दपुराण (रेवाखण्ड अध्याय 136, नागरखण्ड अध्याय 278,), कथासरित्सागर (3/17), महानाटक (3/17), वह्निपुराण (पृ. 182), कम्बरामायण (1/9), रंगनाथरामायण (1/29), सरलादासकृत महाभारत, मध्यपर्व (पृ. 203), कृत्तिवासरामायण (1/59), ब्रह्मवैवर्तपुराण (कृष्णजन्मखण्ड, अध्याय 47 एवं अध्याय 61), पद्मपुराण (उत्तरखण्ड अध्याय 269 एवं पातालखण्ड अध्याय 16), आनन्दरामायण (1/3/26), राघवोल्लासकाव्य (सर्ग 6), तोरवेरामायण (1/12), श्रीरामचरितमानस (1/210), गीतावली (1/57), असमियारामायण, (बालकाण्ड), सूरसागर (नवम स्कन्ध, पद 466), सत्योपाख्यान (1/5), मराठी भावार्थरामायण (1/14), तत्त्वसंग्रहरामायण (1/25), गणेशपुराण, पाश्चात्य वृत्तान्त (वृत्तान्त संख्या 10) आदि रचनाओं में आया है।

अहल्या विषयक आख्यान की चर्चा करने के पूर्व अहल्या की वंश-परम्परा को जान लेना आवश्यक है। वायुपुराण में अहल्या के वंश-परम्परा का विस्तृत वर्णन किया गया है। प्राचीनकाल में एक अशिज नामक परम विद्वान् ऋषि विख्यात हो गये हैं, उन परम महात्मा ऋषि की पत्नी का नाम ममता था। अशिज के छोटे भाई देवताओं के पुरोहित परम तेजस्वी बृहस्पति थे। एक बार वे कामवश होकर ममता के पास गये। देवी ममता ने बृहस्पति के प्रति अपनी इच्छा प्रकट नहीं की। वे बोलीं, मैं इस समय तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता के संयोग से गर्भवती हूँ, बृहस्पति! यह हमारा महान् गर्भ अपने तेज से प्रकाशित हो रहा है। यह गर्भावस्था में ही अशिज के अंशभूत होने के कारण षडंग वेदों का उच्चारण करता है एवं ब्रह्म का अभ्यास करता है। तुम भी अमोघवीर्यवाले हो, इसलिए ऐसी स्थिति में मेरे साथ सम्भोग नहीं कर सकते।

आपातकाल के 50 वर्ष पूर्ण, विचार गोष्ठी एवं लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान समारोह आयोजित

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल के नेतृत्व में आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर विचार गोष्ठी एवं लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान समारोह का भव्य आयोजन जानकी सभागार, कविनगर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह रहे। अति विशिष्ट अतिथि विजय बहादुर पाठक (पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा) एवं विशिष्ट अतिथि मंत्री स्वतंत्र प्रभार नरेंद्र कश्यप और सांसद अतुल गर्ग की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह की शुरूआत एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत पौधारोपण से हुई। इसके पश्चात आपातकाल विषयक प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ, जिसमें 1975-77 के कालखंड की घटनाओं, गिरफ्तारियों एवं संघर्षों को चित्रों और दस्तावेजों के माध्यम से दर्शाया गया।

मुख्य कार्यक्रम में 30 लोकतंत्र सेनानियों को शॉल ओढ़ाकर व प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। ये सेनानी आपातकाल के दौरान जेलों में बंद रहकर अथवा भूमिगत होकर लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्षरत रहे। कार्यक्रम के अंतिम चरण में मॉक पार्लियामेंट का आयोजन भी हुआ, जिसमें युवाओं ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया की भूमिका निभाई और संविधान की शक्ति को अनुभव किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह, विजय बहादुर पाठक, नरेंद्र कश्यप, सांसद अतुल गर्ग, मयंक गोयल, जिलाध्यक्ष चैन पाल सिंह, पूर्व महापौर आशु वर्मा, पूर्व महापौर आशा शर्मा, पूर्व विधायक कृष्णवीर सिरोही, विधायक संजीव शर्मा, एमएलसी दिनेश गोयल, पूर्व एमएलसी सुरेश कश्यप, पूर्व डिप्टी मेयर राजेश्वर प्रसाद, पूर्व अध्यक्ष सरदार एसपी सिंह, रुचि गर्ग, तरुण शर्मा, मोनिका पंडिता, प्रियंका पांडे, मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी सहित भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता, लोकतंत्र सेनानी एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने लोकतंत्र के रक्षकों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारतीय लोकतंत्र पर किया था कांग्रेस ने हमलाः अरूण सिंह

मुख्य अतिथि अरुण सिंह ने कहा कि आपातकाल भारतीय लोकतंत्र पर कांग्रेस द्वारा किया गया सबसे काला हमला था। इंदिरा गांधी सरकार ने सत्ता बचाने के लिए संविधान को ताक पर रख दिया। देश की जनता की आवाज दबा दी गई, मीडिया की स्वतंत्रता को कुचला गया, और लाखों राष्ट्रभक्तों को जेलों में बंद किया गया। लेकिन सत्य को कभी दबाया नहीं जा सकता–लोकतंत्र सेनानियों की संघर्षशीलता और भाजपा जैसी वैचारिक शक्ति ने लोकतंत्र को पुनः स्थापित किया।

तानाशाही मानसिकता का परिणाम था आपातकालः विजय बहादुर पाठक

अति विशिष्ट अतिथि विजय बहादुर पाठक ने कहा कि कि आपातकाल कांग्रेस की तानाशाही मानसिकता का परिणाम था। यह केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह देश के संविधान, न्यायपालिका, मीडिया और नागरिक अधिकारों पर सीधा हमला था। भाजपा आज उन सेनानियों को श्रद्धांजलि देती है जिन्होंने अत्याचारों के आगे झुकने से इनकार कर दिया।

लोकतांत्रिक संस्थाओं को कर दिया गया ठपः नरेंद्र कश्यप

विशिष्ट अतिथि मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप ने कहा कि आपातकाल में लोकतांत्रिक संस्थाओं को ठप कर दिया गया था। लेकिन जिस साहस और संघर्ष से लोकतंत्र सेनानियों ने उसका विरोध किया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। आज जब हम लोकतंत्र की मजबूती की बात करते हैं, तो हमें उन वीरों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने इसके लिए अत्याचार सहे।

आपातकाल कांग्रेस की मानसिक आपदा थी–अतुल गर्ग

सांसद अतुल गर्ग ने कहा कि आपातकाल एक मानसिक आपदा थी, जिसे कांग्रेस ने जानबूझकर जनता पर थोपा। आज का आयोजन उन योद्धाओं को समर्पित है जिन्होंने उस कालखंड में सत्य की मशाल जलाए रखी। यह भाजपा का कर्तव्य है कि वह नई पीढ़ियों को उस काले अध्याय से अवगत कराए।

सेनानियों के त्याग और संघर्ष को नहीं भुलाया जा सकताः मंयक गोयल

भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल ने कहा कि गाजियाबाद भाजपा लोकतंत्र सेनानियों के त्याग और संघर्ष को कभी नहीं भूलेगी। उनका सम्मान करना हम सभी का नैतिक दायित्व है। कांग्रेस ने जिस तानाशाही का परिचय 1975 में दिया, वह आज भी उनके व्यवहार में झलकता है। भाजपा का संकल्प है– 'संविधान सर्वोपरि, राष्ट्र सर्वोच्च।

आपातकाल कांग्रेस की सत्ता लोलुपता और तानाशाही मानसिकता का प्रतीकः अरुण सिंह

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री ने पत्रकारों से वार्ता में कांग्रेस पर बोला तीखा हमला

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। विचार गोष्ठी एवं लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान समारोह उपरांत भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह ने मीडिया प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए कहा कि 1975 में लगाया गया आपातकाल कोई राष्ट्रीय संकट नहीं था, यह एक डरी हुई प्रधानमंत्री द्वारा अपनी कुर्सी बचाने के लिए देश को बंधक बनाने की साजिश थी।

इंदिरा गांधी ने संविधान के अनुच्छेद 352 का दुरुपयोग कर लोकतंत्र को कुचला, प्रेस की स्वतंत्रता खत्म की, न्यायपालिका को अपंग किया और लाखों देशवासियों को जेल में डालकर देश को अंधकार युग में धकेल दिया। उन्होंने कहा कि आज 50 वर्ष बाद भी कांग्रेस की मानसिकता में कोई अंतर नहीं आया है। 1975 में इंदिरा गांधी ने संविधान को रौंदा, आज वही प्रवृत्ति राहुल गांधी और उनके नेतृत्व में दिखाई देती है–आज भी प्रेस पर हमले होते हैं, विचारधारा के आधार पर मुकदमे दर्ज होते हैं, और डिजिटल माध्यम से एक नई 'डिजिटल इमरजेंसी' थोपी जा रही है। अरुण सिंह ने कहा कि शाह आयोग ने भी स्पष्ट कहा था कि आपातकाल पूरी तरह एक राजनीतिक षड्यंत्र था, जिसका कोई संवैधानिक आधार नहीं था। लेकिन कांग्रेस ने न तो आज तक माफी मांगी, न ही शर्मिंदगी दिखाई। उल्टे, आज भी जब गांधी परिवार पर भ्रष्टाचार की जांच होती है, कांग्रेस 'लोकतंत्र खतरे में है' का शोर मचाने लगती है। उन्होंने आगे जोड़ा कि इंदिरा गांधी ने न केवल न्यायपालिका को बंधक बनाया, बल्कि प्रेस की बिजली काट दी, मीसा जैसे काले कानूनों से छात्रों, पत्रकारों, विपक्षी नेताओं को जेल में ठूंस दिया। उस दौर में जिस किसी ने भी सवाल उठाया, उसे देशद्रोही बताया गया। आज कांग्रेस उसी मानसिकता को सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लागू कर रही है। आपातकाल सिर्फ एक घटना नहीं, कांग्रेस की सोच का प्रतिबिंब है– आज भी कांग्रेस सत्ता को परिवार के लिए आरक्षित समझती है और लोकतंत्र को एक औपचारिकता मानती है। प्रेस वार्ता में प्रमुख रूप से भाजपा उत्तर प्रदेश के प्रदेश उपाध्यक्ष विजय बहादुर पाठक, सांसद अतुल गर्ग, मंत्री स्वतंत्र प्रभार नरेंद्र कश्यप, पूर्व महापौर आशु वर्मा, विधायक संजीव शर्मा, भाजपा गाजियाबाद महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल, मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी उपस्थित रहे। प्रेस वार्ता के संयोजन और समन्वय की जिम्मेदारी भाजपा गाजियाबाद के मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी द्वारा निभाई गई। जिन्होंने सभी मीडिया बंधुओं का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए लोकतंत्र की रक्षा में पत्रकारिता की ऐतिहासिक भूमिका को नमन किया।

बोर्ड बैठक की तैयारी को लेकर जनप्रतिनिधियों से मिले पार्षद

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। संपत्ति कर को लेकर 30 जून को होने वाली बोर्ड बैठक की तैयारी के चलते पार्षदों का एक दल राज्यमंत्री नरेंद्र कश्यप, शहर विधायक संजीव शर्मा, एमएलसी दिनेश गोयल से मिले। पार्षदों का कहना है कि वे इस बार हाउस टैक्स वापस लेने अथवा कम कराने की मांग को लेकर किसी भी प्रकार की कसर छोड़ने वाले नहीं है।

- हाउस टैक्स बढ़ोत्तरी को लेकर भी की चर्चा

इसके लिए लगातार बैठक कर रहे हैं वहीं बोर्ड के पदेन सदस्यों से भी आशीर्वाद ले रहे हैं साथ ही महापौर सुनीता दयाल से मिल कर बोर्ड बैठक को लेकर चर्चा की। शनिवार को निगम के लगभग सभी पार्षद एक स्थान पर मिलन कर बोर्ड बैठक की रणनीति तय करेंगे। इस अवसर पर पार्षद नीरज गोयल, पार्षद गौरव सोलंकी, पार्षद हिमांशु शर्मा, पूर्व पार्षद मनोज गोयल, पार्षद नरेश भाटी, पार्षद डॉक्टर अनिल तोमर, पार्षद ओम प्रकाश ओढ़, पार्षद देवनारायण शर्मा, पार्षद कन्हैया लाल, पार्षद पवन गौतम, शशि खेमका, भूपेंद्र उपाध्याय, संतोष राणा, हरीश कराकोटी आदि पार्षद उपस्थित रहे।

हिंदुत्व के प्रभाव से भारत नवोत्थान की ओर बढ़ रहाः विहिप

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

कानपुर। जून 28, 2025। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ सुरेंद्र जैन ने आज कहा कि हिंदुत्व की बढ़ती लहर के कारण आज सम्पूर्ण देश नवोत्थान की ओर अग्रसर है। राष्ट्र जीवन का हर क्षेत्र प्रगति के पथ पर है और वैश्विक जगत भी अब भारत को एक आशा की किरण के रूप में देख रहा है। अब हम समाज को अवैध धर्मांतरण के कलंक से मुक्ति तथा हिंदू मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से बाहर करके रहेंगे। धर्मांतरण कारी ईसाई मिशनरियों और इस्लामिक जिहादी तत्वों को भी अब समझना होगा कि उनके कुत्सित षडयंत्र अब सफल नहीं हो पाएंगे।

उत्तर प्रदेश के कानपुर में एक पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा ने सम्पूर्ण विश्व में एक नवीन चेतना व ऊर्जा का संचार किया है। जिहादी आतंकवाद व नक्सलवाद पर नकेल

तथा देश के शत्रुओं को स्वदेशी तकनीकी से करारे जबाव ने प्रत्येक भारतीय को अपनी कर्मठ सरकार व सशक्त नेतृत्व के प्रति गौरवान्वित किया है।

धर्मांतरण पर लगे पूर्ण विरामः

उन्होंने कहा कि देश के दर्जनभर राज्यों में धर्मांतरण के विरुद्ध कठोर कानून व उसके कड़ाई से पालन करने वाली सरकारों के बावजूद चर्च और जिहादी तत्व, लगातार, भोले भाले हिंदू समाज को, छल या बल पूर्वक धर्मांतरित करने से बाज नहीं आ रहे। साथ ही, मस्जिदों व मदरसों में बढ़ती बच्चों के साथ व्यभिचार व अलगाववाद की घटनाएं भी किसी कलंक से कम नहीं।

अब लव जिहाद समेत इस प्रकार की सभी घटनाओं पर उन्हें पूर्ण विराम लगाना ही होगा अन्यथा सरकार ही नहीं समाज भी इनसे निपटना अच्छी तरह जानता है। इन मामलों में चर्च व मुस्लिम संगठनों को भी आत्म चिंतन की आवश्यकता है।

मंदिर मुक्ति अभियानः

डॉ जैन ने कहा कि मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण हिंदू समाज के साथ एक धोखा है। मंदिरों की संपत्ति व प्रबंधन पर कुठाराघात हों या आंध्र प्रदेश में तिरुपति मंदिर के प्रसाद की बात हो और या फिर अभी हाल ही में, बंगाल सरकार द्वारा दीघा के जगन्नाथ धाम के प्रसाद की ठेकेदारी हलाल व्यापारियों को देने की बात हो, ऐसी अनेक घटनाओं से स्वतः सिद्ध होता है कि सेक्युलर सरकारें हिंदू आस्थाओं का सम्मान नहीं कर सकतीं। इसलिए 5 जनवरी को आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा से प्रारंभ हुए मंदिर मुक्ति के अभियान को अब हम जन जन का अभियान बना कर अपने धर्मस्थलों को स्वाधीन कर हिंदू समाज को सौंपेंगे। सभी राज्य सरकारों को अविलंब इस बारे में आगे आना चाहिए।

कांवड़ यात्राः

सदियों से चली आ रही हमारी कांवड़ यात्रा राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता, एकात्मकता, समरसता व पर्यावरण संरक्षण की प्रतीक रही है। भगवान-भोले की भक्ति में सराबोर हिंदू, जब देवी स्वरूपा, पवित्र नदियों का जल भरकर, जमीन पर रखे बिना, सात्विक भाव से, अनथक सैकड़ों किलो मीटर की यात्रा पूर्ण कर जब शिवालय पहुंचता है तो वह जल समरस समाज व राष्ट्रीय एकात्मता का अमृत बन जाता है। इस पूरे मार्ग में, जाति, भाषा, भूषा, प्रांत, क्षेत्र इत्यादि के सभी भेद निर्मूल होकर इन करोड़ों लोगों की एक ही पहचान होती है कि वे हिंदू हैं और भोले बाबा के भक्त हैं। एक ओर सम्पूर्ण हिंदू समाज, ऐसी कठिन व साधना पूर्ण यात्रा करने वाले कांवड़ियों के लिए मार्ग में पलक पांवड़े बिछा कर सेवा करता है तो वहीं कुछ इस्लामिक जिहादी तत्व अपनी हलाली मानसिकता से बाज नहीं आते। अपनी पहचान छुपा कर, थूक जिहाद व मूत्र जिहाद जैसे षड्यंत्र पूर्वक आघातों को हिंदू समाज अब और बर्दाश्त नहीं करेगा। मुस्लिम संगठनों को इस संदर्भ में आगे आ कर, ऐसे सभी लोगों पर लगाम लगानी चाहिए। हमें आशा है कि इस संबंध में सरकार द्वारा बनाए गए दिशा निदेशों का सभी संबंधित पक्षकार कड़ाई से पालन कर किसी भी प्रकार का विवाद खड़ा नहीं होने देंगे।

ब्रह्माकुमारीज ने दी साईबर ठगी से बचने के टिप्स

कार्यक्रम में फिल्म निर्देशक डॉ सुभाष अग्रवाल रहे मुख्य अतिथि

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

रुड़की। ट्राई के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज के मधुबन रेडियो द्वारा चलाए जा रहे राष्ट्र व्यापी साईबर हाईजीन कार्यक्रम की श्रंखला में रुड़की के ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र पर लोगो को साईबर ठगी से बचने के लिए जागरूक रहने व किसी भी भ्रमजाल में न फंसने की सलाह दी गई।

मुख्य अतिथि फिल्म निर्देशक डॉ सुभाष अग्रवाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा साईबर अपराधों को रोकने व ठगी से बचने के लिए लोगो को जागरूक करना निश्चित ही सराहनीय कार्य है। उन्होंने कहा कि सावधानी ही

बचाव है,इसी मूल मंत्र को अपनाकर हम साईबर क्राइम का शिकार होने से बच सकते है विशिष्ट अतिथि उत्तराखंड राज्य उपभोक्ता आयोग के वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीगोपाल नारसन ने कहा कि साईबर अपराधी डिजिटल अरेस्ट के जरिए लोगो की गाढ़ी कमाई डकार जाते है। उन्होंने इस तरह के अपराधों से बचने के लिए अपने फोन,लैपटॉप, इंरनेट के प्रयोग के दौरान किसी तरह के प्रलोभन में न आने, ओटीपी जांच परख कर ही शेयर की बात कही। साथ ही उन्होंने फोन के

सार्थक उपयोग की सलाह दी। मुख्य वक्ता रेडियो मधुबन के एंकर आरजे रमेश भाई ने स्मार्ट फोन के सदुपयोग की सलाह दी और किसी भी प्रकार के डाटा के दुरुपयोग के खतरों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि हमे अनवांटेड सामग्री को फोन में आने से रोकने के साथ ही ऐसी फोटो या फिर सामग्री परोसने की सलाह दी जिसे कोई भी देख या पढ़ सकता हो। उन्होंने 'राजयोग मार्ग' फिल्म का ट्रेलर भी दिखाया और ब्रह्माकुमारीज द्वारा बनाई गई इस फिल्म को देखने की सलाह दी। अध्यक्षीय उदबोधन में ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र प्रभारी बीके गीता दीदी ने कहा कि मोबाईल, कम्प्यूटर व इंटरनेट का सकारात्मक उपयोग ही जीवन मे शांति ,सदभाव व उन्नति ला सकता है उन्हें मोबाईल के दुरुपयोग को रोकने और साईबर ठगी से बचने के लिए दी गई सलाह को अपनाने का आव्हान किया। कार्यक्रम में फिल्म निर्देशक डॉ सुभाष अग्रवाल का शाल ओढाकर व ईश्वरीय सौगात देकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर दिल्ली से सुशील भाई, वन्दना बहन, बीके दीपिका, बीके पारुल, बीके सपना,शिव कुमार, ब्रजपाल, पूनम बहन,इंदु,वर्षा, अनिल भाई, अश्वनी भारद्वाज आदि मौजूद रहे।

नगर पंचायत द्वारा आयोजित शिविर में 45 ने किया रक्तदान

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

दनकौर। नगर पंचायत दनकौर कार्यालय में रक्तदान शिवर का आयोजन किया गया, जिसमें 45 व्यक्तियों द्वारा रक्तदान किया गया नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि दीपक सिंह, अधिशासी अधिकारी फिरोज खान,गौरव सैनी एवं अन्य कर्मचारी द्वारा भी रक्तदान किया गया। शिविर में क्षेत्र के सामाजिक चिंतक व वरिष्ठ पत्रकार नंद गोपाल वर्मा ने रक्तदान करने वालों को हेलमेट और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया इस मौके पर नंद गोपाल वर्मा ने कहा कि किसी भी जरूरतमंद पीड़ित को यदि समय पर रक्त मिल जाए तो यह दान ईश्वर की कृपा से महादान एवं जीवनदान बन जाता है सक्षम लोगों को अधिक से अधिक रक्तदान करना चाहिए ताकि जरूरतमंदों के काम आए।